‘सृजन शब्द से शक्ति का’

अन्तराशब्दशक्ति

मार्च २०२० (अंक-११)

मासिक साझा संकलन

मार्च माह में अन्तरा शब्दशक्ति वेब अंक में प्रकाशित रचनाएँ

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

‘सृजन शब्द से शक्ति का’

मासिक साझा संकलन
मार्च २०२०

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पंजीयन क्रमांक (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

ISBN No. - "978-93-5372-094-0"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण- २०२०, अन्तरा शब्दशक्ति- साझा संकलन

मूल्य- १२०.०० रूपये

मूद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

एफ एल २१ रिकार्ड होल्डर्स में मिला डॉ.प्रीति सुराना को स्थान २१ में से टॉप १० अचीवर्स में भी चयनित होकर पुनः सम्मानित हुई।

फैशन लाइफ स्टाइल मैगजीन ने मार्च का अंक समर्पित किया २१ सशक्त महिलाओं को।

२६ फरवरी २०२० लीप ईयर का खास दिन उन्नतीस फरवरी तब और खास हो जाता है जब डायरेक्टर शरद कोहली और ऋचा मेहता की हाई प्रोफाइल मैगजीन फैशन लाइफ स्टाइल का ६वां अंक एम्पावर्ड वोमेन्स को समर्पित किया गया और पूरे भारतवर्ष से २१ सशक्त महिलाओं का चयन किया गया जो बहुत संघर्ष के बाद अपने सपनों को पूरा करने और खुद की पहचान बनाने में कामयाब रहीं, जिन्होंने अपने अपने क्षेत्र के कुछ अनोखा कर दिखाया।

डॉ. सी.ए, इंजीनियर, ज्वेलरी डिजाइनर, ड्रेस डिजाइनर, राइटर, इंटीरियर डेकोरेटर, इवेंट मैनेजर, लाइफ स्टाइल कोच, नृत्यांगना, गायिका, वादक और अनेक क्षेत्रों का प्रतिधित्व करने वाली २१ महिलाओं का चयन कर न केवल मैगजीन में उनकी उपलब्धियों को स्थान दिया बल्कि उन्हें ट्रॉफी और अनेक उपहारों के साथ-साथ उनकी उपलब्धियों का पोस्टर बनाकर तथा मेडल पहना कर सम्मानित किया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रही शिबानी कश्यप (बॉलीवुड सिंगर) जो मैगजीन के आवरण में प्रकाशित हुई साथ ही सभी का सम्मान भी किया एवं टीवी सीरियल हम लोग फ्रेम नन्हे (अभिनव चतुर्वेदी)।

गीत, संगीत, नृत्य, फैशनशो, कविता, पेंटिंग, नेचुरल होली कलर मेकिंग आदि अनेक विविधताओं और स्वादिष्ट हाई टी के साथ दिल्ली के फाइव स्टार होटल रेडिशन ब्लू, द्वारका में आयोजन सम्पन्न हुआ।

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

कीर्ति प्रदीप वर्मा

इंद्रधनुष

मैंने अपने आँगन में
कुछ विरवे रोपे थे
खाद पानी से सींचा
और बहुत दुलराया
और एक
दिन चटकी कलियां
फूल और फल भी आये
संग साथ में तितली लाये
रंग कई बिखराये।
गौरैया और छोटी चिड़िया
नृत्य गान करती है,
और गिलहरी आंगन में
झूम झूम नचती है,
सूने निर्जन आँगन में
रंग समाए सातों ऐसे
आसमान का इंद्रधनुष
घर मेरे आया हो जैसे!
क्यों कहते रहते हो ?
अब समय है बदला
और नीरस है जीवन
तुम भी तो कुछ बिरवे रोपो
अपने मन के आँगन।

डॉ. राम कुमार झा 'निकुंज'

गान राष्ट्र का गाता हूँ

मुक्त मैं उन्मुक्त स्वर में,
गान राष्ट्र का गाता हूँ,
मैं भारत, भारत मेरा है,
शान्ति दूत बन जाता हूँ।
राग बदल अनुराग बनूँ,
प्रगति पथी बन जाता हूँ,
खिले खुशी मुस्कान मुखी,
नवजीवन का उद्‌गाता हूँ।
मानव हूँ रक्षक मानवता,
नीति प्रीति उन्नायक हूँ,
मर्यादित मर्यादा पुरुषोत्तम,
मुक्तिबोध बन जाता हूँ।
मन निर्मल गंगा सम पावन,
समरस शीतल नेह बहाता हूँ,
रवि शशि सम बिन भेद भाव के
सहयोगी बन जाता हूँ।
नद निर्झर गिरि बन सरिता मैं,
अविरल परहित गीत सुनाता हूँ,
मानव हूँ ममता की मूरत,
करुणाकर बन जाता हूँ।
बनूँ ज्ञान विज्ञान परंतप,
रण महावीर बन जाता हूँ,
जीवन दे निज राष्ट्र भक्ति में,
बलिदानी बन जाता हूँ।
मानदण्ड भारत सीमा का
राष्ट्र मुकुट बन जाता हूँ,
शील कर्म गुण त्याग मनुज मैं,
भारत का गान सुनाता हूँ।
धर्म अर्थ और काम मुक्ति का,
जीवन रस निर्माता हूँ,
मानव हूँ नैतिकता पोषक,
लोकतंत्र बन जाता हूँ।
नया पौध मैं कोमल किसलय,
पुष्पित सुरभित बन जाता हूँ,
मानव हूँ नित फलित सुयश फल,
अभिराम राष्ट्र बन जाता हूँ।
ऋषि मुनियों की पूजित धरा
देवलोक बन जाता हूँ,
मानव हूँ निर्माणक जग का,
सुख शान्ति गीत मैं गाता हूँ।
बन विहगवृन्द उन्मुक्त गगन में,
जय भारत माँ संगीत सुनाता हूँ।
मानक मैं उत्थान वतन का,
पालक किसान बन जाता हूँ,
निर्भय नित सबला नारी मैं
महाशक्ति प्रलय बन जाता हूँ।
नर हूँ मैं नारायण नित पल,
सत्यं शिव सुन्दर बन पाता हूँ,
हरित भरित उर्वर वसुधा मैं
भूमि भरत कहलाता हूँ।
स्वाभिमान मैं संवाहक यश का,
अमर गीत बन जाता हूँ,
मानव हूँ यायावर चिन्तक,
मधुरिम जीवन गीत सुनाता हूँ।
मुक्त सदा उन्मुक्त व्योम में
तिरंग ध्वजा लहराता हूँ,
जय भारत जय हिन्द गीत मैं
वन्दे मातरं संगीत सुनाता हूँ।

अदिति रूसिया

ख़ुशी

जाने कैसा जादू था
उन आँखों में
बोलती सी वो आँखें
खिलखिलाता चेहरा
गजब की मासूमियत
वो नन्ही परी
जिसने मोह लिया
सबके दिलों को
न चाहते हुए भी
सामने आ जाता है वो चेहरा
आँखों में झूमती है
वो मासूमियत
गूंजती है कानों में
उसकी खिलखिलाहट
उसके झरने से बहते आँसू
ओह! पीड़ा सी होती है
अंतस में सोचकर

क्या ख़ुशी के थे वो आँसू
या था उसके दिल में
कोई दर्द
जो बह गया मेरे काँधे पर
आँसू बन

या थे ख़ुशी के आँसू
जाने क्यों मन
उद्विग्न है ये सोच
उस मुस्कुराते मासूम से चेहरे के पीछे
कोई दर्द तो नहीं
खैर, जो भी हो
खुश बहुत हैं हम सब मिलकर तुमसे
दिल से दुआ करते हैं रब से
सारी जिंदगी मुस्कुराती रहना यूँ ही
क्योंकि ...
तुम्हारे चेहरे पे मुस्कुराहट
और आँखों में
काजल खूब जचता है
बोलती सी आँखे
बिन कहे ही बहुत कुछ कह जाती हैं।

प्रेमलता पंथी

बड़ा शातिर जमाना है,
जरा बचकर चला कीजे।

रास्ता चलने से पहले,
मंजिल का पता कीजे।

बसा कर दिल में गैरों को,
ना अपनों से दगा कीजे।

लगे ना दाग दामन पर,
समझकर फैसला कीजे।

लुटा कर आँख से मोती,
लबों से हँस लिया कीजे।

वफा का हो हुनर जिसमें,
उसे अपना खुदा कीजे।

बताती नहीं कभी तासीर तस्वीरें,
सूरत से ना कोई गिला कीजे।

जरूरत हो दुआ की जब,
दवा फिर काम क्या कीजे।

दगा करके लगाली आग बस्ती में,
बची उस राख को अब न हवा कीजे।

प्रीति अमित गुप्ता

शुद्धता के फेर में
कुछ शुद्ध न रह गया
वृद्धता ने सबको
शीघ्रता से घेर लिया
वो कह कर आए
गांवों में,चूल्हे से
बड़ा प्रदूषण होता है
यहाँ शहरों को बड़े-बड़े
वाहनों ने घेर लिया।

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

कल्पना राजीव त्रिपाठी

'वर्जिन'

हे पुरूष..! क्या तुम जानते हो 'वर्जिन' होने का अर्थ
या इस विषय पर मेरा तुमसे प्रश्न करना ही है व्यर्थ,

नहीं.. मैं तुम्हारे पुरुषत्व पर सवाल नहीं उठा रहीं हूँ
सुनो..! मैं तुम्हे वर्जिन होने की नई परिभाषा बता रहीं हूँ,

क्या तुम जानते हो तुम्हारे ये प्रश्न मूझे अन्तःकरण तक तोड़ देते हैं
मेरे स्वअस्तित्व को भीतर तक झकझोर देते हैं,

क्या तुम जानते हो... की जब तुम अपने पुरुषत्व का डंका बजाते हो
अनजाने में ही मेरे कई अतृप्त भावों को अधूरा छोड़ आते हो,

परन्तु... तुम ना समझोगे इसे क्योंकि..?
तुम स्वयं को ही पुरुष जानते हो
ईश्वर के आराधक बनकर 'अहं ब्रम्हास्मि' मानते हो,

परन्तु.. मैं भी उसी ब्रम्हा की कृति का एक हिस्सा हूँ
समाज में त्वरित अपवादों का मैं भी एक किस्सा हूँ,

परन्तु... क्या तुम निराकार ब्रम्ह के किस्सों को जानते हो
जहाँ ईश्वर के अलावा सभी स्त्रीयां हैं इस बात को मानते हो,

अगर नहीं जानते हो तो पढ़ो और मूझे भी इस विषय में बताओ
मिथ्या भ्रम दूर करो और इसे जन-जन तक पहुँचाओ,

हे पुरूष..! जिस दिन तुम वर्जिन होने का अर्थ समझ जाओगे
उस दिन से फिर कभी मेरे चरित्र पर ऊँगली ना उठाओगे,

उस दिन मैं स्वयं को तुम्हे सौपकर तुम्हे 'अर्धनारीश्वर' बनाऊंगी
स्वयं को तुम्हारे अन्तःकरण में समाहित कर मैं 'वर्जिन' बन जाऊँगी,

बृजनाथ श्रीवास्तव

लड़की

कोई लड़की
नहीं निकलती
महुए के फूलों को चुनने

दशों दिशाओं में फैली जो
मादक गंध विमोहित करती
उमग उमग कर रह जाता मन
बाहर का डर अंदर भरती

दो टाँगों के
कई भेड़िए
लगे राह में चालें बुनने

सिया दुलारी उठा ले गया
कल ही रावण बीच गाँव से
कई दिनों से भरा हुआ है
गाँव समूचा काँव काँव से

खेत बाग से
गाँव गली तक
लोग लगे हैं किस्से बुनने

कितने दिन तक बंद रहेंगी
अपने घर में खुद से डरकर
निकल पड़ी हैं चौरस्ते पर
लिये हाथ में पैना खंजर

उन्हें पता है
स्वयं निपटना
आया कौन व्यथा को सुनने।

विपुल शर्मा

माँ

प्रसव के बाद पड़ी
कुछ उभरी रेखाओं को
देख कर
पति ने कहा
इनका इलाज करके
मिटा लो इन
आये हुये निशानों को,
वो मुस्कुरायी और
मुस्कुराते हुये बोली
नहीं मिटाना मुझे
इन्हें जिन्हें तुम
निशान कह रहे हो
ये तो मेरे पहले
बच्चे की चित्रकारी है
जो करी है उसने
मुझमें रहकर
कभी पैरों से
कभी हाथों से
कभी कमर से
कभी नितम्बों से
और कभी सिर से
अपने
और बाहर आकर
फिर समेट दिया
रेखाओं में
ये चित्रकारी है मेरे
पहले बच्चे की
जिसे नहीं मिटाना
चाहेगी कभी एक माँ!

सुधा हर्ष

अस्तित्व

रुत के करवट लेते ही
उदास से खड़े
उस पेड़ की शाखाओं ने
ओढ़ लिए पत्तों के लबादे..!
उदित हुई है वृक्ष की जीवांक्षा
परीक्षा के अंधियारे क्षणों के बाद...!
और वो लौट आया
सारे सूनेपन को चीर
जीवन ओज से भर कर
अपने हरे भरे अस्तित्व में...!

रेशमा त्रिपाठी

तुम मिले

तुम मिले तो नई चेतना आ गई
जो रवानी थी कल तक कहानी हो गई।
तुम्हारी नजरों में खुद को देखा हैं जब से
मेरी नजरें भी तब से समन्दर हो गई।।

प्रेम का गीत जब से तुम गाने लगे
मेरे रूह में तब से आने जाने लगे।
तुम मिले तो प्रणय की घटा छा गई
इस शमा की रोशनी भी चाँदनी हो गई।

मेरी पलकों में कल तक थे सपने भी भारी
तुम मिले तो पुतलियाँ भी कलम हो गई।
तेरे स्नेह से दर्द के पृष्ठ कुछ कम हो गए
अब कोई आइना मुझको नहीं चाहिए।।

श्याम सुन्दर सेन

सतरंगी जीवन

सतरंगी होता यह जीवन,
मानो प्यारा सा इन्द्र-धनुष।
देव-शक्ति हो छिपी न जिसमें,
होता न ऐंसा कोई मनुष।।

धरने को इस जैसी भूषा,
सूर्य सा प्रखर ज्ञान चाहिए।
कर्तव्यों का अम्बर मन में,
निर्मल बूंदों सा स्वाभिमान चाहिए।।

मेघ गरजते धमकाने को,
आँधी आती ठहने को।
संघर्षों को सहना आता,
वचा न कुछ फिर डरने को।।

लक्ष्य-बेधने कर्तव्य मार्ग पर,
इन्द्र-धनुष सा हो जाओ ।
विपप्ति पहाड़ कुछ कर नहीं सकते,
धरती से अम्बर तक छा जाओ।।

किरण मोर

इंसानियत

इंसानियत जुदा है अब इंसान की आत्माओं से
रो रही है मासूमियत भी अपने ही रहनुमाओं से
है कहां जा रहे हैं हम परवान चढ़ रही जिन्दगी
परिचय नहीं हमारा समाज औ देश के आकाओं से

है घुल रहा जहर है नौनिहालों की जिंदगी में
क्या बात वो नहीं अब ईश्वर की भी बंदगी में
वो भी करता है अनदेखा,क्यों दूषित हुईं फिजाएं
हवा भी बदल गई रुख,वो भी न रही है सादगी में।

वक्त की जो नजरें बदली आया नया नजारा
है आदमी अकेला चाहे रहना सबसे न्यारा
अपने लिए बुलंदी पाकर भी नहीं है संतुष्टि
करना चाहे इस जनम सब मिले न मिले दोबारा।

है अलग मुकाम सबकाऔर अलग है दास्तांएं
हासिल जो की थी पहले कुछ और भी अब पाएं
अब रास्ते जुदा हैं भाई से भाई के ही
न रहा है प्यार अब न रहीं हैं कहीं वफाएं।

अभिलाषा दवे

आज बापू अगर जीवित होते..!

रघुपति राघव राजा राम
पतित पावन सीता राम,
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम
सब को सन्मति दे भगवान,
सब को शिक्षा सब को काम
रोटी कपड़ा और मकान,
जाति धरम का भेदभाव तज
सब का गौरव सब का मान,
संविधान में कहे मुताबिक
सब को अवसर एक समान,
जन गण मन के भीतर बसता
भारत का मजदूर किसान,
भूख गरीबी औ बेकारी का
करना होगा सही निदान,
इंकलाब का यही है मतलब
वरना होगी तेरी नींद हराम!
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम
सबको सन्मति दे भगवान।

सुरेन्द्र भसीन

पूजा

तुम्हारी पूजा
मेरी पूजा से निष्चय ही बड़ी है प्रिय!
क्योंकि मेरी पूजा की धूप तो
जलाने से सिर्फ कुछ समय ही जलती है,
मगर तुम्हारी पूजा तो
मेरी और मेरे बच्चों की सेवा में अनवरत चलती है।
जो मुझे पल-पल यह सिखाती है कि
पूजा- मंदिर में, मूर्ति के आगे बैठकर, माथा नवाकर नहीं
तो फिर कैसे की जाती है?
कैसे मिलेगी मुक्ति?
कैसे मिलेंगे राम?
कैसे आयेगी शांति?
जब तुम सब तिरोहित कर
दूसरे के जीवन के हो जाते हो।
अपने माँ-बाप, भाई-बहन, घर-गलियाँ सब कुछ तजकर
दूसरे के प्रागण में, उसका होने के लिये आते हो,
और फिर अपना अहं-अस्तित्व भुलाकर,
उसके होकर,
उसमें ही समा जाते हो।

रामकिशन शर्मा

होगी एक दिन यूँ भी जग-हंसाई, सोचा न था
मिट्टी हो जायेगी सब करी कराई, सोचा न था।

हालात कुछ इस तरह के होंगें यूँ भी कभी पैदा
इधर दिखेगा कुआं तो उधर खाई, सोचा न था।

बहुत मेहनत से था बनाया एक मुकाम अपना
हो जायेगा यूँ एक दिन धराशायी, सोचा न था।

दिल में बहुत उमड़ता व्यवहार में था झलकता
प्यार पे हो जायेगी नफरत हावी, सोचा न था।

रिश्ते मे पड़ी जो दरार होती चली जायेगी चौड़ी
देनी पड़ जायेगी जब तब सफाई, सोचा न था।

ऐसा तो कुछ नहीं हुआ खास कि मुंह फूल गये
लड़नी पड़ेगी बिन बात ही लड़ाई, सोचा न था।

मैंने अपना माना ,हमदर्द समझा, दोस्त जाना
होगी दिल में उसके कटुता समाई, सोचा न था।

अंदेशा तो था श्शर्माश को कोई गुल खिलेगा जरूर
जिस तरह की बेरूखी उसने दिखाई, सोचा न था।

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

डॉ.प्रीति सुराना

सुनो
मैं तुम्हे आसमान की उन उचाईयों पर
पहुंचा देखना चाहती हूं,..
जहां तुम्हारा नाम बादलों के बीच सूरज के पास
इंद्रधनुषी रंगो से लिखा हो,..
और
लोग तुम्हे निहारे पर जमीन पर लाने का साहस
फिर कभी न जुटा सके,..
लेकिन डरती हूं कहीं तुम वहाँ पहुंचकर जमीन से
अपना नाता न तोड़ लो,....
पर
मुझे तुम पर यकीन है तुम कभी ऐसा नही करोगे
क्यूंकि तुम्हारी जमीन मैं हूं
आकाश और जमीन हमेशा साथ साथ चलते हैं
ये साथ क्षितिज तक होता है
और हां
मैंने तो ये भी सुना है
क्षितिज पर इंद्रधनुष सबसे खूबसूरत लगते हैं,....!

पंकज शर्मा 'तरुण'

नवगीत

तुझे जाल से छुड़वा देंगे, शपथ राम की खा लेंगे।
गद्दारों को फंदे तक भी, हम घसीट कर ला देंगे।।

भारत माता के आँचल में, आँखें सबने खोली है।
जात धर्म हैं जुदा जुदा पर, सबकी हिंदी बोली है।।
छिपे हुए हैवानों का हम, अब तो ढेर लगा देंगे।।
गद्दारों को फंदे तक भी, हम घसीट कर ला देंगे।।

लालच में जो वोटों के यह, करवाते धरती नंगी।
नेता कैसे हो सकते हैं, यह तो सारे हैं ढोंगी।।
अपनी ताकत से हम इनको, अच्छा सबक सिखा देंगे।।
गद्दारों को फंदे तक भी, हम घसीट कर ला देंगे।।

वीर जवानों डटे रहो तुम, रक्षा माँ की करना है।
दुश्मन जो भी आँख उठाए, उसकी ढेरी बनना है।।
यह माटी फाँकी है हमने, इसका कर्ज चुका देंगे।।
तुझे जाल से छुड़वा देंगे, शपथ राम की खा लेंगे।
गद्दारों को फंदे तक भी, हम घसीट कर ला देंगे।।

अंकिता सिंह

मैं अपना वो चंदा उगाने चली हूँ

मैं बारिश में खुद को सुखाने चली हूँ
ठहरकर समय को बिताने चली हूँ
हुई बावरी प्यार में इस कदर मैं
जले दीप को फिर जलाने चली हूँ!

धनक में डुबोया सपन का दुपट्टा
पलक के फलक पर लहरने लगा है
समंदर के जैसा तरंगित तरंगित
ये मन झील जैसा ठहरने लगा है
चली मौन की मैं कहानी सुनाने
चली मैं उजाले को स्याही से पाने

जो गागर जगत में पिपासा की जड़ है
उसी से पिपासा मिटाने चली हूँ !

घुमड़ता हुआ एक बादल का टुकड़ा
इधर मेरी आँखों में रहने लगा है
जरा सी खुशी पर जरा से ही गम पर
पिघलकर ये दरिया सा बहने लगा है
मैं मीरा स्वयं को जो मानूँ तो सुख है
मैं राधा स्वयं को जो मानूँ तो दुख है

इसी वास्ते प्रेम की इस कथा में
स्वयं को मैं मीरा बनाने चली हूँ !

नहाकर छिटकती हुई चाँदनी में
गई रात चंदा को मैंने निहारा
हुआ लापता वो सवेरे सवेरे
कई बार दिल से है उसको पुकारा
मुझे चाहिए रात दिन चाँद मेरा
मगर छीन लेता है उसको सवेरा

इसी वास्ते हर सपन के क्षितिज पर
मैं अपना वो चंदा उगाने चली हूँ!

ममता दीक्षित

हैसियत

श्रुति तुम रेडी हो गई बेटा!
हाँ मम्मा,
सुन जरा उन दोनों एनवोलोप पर, सुंदर हैंडराइटिंग में उनके नाम भी लिख दे।
जिसमे ग्यारह सौ हैं उसमें कमला की बेटी का नाम लिख और जिसमे पाँच हजार हैं उसमें अशोक अंकल के बेटे का नाम।
मम्मा..! कमला आँटी वाले में सिर्फ ग्यारह सौ?
अरे..वो साड़ी भी तो दे रही हूँ न!
ये.. वाली साड़ी.. ये तो आपको कहीं से मिली थी न! जो आपको पसंद नहीं आई थी।
हाँ तो.. मुझे पसंद नहीं आई इसका मतलब किसी और को पसंद नहीं आएगी क्या !
ऐसी साड़ियां लेने देने के काम में ही आती हैं।
मम्मा..! आप कमला आँटी को तो कहती हो कि. वो घर के मेंबर जैसी हैं,फिर उन्हें सिर्फ हजार..।
व्यवहार की बातें तू नहीं समझेगी, उनकी हैसियत के अनुसार उतने ही ठीक हैं।
कौन सा वहाँ हम खाना खाने वाले हैं!
आप तो कह रहीं थीं अशोक अंकल ने पचास लाख में तीन दिन के लिए ष्रहयल पैलेसष बुक किया है।
हाँ किया है.. तो..!
आपके पाँच हजार से उन्हें क्या फर्क पड़ेगा!
यहाँ...अपनी हैसियत के अनुसार सही है।
बहुत बोलती है तू, इतना दिमाग अपनी पढ़ाई में लगाया करती हो तो!

लीना

ग़ज़ल

नकाब के अंधेरे में छुपा है हर चेहरा,
देर से ही सही मगर खूब पहचाना है।

मिलेंगे सफर में फूल भी और कांटे भी,
फूलों से सफर को खूबसूरत बनाना है।

मंजिल की तलाश में उठ तो गए कदम,
अब कदमों को मंजिल तक पहुंचाना है।

सफर में बनेंगे कई दोस्त हमसफर भी,
और सफर में रकीबों से भी निभाना है।

दुश्मनी की शिद्दत तो कई बार देखी है,
अब कुछ दोस्तों को भी आजमाना है।

राधा गोयल

सियासत

सितारों को सितारों से गले मिलता नहीं देखा।
नदी के दो किनारों को कभी मिलता नहीं देखा।
कभी धरती और अंबर को गले मिलता नहीं देखा।
रगों में खौलता है खून जब जलता वतन देखा।
मगर नेताओं को रंगरेलियों में ही मगन देखा।

जब इनका स्वार्थ होता है गले मिलते इन्हें देखा।
जरूरत पर गलों को काटते हमने इन्हें देखा।
बिछी चौसर चुनावी, हो रहे हैं रोज ही दंगल।
सभी नेता कहें, हम ही करेंगे देश का मंगल।

सदा ही स्वार्थ की खातिर वही दंगल कराते हैं।
लहू जनता का हरदम चूसते हैं मुस्कुराते हैं।
चुनावी मौसमों में घड़ियाली आँसू बहाते हैं।
सिर्फ वादे ही करते हैं नहीं उनको निभाते हैं।

यह कैसी राजनीति भाई, भाई का बना दुश्मन?
पिता और पुत्र भी कुर्सी की खातिर बन गये दुश्मन।
समझ में यह नहीं आता विरासत में मिला क्या है?
सभी तो एक जैसे हैं सियासत में जुदा क्या है?

केवरा यदु 'मीरा'

होली
होली खेले श्याम जी, राधा जी के संग।
देख रही हैं गोपियाँ, होती देखो दंग।।

रँगीला
रंग रँगीला साँवरा, ब्रज में करे धमाल।
ले पिचकारी ढूँढते, करते मुखड़ा लाल।।

अबीर
अब के होली में सजन, मन है बहुत अधीर।
आ जाते परदेश से, लगते गाल अबीर।।

उत्सव
उत्सव आज मनाइये, गाकर फगुवा गीत।
अरि को गले लगाइये, बनकर फिर से मीत।।

शर्मिंदा
जबरन रंग न डालिये, शर्मिंदा की बात।
बेटी सबकी एक है, सोच समझ हालात।।

मर्यादा
मर्यादा पुरुषोत्तमा, अवध पुरी के राम।
कौशल्या के लाल हैं, सीता के सुख धाम।।

पलाश
वन में खिले पलाश है, ले फागुन संदेश।
खेलें होली प्रेम से, मिटा दिलों से द्वेष।।

नगाड़ा
लिये नगाड़ा हाथ में, भरे कटोरा रंग।
फगुवा गाकर नाचते, पी हो जैसे भंग।।

आतुर
आतुर पंथ निहारती, राधा बैठी श्याम।
कहती मोहन आइये, होली में ब्रज धाम।।

संदेश
ऊधो जाकर श्याम से, कहना यह संदेश।
राधा फिरती बावरी, तुम बिन जीवन क्लेश।।

शरद कोकास

मेरे शहर का आदमी

अभी अभी कल तक
दंगों की खबर सुनकर
विचलित नहीं होता था
मेरे शहर का आदमी

दंगा वृद्धि करता रहा
उसके भौगोलिक ज्ञान में
अखबारों में पढ़-पढ कर
वह दिखाता रहा बच्चों को
भारत के नक्शे में
मेरठ ,दिल्ली, भिवंडी और चंडीगढ़

यों शामिल रहे उसकी चिंता में
देश के हालात
शहर का शांतिमय जीवन
ईश्वर से मांगी दुआओं में
परिवार का सुरक्षित भविष्य

धुआँ, आँसू और वर्दियाँ
देख देख दूरदर्शन पर
गिरगिट की तरह
रंग बदलते रहे
भय और संतोष उसके चेहरे पर

इसी बीच झरोखों से झाँकते रहे
साम्प्रदायिक संगठनों के नेता
और भाँपते रहे
उसके चेहरे से टपकती
असुरक्षा की भावना
वास्ता देकर
ईश्वर की शक्ति
और पवित्र ग्रंथों का
परोसते रहे
उसका गौरवशाली अतीत
रक्तरंजित इतिहास के पृष्ठों पर

वही आदमी आज
अपने स्वतंत्र चिंतन की अंत्येष्टी कर
शामिल हो गया है
कठमुल्लाओं की भीड़ में

आँखों में द्वेष का वकालतनामा लेकर
नपुंसक विरोध के स्वरों में
कर रहा है धर्म की वकालत
पड़ोस से बहकर आनेवाली
अफवाहों में
भ्रम की केंचुल ओढ़
सुरक्षित है वह
धर्म की बाँबी में

इससे पहले कि नक्शे में
शहरों की जगह
उसे नजर आएँ
केवल रक्त के निशान
घरों को जलाने वाली आग
जला डाले अपने साथ
आस्था और पारम्परिक विश्वास
जरूरत है
केंचुल छोड़ देने की

छँटने के बाद
आँखों के आगे जमी धुन्ध
सामने होंगे वही लोग
एक हाथ में लाठी
दूसरे में अभय की मुद्रा लिए हुए

मेरे शहर का आदमी
होंठों पर लिए होगा
एक जीवित प्रतिवाद
क्योंकि वह
केवल मेरे शहर का आदमी नहीं होगा ।

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

कृष्ण बक्षी

बना के तो देखो......

जो सट्टे, जुये या घोटालों की दुनिया
है चाचा, भतीजे औ सालों की दुनिया

जगेगी तो माँगेगी उत्तर वो तय है
जो सोई है मुझ में, सवालों की दुनिया

न वैसे इशारे, न वो अदला-बदली
कहाँ खो गई है, रूमालों की दुनिया

वो होने न देती है, तन्हा कभी भी
बसा ली जो मैंने, खयालों की दुनिया

अंधेरों में मच जायेगी, खलबली सी
बना के तो देखो, उजालों की दुनिया

ये दीनों-इमां लेके, फिरते कहाँ हो
है चारों तरफ ही, दलालों की दुनिया

क्या छोड़ेगी पीछा कभी जिंदगी में
ये रोटी, ये कपड़े, ये दालों की दुनिया

सिरहाने ही रखके, हूँ सोया हमेशा
मैं अपने ये, रंजो-मलालों की दुनिया

बँटा मुल्क तो, आई हिस्से में अपने
ये झगड़े, ये टंटे, बवालों की दुनिया

भावना विशाल

माफी नहीं मिलेगी

अचानक ये बस्ती, ये शहर जुदा हो गया है,
छोड़ इंसानियत, हर कोई खुदा हो गया है।

काली नदी के इस शहर के नाले लाल हो गये हैं,
जाने कौन लोग इनमें मासूमियत जिंदा डुबो गये हैं।

ये गलियां, ये सड़कें, ये दीवारें भी रोये जा रही हैं,
आख़िर किसकी है ये बद्दुआ जो असर दिखा रही है।

दिलों की ये खूनी आग ,क्या तुम तक भी पहुंची है?
ध्यान से टटोलो, कहीं कोई चिंगारी अब भी दबी है?

गर बाकी है कसक तो, रहा सहा भी जला डालो फिर
दीन, ईमान, मुल्क का जनाजा चलो निकालो फिर

रिसते लहू से इस बार शायद प्यास तुम्हारी बुझ पाये
देख रोते बिलखते अपने, अना फिर पूरा सुकूं पाये

लेकिन ये सच है टूटी सांसे फिर नहीं चलेंगी
और खुदा हो या ईश्वर, तुमको माफी नहीं मिलेगी
.......माफी नहीं मिलेगी।

स्वरा

अभिव्यक्ति

हाँ अक्सर तुम्हारी अभिव्यक्तियों
को बहस का मुद्दा बना लिया करती हूँ मैं
पर ठहर जाती हूँ जानती हूँ।
कि तुम्हारी कोई भी अभिव्यक्ति
बेवजह नहीं होती...!

हर्फो की प्रणेता हो तुम
और मैं एक गुमनाम सा वर्ण
जिसकी ध्वनि मद्धम सी है..!

जो यदा कदा बेवजह का शोर
मचा थम जाती है तुम्हारी कई
अभिव्यक्तियों में...!

जहाँ कई प्रतिउत्तर
तुम्हे देते हैं प्रतिसाद
जिन्हें मैं मौन हो सिर्फ
पढ़ती हूँ एक
स्मित मुस्कान के साथ...!

जानती हूँ मेरी अभिव्यक्ति
तब मायने नही रखती
ठीक वैसे ही जैसे एक कतरा
रक्त रह जाता है शिराओं
के बाहर बेजार सा..!,

डॉ. पवन कुमार पाण्डे

ग़ज़ल

मेरा, मेरे लिए होना, अखरता रहा
जीवन उलझी राहों-सा, गुजरता रहा।
जाने कौन-सा आसेब, था कि मैं खुद ही
अपनी कश्ती से, किनारा करता रहा।
जा चुके थे छोड़कर, कभी का वो मुझे
जिनके लिए पल-पल, मैं मरता रहा।
खोये हैं तारों की, जगमगाहट में वो
चाँद बन काम मैं, अपना करता रहा।
अपनों का अपनापन, चुपचाप पवन
ख्वाहिशों का मेरी, पर कतरता रहा।

अमित के किशोर

मुझे नफरत तुझसे

मुझे नफरत है तेरे प्यार से,
जो तू मुझसे ज्यादा करती हो।
मुझे नफरत है तेरे खयालों से,
जो तू अपने से ज्यादा मेरा रखती है।
मुझे नफरत है तेरे उन अहसासों से,
जिससे मेरे जिंदगी को तू रंगती है।
मुझे नफरत है तेरे उन शबदों से,
जो मेरे जीने की साँस बनती है।
कितनी नफरत करूँ तुझसे,
ए जुदा जिंदगी।।
बहुत प्यार करता हूँ तुमसे,
फिर भी मेरा प्यार तेरे प्यार के समक्ष
क्यूँ कम लगती है।।
पता है बहुत सारे प्रश्नचिन्ह
छोड़ देती हो तुम ए जिन्दगी
जिसके उत्तर नही होते हैं
पास...!!

प्यासा अंजुम

ग़ज़ल

हर तरफ है गम का आलम क्या करें।
हर किसी की आंख है नम क्या करें।।
काम कितने ओर बाकी हैं पड़े।
उम्र होती जा रही कम क्या करें।।
अब कहीं चलती नहीं ठंडी हवा।
आग बरसाता है मौसम क्या करें।।
तपते सूरज से तो बचकर आ गए।
है जलाती हाथ शबनम क्या करें।।
बात करना चाहता है हर कोई।
हर तरफ छाया है मातम क्या करें।।
शहर की बदली हुई अब के हवा है।
घुट रहा है सबका ही दम क्या करें।।
सूलियां सर को हैं 'अंजुम' भा रही।
इसलिए होता नहीं खम क्या करें।।

नीना सिन्हा

धूप सख्त हुयी या नम्र हुयी
कोई अनकही थम गयी हमारे दरम्याँ भी ज्यूँ!
तुम्हें भी जरूरत कुछ कम रही
और
मुझे भी हार जानें का सहूर आया कहाँ...!
चुनांचे! मुहब्बत ही तुमसे कहीं अधिक थी
तुम्हें बाँट लेना
औरों से ना आया हमें
खुद भी बेवजह तन्हाँ रहे मगर
तुम को भूल जानें का भी सहूर आया कहाँ!
अब हवाऐं भी शोख सी मचलती है
दिल भी जाफरान बन चटकता
कासनी आसमाँ तले !
तुम्हारा साथ खूशबुओं का साथ था
तुम्हारा मुख्तलिफ होना कोई पीर सा!
रक्त चंदन सा प्यार तुम्हारा
मन को छू जाता खुद दरख्त बन कर
वों बीते जमानें की बात रही
इक चिनाब बहती थी, मेरें साथ भी!
कोई गम नहीं गुमाँ नहीं
तुम्हारा ना होना भी कोई दुआ नही!
जिदंगी यूँ ही गुजर जानी थी
हकीकतो के पार कोई किस्सागोई सी!

नारी तुम क्या हो?

अनिता मंदिलवार
'सपना'

नारी तुम क्या हो
काली, दुर्गा, लक्ष्मी
या सरस्वती का रूप
कहते हैं सब
खुशियों का संसार हो तुम
जीने का आधार हो तुम
प्रेम की मूरत हो
जीवन का आगाज तुमसे
कभी कठोर कभी सरल
कभी पी लेती हो गरल
ममता, शक्ति, प्रेम
सब तुमसे हीं है
संस्कार निभाती तुम
सबको हँसाती तुम
दर्द, त्याग , बलिदान
संसार में पहचान तुम्हीं से
तुम सब कुछ हो
पर कुछ भी नहीं
ये है बिडंबना
समाज की
पहचान को तरसती
आखिर !
नारी तुम क्या हो ?

आत्ममुग्धता

आशीष पाठक

आत्ममुग्धता का शिकार मनुष्य अपने चारों ओर एक ऐसा वृत्त बना लेता है, कि उसके अपने स्वयं के अंदर के संघर्षों को, खोखलेपन को वह देख ही नहीं पाता, या यूं कहे तो उसे देखना ही नहीं चाहता। क्योंकि फिर उसको अपने अस्तित्व पर ही संकट दिखाई देने लगता है। केवल अपने अस्तित्व को बचाए रखने हेतु, वो अपने अन्तस के संघर्षों को पालता रहता है। परिणामतरूएक दिन स्वयं के मौलिक सहज व कोमल मानवीय भावनाओं को असमय ही मार डालता है।ज्ञात मनुष्य इतिहास के अधिकतर कालखंडों में तात्कालिक से लेकर वर्तमान तक की सत्ताओं और उसके व्यवस्थापकों की भी मनःस्थिति ऐसी ही हो जाती है। जनमानस जो आर्थिक, सामाजिक समग्र रूप से एक बेहतर जीवन के लिए उसकी तरफ आशा और विश्वाश से न सिर्फ देखता है बल्कि उसको सत्ता के शीर्ष पर बैठाता है। पर सत्ताएं अक्सर इसी आत्ममुग्धता का शिकार होकर जनमानस की न्यूनतम मूलभूत आवश्यकताओं पर भी ध्यान नहीं देती। बल्कि घूंटघूंट कर ये विद्रोह न कर दे, समय समय पर आत्मगौरव का, देशगौरव का, धर्मगौरव या अन्य ऐसी ही कारगर 'घुट्टी' समय समय पर उनको पिला देती है। फिर जनता भूल जाती है अपने रोज रोज के संपूर्ण अस्तित्व के पीसने के दर्द को, राह देखती पत्नी की कातर निगाहों की पीड़ा को, और अपने बच्चों के छोटे छोटे फरमाइशों को पूरा न कर पाने की असहनीय कसक को! और इससे भी आगे बढ़कर कभी कभी युद्ध की अग्नि में भी झोंक देती है। जिसमे उस आम आदमी की सभी सपने, इच्छाएं जो भी हो... भस्म हो जाती है। पीछे शेष रह जाती है तो केवल श्मशान में 'राख' उनके अनगढ़ सपनों, अकांछाओं और इच्छाओ की। वो भी बह जाती किसी बहती नदी की जलधारा के साथ अनंत में विलीन होने के लिए! अपने कुछ पंक्तियों के साथ आपको छोड़े जाता हूं आभार और अभिवादन!

(पिसते हुए सपने)

दो पाटों के बीच आजकल रोज पिसता हूं!!
पर मरता नहीं हूं... क्योंकि...आम आदमी हूं!
पुनः पुनः बार भी... इस असहनीय दर्द को
सहने की अवश्यंभावी संभावनाओं से उत्पन्न,
क्षोभ को सोच-सोचकर ही सिहर उठता हूं!
श्रृंगारविहीन... मामूली कर्णबालियों से भी
विहीन अर्धांगिनी को रात घर वापस लौटते ही
दरवाजे पर इंतजार करते देख डर सा जाता हूं!
डरे-डरे से... सहमे-सहमे से... दुबले होते
अपने ही नन्हे मुन्नों के मेरी तरफ कनखिओं से
देखने की कोशिश कर रहे... पीले से पड़ते
आंखों से नजरें मिलाने में स्वयं को...
असमर्थ पाता हूं... शर्मिन्दा हो जाता हूं!
कभी कभी तो....उनकी स्थितियां और निगाहें
मुझको बंद दड़बेनुमा गाड़ी में... कैद
मूक पशुओं कि मेरे तरफ देखती निगाहों...
की बेचारगी... की याद दिला जाती है!
और स्वयं को जमीन से चार फुट नीचे पाता हूं!
पर सखी री!... तुम क्यूं अश्रु गिराती हो?
तुम तो जानती हो... हम आम आदमी है!
अपने आत्म गौरव को...और अपने पाल्यों के
सपनों को... संभावित परन्तु आभासी से...
देशऋ संकट...धर्म-संकट...के ऊपर
'सत्ताएं'... न्यौछावर करने को कहती रहेंगी!

राजिंदर सिंह 'बग्गा'

मुझे डूबते उसने सबर से देखा
डूबते डूबते मैंने भंवर से देखा

धुंधले धुंधले दिखाई दिए वो
जब उनको 'चश्म ए तर' से देखा

मेरे ही घर को वो देख रहे थे
जब मैंने अपने घर से देखा

आईने से शर्मा कर भागे
जब खुद को मेरी नजर से देखा

जो सांप के डसने से भी न मरे
उन्हें मरते रश्क' के जहर से देखा

अपने पैराहन के हर पैबंद को
हमने हमेशा फखर से देखा

अंदर, बाहर से ज्यादा सकून है
'राज' पड़े पड़े ये कब्र से देखा।

चश्म ए तर- गीली आंखें
रश्क- जलन, ईर्ष्या, jealously
पैराहन- पहरावा
पैबंद- फटे पहरावे पर लगाया गया टुकड़ा

बबली सिन्हा

अपने दिल का हाल क्या लिखूं
बस प्रेम के दलदल में फंसी हूं

निकलना चाहूं तो भी निकल न पाऊं
हां इस कदर उनसे प्यार कर बैठी हूं

बेरुखी सहने की आदत सी हो गई है
दर्द को दबाने की वजह मिल गई है

शब्द गुम से हो गए हैं शिकायत भरे सभी
हां खामोशी की लड़ियाँ गूँथने सिख रही हूं

प्रेम के संसार का मैं भी एक वाशिंदा हूं
गम जितने मिले यहां फिरभी जिंदा हूं

अब तन्हाई मेरे नजदीक नहीं आती कभी
गैरमौजूदगी में भी उनकी यादों का एक
विशालकाय दृश्य मेरी आँखों में बसता

हँसता मुस्कुराता तो कभी नाराजगी से भरा
घटनाओं का सिलसिला यूंही चलता रहता
और वक्त इन्हीं परिदृश्यों में कट जाता

वो जानता है मैं उसकी मुहब्बत का कायल हूं
और शायद वो भी मेरी चाहत का मारा है

हैं इश्क दोनों तरफ बराबर फिभी
दोनों ही इश्क के घायल पंक्षी है।

मुरली टेलर 'मानस'

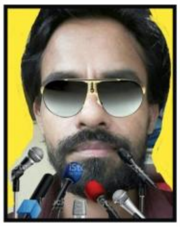

मन की पीड़ा

कुछ जमी पर तन के टुकड़े
कुछ जमी पर मन के मुखड़े
कुछ जमी पर जन के दुखड़ो
को बटोर ले हम
वह कीसी झरना का साहिल
उसको हम कर लेंगे हासिल
भावना सी वह धरा जो
आज हमको खोजती है
क्लांत मन सी आह को सुनकर
माँ भी पथ पे रोती है
साथ मे रोता धरती-अम्बर
रोता है वह नीलगगन
वह निशाकर भी रोता है
रोता है अपना चमन
हंसता अर्णव भी चुपहोकर
रोता बस आहे भरकर
चिल्लाकर बोला दिवाकर
क्यो रोते हो तुम आहे भरकर
अभी बहा दु झर-झर-झरने
कोमलता के दीप जला दु
समर की ठंडी लहरे बहा दु
लहरो में होगा स्पंदन
कभी ना होगा कोई क्रंदन
पूंछ लू मैं तप्त आंसू
आँसुओ की धार है
जो गिरी थी बून्द कोमल
उसमे भी बस प्यार है।

महेश राजा

होली पर एक निबंध ऐसा भी

परीक्षा की पूर्व तैयारी चल रही थी। होली का त्योहार नजदीक था। हिंदी के हमारे मित्र रिखी राम साहु सर ने बच्चों से होली पर निबँध लिखने को कहा।

एक अमीर घराने के कुलदीपक ने कुछ यौं लिखा-

होली हमारा राष्ट्रीय त्यौहार है। इस रोज स्कूल मे छुट्टी रहती है। सुबह नहा धोकर ब्रेकफास्ट आदि निपटा कर हम टी.वी. पर पोगो कार्टून चैनल देखने लग जाते है। फिर कुछ ईन्डोर गेम खेलते है। फिर थोड़ी देर टी.वी. पर कार्यक्रम देखते रहते हैं। बाद में मम्मा लंच के लिये आवाज लगाती है। सब मिलकर श्रीखंड पूरी खाते है।

एपार्टमेंट की गैलरी से स्लमडॉग कालोनी के बच्चों के रंग से काले-पीले होते देखते है। छीः कितने बुरे लगते है, उन सबके चेहरे।

फिर थोड़ी देर तक आराम करतें हैं। आज के दिन पढ़ाई से मुक्त रहते है। एक बात और अच्छी लगती है कि आज के दिन मम्मी-पापा घर पर ही रहते है। मोबाईल पर सबसे बात करते रहते हैं।

शाम को उठ कर फ्रुट, जूसआदि के बाद टी.वी. पर फिल्म, कार्टून या वीड़ियो गेम खेलते है। फिर ड़िनर पर भी कुछ खास फास्ट फुड़ खाकर, रात को हॉरर फिल्म देखते हुए ड़र कर सो जाते है।

प्रदीप सोनी

ग़ज़ल

आज चाहत का मिजाज, कुछ अलग है।
आँखों में छिपा हुआ राज, कुछ अलग है।

तेरे गीत गूँज रहे हैं अब सारी फिजाओं में,
इशारों में बात का अंदाज, कुछ अलग है।

तुम न थे करीब मन था कुछ अनमना सा,
निगाहों से हो गया इलाज, कुछ अलग है।

तन्हाइयों के गीत भी लगने लगे पराये से,
यादों ने छेड़ा है जो साज, कुछ अलग है।

'शून्य' भावनाओं में हर ओर है अब जश्न,
तेरी शोहरत का यह ताज, कुछ अलग है।

'मंगल' जितेंद्र

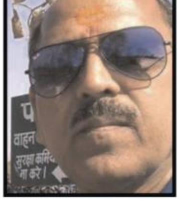

दिल के जज्बात

नूर हम में नहीं
आप में है
हम तो बस शोले हैं
आग आप में है

मुहब्बत करने का शऊर
कोई आपसे सीखे
हम तो पत्ते हैं
उड़ जाते हैं हवाओं के साथ
ठहरे हुए पानी में गहराई कितनी है
कोई आपसे सीखे

डॉ. कीर्ति काले

अगले जनम मोहे कुत्ता ही कीजो

व्यंग्य

मुहल्ले के एक झोलाछाप बाबा ने किसी को भी न बताने की हिदायत के साथ मिसेज शर्मा को बताया कि यदि तेजी से जाते हुए सौन्दर्य को बचाना है तो तुरन्त प्रभाव से मेरा बताया हुआ यह टोटका अपनाईए।
नित्य प्रति सुबह-शाम बिना नागा काले कुत्ते को दूध पिलाईए।

मिसेज शर्मा ने यह बात किसी को न बताने की हिदायत के साथ मिसेज वर्मा को बताई।
मिसेज वर्मा ने स्त्रियोचित यही प्रक्रिया दोहराई।
कानों-कान खबर नहीं हुई और बात पूरे मुहल्ले में पसर गई।

शाम को मिल्क बूथ पर महिलाओं की लम्बी कतार थी।
सभी के सिर पर सबसे सुन्दर दिखने की धुन सवार थी।
इसीलिए जल्दी से जल्दी काले कुत्ते को दूध पिलाने के लिए बेकरार थी।
चिर यौवना बने रहने की होड़ में पोती और दादी, बहू और सास, माँ और बेटी सभी शामिल थीं इस दौड़ में। सौन्दर्य जीवी महिलाएँ क्रमवार दूध का पैकेट खरीदतीं, हेयर क्लिप से उसे फाड़तीं और पास रखे बड़े से डिब्बे में उड़ेलती जा रही थी
कहीं काले की जगह सफेद या भूरा कुत्ता दूध न पी जाए इसका खास खयाल अपने सगे पतियों से रखवा रहीं थीं।
एक युवती का तीन महीने का बच्चा बेचैन हो रहा था।
भूख के मारे बुक्का फाड़कर रो रहा था।
युवती झुंझलाकर बोली तेरे आने से मेरे फिगर का जो रायता फैला है उसे पहले सुधार लूं।
बेबी तुझे बाद में सम्हालूंगी पहले काले कुत्ते को तो सम्हाल लूं।

एक अधेड़ महिला ने डिब्बे में दूध डाला। कुत्ता सूंघकर चला गया। उसने पूछा ये क्या हुआ?
मिल्क बूथ वाले ने बताया कि मैडम ये राजधानी के कुत्ते हैं ठाठ से जीते हैं।
मलाई निकला हुआ नहीं केवल फुल क्रीम दूध ही पीते हैं।

एक दिन बहुत ढूंढ़ने पर भी काले कुत्ते नहीं मिल रहे थे। ऐसा लगता था जैसे मुहल्ले का छोटा बड़ा, तन्दरुस्त मरियल प्रत्येक कुत्ता खो गया था।
पूछने पर पता चला कि रोज भारी मात्रा में दूध पी पीकर कुत्तों को अजीर्ण हो गया था।
कुत्ते इतनी दहशत में आ गए थे कि किसी महिला के हाथ में दूध का पैकेट देखते ही थर-थर काँपने लगते थे, उल्टे पांव भाग जाते थे। कितना भी ढूंढ़ो फिर दूर दूर तक नजर नहीं आते थे।

सुन्दरता कायम रखने के इस नायाब टोटके की लोकप्रियता से काले कुत्तों की डिमांड आसमान छूने लगी।
डिमांड के अनुपात में सप्लाई थी कम।
महिलाओं ने बना डाला स्वयंभू नियम।
उसी मिल्कबूथ से दूध खरीदा जाएगा
जिसका मालिक दूध पिलाने के लिए काले कुत्ते उपलब्ध कराएगा।
मिल्क बूथ का मालिक इतने कुत्ते कहाँ से लाता जिनका रंग हो काला।
उसने रास्ता निकाला।
वो गिरते पड़ते बाबा के पास जाकर बोला बाबा गरीब जान के मुझको न यूं भुला देना तुम्हीं ने दर्द दिया है तुम्हीं दवा देना।

बाबा ने कहा अच्छा
जिसका कोई नहीं उसका ये बाबा है बच्चा।
मत घबराओ
सौ रुपए प्रति घण्टे के हिसाब से काले कुत्ते हमारी कुटिया से ले जाओ।
और मजे से कारोबार चलाओ।

बाबा ने अपनी कुटिया के पीछे सफेद कुत्तों को रंगवाकर काला बनाने की फैक्ट्री लगा ली थी। एक ओर महिलाओं के हृदय में सबसे सुन्दर दिखने की जबरदस्त चाह जगाई फिर काले कुत्तों को प्रतिदिन दूध पिलाने की युक्ति सुझाई फिर सौ रुपए प्रति कुत्ते के हिसाब से स्वयं ही काले कुत्तों की करने लगा सप्लाई।

सबसे सुन्दर दिखने के लिए काले कुत्ते को दूध पिलाने की होड़ सारे रिकॉर्ड तोड़ रही थी दूसरी ओर बाबा की कुटिया से सौ रुपया प्रति घण्टे के हिसाब से कुत्ता सप्लाई हो रही थी। इसे कहते हैं बीमारी की पैकेज डील। वन विन्डो सिस्टम। बीमारी और उसका इलाज दोनों एक साथ बेचने का दम।

देश के नेता तो बरसों से यही कर रहे हैं। काला सफेद करके सात पीढ़ियों तक के लिए अपना घर भर रहे हैं। झोलाछाप बाबा भोले-भाले लोगों की भावनाओं से खेल रहे हैं। इनकी तो पाँचो उंगलियाँ घी में और सिर कढ़ाई के तेल में है। ये अलग बात है कि इनमें से एकाध आजकल जेल में है।

सुन्दर बने रहने की चाह ने महिलाओं को इतना कर दिया है बावला कि वे रात दिन, सुबह दोपहर शाम सुन्दरता बचाने में व्यस्त हैं और उनके घरवाले बेचारे भूख प्यास से त्रस्त हैं। जहाँ से जो जो नुस्खे पता चलते हैं वो सब काम में लाती हैं। जाने कौन-कौन से ब्यूटी प्रोडक्ट्स आजमाती हैं। बकरी की मींगणियाँ, छिपकली का तेल, सूअर के बाल, गेंडे की खाल और चारकोल तक चेहरे पर चिपकाती हैं। सबसे सुन्दर दिखने की चाहत पागलपन की हदें इस कदर पार कर चुकी है कि इन सौन्दर्य पिपासुओं के भूखे प्यासे अस्त व्यस्त हुए पति भगवान से प्रार्थना करने लगे हैं कि
हे भगवान
ऐसी लुगाई किसी को न दीजो या
अगले जनम मोहे कुत्ता ही की जो।

तुम मेरी हो

डॉ.वासिफ काजी

हाथों में हाथ थामे, साथ मेरे तुम चलना।
मेरे जीवन के आंगन में, सांझ जैसी ढलना।।

उम्मीदों का सहर हो मेरी, तुम ही उजाला करना।
बारिशों का पानी बनकर, यूं ही तर-बतर करना।।

अच्छा लगता है मुझको यूं खुद से बातें करना।
याद में तेरी जानें जां, अब यूं जगराते करना।।

खुशबू बनकर सांसों में तुम बसना और बिखरना।
मेरे लिए तुम हर शब जानम सजना और संवरना।।

राम प्रसाद यादव

दलाल गली

यह दलाल गली है
दलालों का अड्डा है
यहां खूब दलाली होती है
यहां बहुत दलाल रहते हैं
कोई दोस्ती के, तो
कई रिश्तेदारी के हित साधन में हैं
हर दलाल की अपनी अपनी दलील है
जिस की जहां
ताल लग जाय
वहीं फिट है
मेरी किस्मत
वैसी नहीं है
तुम तो पकौड़े ही तलो
और वह
मूंगफली बेच लेगा
मालूम है
तुम पढ़े लिखे हो
इससे क्या
यह दलाल गली है
यहां बहुत दलाल रहते हैं
और हर कोई
किसी न किसी की
दलाली में है
अरबों शब्दों का निवेश है
और खरबों की गद्दी की
शुद्ध कमाई होती है

संध्या गुप्ता

खुली किताब

सामने तुम्हारे
पृष्ठ खोले, मैनें सारे
कालेज की अल्हड़ गलियों की
अठखेलियाँ, मस्ती
दोस्ती के किस्से
और वो प्रेम की भी कहानियां
अच्छा! अब तुम भी, कुछ सुनाओ
बातें पुरानी, कुछ तुम भी बताओ
वो, हौले से कुछ उदारता से मुसकाई
लब ने, दिया नहीं साथ
मन ही मन अपने को समझाई
मैं औरत हूं
दिल है, हमारा दरिया
कुछेक फड़फड़ाते पन्ने
जो जुभते थे, मन को
फिर भी, समेट लेती हूं
अपने दामन को
कहा छोड़ो भी प्रिय
वो अतीत की बातें
वर्तमान, भविष्य अब है पास हमारे
गुने, हमने साथ-साथ
कितने ही ख्वाब
पितृसत्ता के मद में
जब्त नहीं कर पाओगे
नहीं पढ पाओगे
तुम हमारी जिंदगी की
खुली किताब..।।

सुरेन्द्र कुमार अरोड़ा

मनुहार

जब भी आऊं मैं तुम्हारी उस गली
तुम दूर से ही सिर्फ एक बार मुस्कुरा देना

जब भी डालूं एक निगाह तुम्हारी निगाहों में
तुम एक बार अपनी निगाहों में मुझे बसा लेना

जब भी करूं मैं बात जाने की दूर तुमसे
तुम पकड़ कर हाथ मेरे पास अपने बिठा लेना

रूठने का जब भी हो दिल तुम्हारा
रूठने से पहले मनाने का तरीका समझा देना

ये जिन्दगी तो है कुछ वर्षों की कहानी
तुम जन्मों का बन्धन मुझसे लिखवा लेना ।

प्रतिमा 'संत' बाजपेई

संस्कार

जिससे न होता कोई विकार
हर मन का सपना हो साकार

नित उठ ईश्वर का ध्यान करें
माँ पिता को फिर हम नमन करें

आगंतुक हो ईश्वर समान
छोटे बड़ों का रखना है ध्यान

गुरु वाणी में विश्वास करो
अपनी चादर में वास करो

बच्चे ,बूढ़े ,बिटिया ,बहिना
इन सबकी रक्षा है करना

है क्षमादान भी संस्कार
संस्कृति भी अपनी सकार

भारत की ऐसी संस्कृति है
न ही संस्कारों में विकृति है।

खुला आसमान छोड़ दो!!

आर्यावर्ती सरोज
'आर्या'

मेरे लिए, मेरा!
आसमान खुला छोड़ दो,
दायरें खुद तय करूंगी
मेरी चिंता छोड़ दो..,
उड़ सकूं उन्मुक्त
कर सकूं अभिव्यक्ति
मेरा जीना, मेरा मरना
मुझपे निर्णय छोड़ दो
कर सको तो,
मुझपे बस अहसान
इतना करना...,
वो नजर,वो सोच
अपने पास ही धर रखना
दृष्टि जो कुदृष्टि डाले
देह पर,
जो कुबुद्धी बन पड़ा हो
नेह पर,
अपनी छोटी सोच,
खोटी नीयत अपने
पास रखना,
मेरे हिस्से की खुशी
और होंठों की हंसी
दे, दो मुझको मेरी
हिस्सेवाली मेरी जिन्दगी,
विचर सकूं जिस धरा
वो, जहान छोड़ दो!
मेरे लिए, मेरा !
खुला आसमान छोड़ दो!!

नीरजा मेहता 'कमलिनी'

कुछ अलग

मेरी दुनिया
कुछ अलग सी है
भाते हैं मुझे
गम और तन्हाई
उसी में कहीं खो जाती हूँ मैं
खुद से खुद की बात करती हूँ मैं
खुद में खुद को खोजती हूँ मैं
कभी पूछ लेती हूँ खुद का हाल
कभी खुद से रूठ
खुद को ही मना लेती हूँ
मैं खुद अपनी सी अकेली हूँ
हाँ, मैं कुछ अलग सी हूँ।

जब लोग भेजते हैं संदेश
और करते हैं बातें मोबाइल पर
मुझे रहता है इंतजार डाकिये का
मुझे रहता है उस खत का इंतजार
जिसमें किसी अपने का संदेश हो
लम्बी-लम्बी बातें हों
कुछ प्रेम की सौगातें हों,
मुझे अच्छा लगता है
बार-बार उस खत को पढ़ना
और दूसरे दिन फिर डाकिये
का इंतजार करना,
शायद इसीलिए
अपने छज्जे पर जाकर
रास्ते पर टकटकी लगाए
बैठ जाती हूँ
हाँ, मैं कुछ अलग सी हूँ।

जब लोग नेट सर्फिंग में लगे होते हैं
मैं अपनी पुरानी गुड़िया निकाल
उसे दुल्हन की तरह सजाती हूँ
कच्ची पक्की रसोई बना कर
गुड्डे की बारात सजाती हूँ,
कभी गुट्टे निकाल
अकेले ही खेल लेती हूँ
और रेडियो चला पुराने गीतों
पर नाच लेती हूँ,
कभी अलमारी खोल
पुरानी डायरी के पन्ने पलटती हूँ
और सहेज कर रखे
पुराने खतों की पोटली खोल लेती हूँ
हाँ, मैं कुछ अलग सी हूँ।

जब होता है मन उदास
मैं उस उदासी में
खुशी ढूँढ लेती हूँ
कुछ गुनगुना लेती हूँ,
पुराने संदूक से
काजल की डिबिया, चुंदरी,
लाल चटक चूड़ी और टीका नथनी
निकाल लेती हूँ और पहनकर
आईने के सामने मटक लेती हूँ,
छोटी चिड़ियों के बीच
उनकी चीं चीं सुन
एकांत में भीड़ का सा
एहसास कर लेती हूँ
हाँ, मैं कुछ अलग सी हूँ।

मैं एक कविता सी हूँ
जो पढ़ने में सरल
पर गूढ़ अर्थ लिए होती है,
सब पढ़ना भी चाहते हैं
पर समझ नहीं पाते,
मैं मीठी लोरी सी हूँ
खुद को सुकून देती हूँ,
ओस की बूँद सी हूँ
मन को नमी देती हूँ,
बंद पलकों से सब देख लेती हूँ
क्योंकि मैं कुछ अलग सी हूँ
हाँ, मैं कुछ अलग सी हूँ।

व्याकुल पथिक: सूना आँगन

शशि कांत शशि

बाहर बाजार में खासी चहल-पहल है। सभी अपने सामर्थ्य के अनुरूप खरीदारी करने में व्यस्त हैं। कार एवं बाइक से पत्नी और बच्चों के संग पुरुष नगर के छोटे-बड़े वस्त्रालय की ओर निकल पड़े हैं। जिनकी आय बिल्कुल सीमित है ऐसे परिवार की महिलाएँ भी फुटपाथ पर लगे कपड़े की दुकानों पर दिख रही हैं। पर बच्चों की विशेष रुचि तो रंग एवं पिचकारियों में ही होती है।

वे जिद मचाए हुये है- 'पापा वहाँ चलिए यह देखिए, मुझे तो इसे ही लेना है।'

गृहणियों ने पहले से ही गुझिया एवं मालपुआ बनाने के लिए पतिदेव से खोवा और मेवा लाने की फरमाइश कर रखी है। हाँ! अनेक सम्पन्न घरों में होली के ऐसे खास पकवान भी अब तो बने बनाए ही किसी प्रतिष्ठित मिष्ठान भंडार से आ जाते हैं। भले ही उसमें घर जैसे स्नेह भरा स्वाद न हो, पर क्या फर्क पड़ता है। यह कृत्रित युग है। बस जेब खाली न हो।

और उधर पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त अर्पित अपने हृदय के सूने आँगन को टटोल रहा था।

फागुन का महीना

त्रिशिता गुड्डा

फागुन का महीना, लग गया
अबीर-गुलाल, का आलम
दिल में है, सज गया
और अपना तो, है ये त्यौहार खास
थोड़ा हुड़दंग, खूबसूरत
रंग बरसाने, के साथ
छुप-छुप के है, जो भी बैठा
जा करके उसको, खास पकड़ो
फिर रंग उसके, चेहरे पे
साथियो जरा अच्छे, से रगड़ो
सब हंस-हंस, उसे चिढ़ायेंगे
देखो तब, वो भी हुजूर
लिए भर पिचकारी, होली के
जोकरों में शामिल, हो जायेंगें
सब भूत बने, इकदूजे को देख
हंसते, हंसते, लोटपोट हो
होली के गीत, फिर बजायेंगे
रंगों से घुल-मिल, जायेंगे
फागुन का महीना, लग गया
सतरंगी आलम, दिल में है सज गया

रंतिदेव त्रिवेदी

है ना

है ना यह परम सत्य कि
बसते हैं हम अपने 'प्रतिध्वनि आवास' में,
सुनते रहते अपने ही आवाज को,
रहकर बेफिकर अन्य की
चौतरफा फैली हुई वाणी से!
है सत्य यह, सांप्रत में, कि
है व्याप्त सर्वदिश में शासन दर्प का,
अहंभाव का,
है वही सबकुछ आज कल
लोग के जीवन में, और
है नहीं परवाह किसीको कोई की।
है कहाँ स्वस्थता चित्तकी,
है कहाँ मानसिक ताटस्थ्य इस
समय,
पालता रहता है जो
मानसिक विक्षोभ की वृद्धि को
सांप्रत में!

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

श्याम सागर

मैं एक पंछी बन जाऊँ

क्या ऐसा नहीं हो सकता है,
मेरे भी पर लग जाएं,
मैं एक पंछी बन जाऊं,
उड़ जाऊं मैं आसमान में,
उड़ता उड़ता घुमू जहान मैं,
हर घर, हर आँगन में जाकर,
मानवता के गीत सुनाऊँ!
क्या ऐसा नहीं...!
उठता होगा सबके मन में,
एक प्रश्न बहुत खोटा सा,
दुर्लभ मानव तन पाकर,
क्यों चाहूँ बनना खग छोटा सा,
है धिक्कार मुझे उस मानव पर,
जो मानवता को न समझे,
हिन्दू, मुस्लिम सब भाई हैं,
भाई को भाई न समझे,
बिखर गया है अब अंतर्मन,
इस आतंक रूप कसाई से,
घृणा हो गयी है मुझको,
ऐसी मानव परछाई से,
इससे तो यह अच्छा है,
मैं जल्दी ही मर जाऊं,
जन्म नया हो कोई मेरा,
लेकिन मानव न कहलाऊं,
खुदा कहूं न ष्श्यामष कहूँ,
बस प्रेम गीत गाता जाऊँ,
एक देश से देश दूसरे,
पल भर में मैं हो आऊँ,
उड़-उड़ कर सारी दुनिया को,
मानवता मैं सिखलाऊँ,
क्या ऐसा नहीं हो सकता है,
मेरे भी पर लग जाएं,
मैं एक पंछी बन जाऊँ !!

भावना जैन 'दर्शी'

प्रेम

उसकी खामोशी ने स्वतः ही समीर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। जश्न के इस माहौल में एक कोने में बैठी स्वरा अपने में खोई हुई थी। अचानक एक आवाज उसके कानो में पड़ी। 'क्या हुआ तुम पार्टी इंजॉय नहीं कर रही हो', समीर ने पूछा। नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। बस मुझे यह सब ज्यादा पसन्द नहीं है। यह कहते हुए स्वरा दूसरी ओर देखने लगी। समीर ने उसके रूखे पन को इग्नोर करते हुए दोबारा पूछा, 'तो क्या पसंद है तुम्हें'। मुझे, मुझे कविताएं पसंद है, कहानी पसंद है, लोगों के विचार सुनना, उनके भावों को समझना पसंद है। 'यह सुनते ही समीर को एक अपनापन महसूस हुआ क्योंकि वह पेशे से एक लेखक था। काफी कुछ लिख चुका था। और अपनी एक पहचान बना चुका था।' अरे वाह मुझे भी लिखना बहुत पसंद है उसके चलते काफी कुछ पढ़ता भी हूं। हमारी पसंद काफी मिलती है। यह जानने के बाद तो मानो स्वरा को कोई अपना मिल गया। और फिर दोनों के बीच बातों का सिलसिला शुरू हो गया। समय का तो पता ही नहीं चला कैसे पूरी रात बीत गई। और बातें अभी भी खत्म नहीं हुई थी। तभी पीछे से मानव ने इशारे से पूछा क्यों घर नहीं जाना क्या आज। 'हां आता हूं तुम चलो', समीर ने कहा। 'चलो, फिर चलते हैं आज तो समय का पता ही नहीं चला', स्वरा ने समीर को मुस्कुराते हुए कहा। 'मैंने पहली बार किसी से इतनी बातें की है', समीर ने स्वरा को बाय करते हुए कहा। और दोनों अपने रास्ते चलने लगे। तभी अचानक, स्वरा क्या तुम मुझसे शादी करोगी, जानता हूं बहुत जल्दबाजी कर रहा हूं। मगर मैं जान गया हूं तुमसे अच्छा जीवनसाथी मुझे नहीं मिलेगा। मैं तुम्हें बहुत खुश रखूंगा। स्वरा एकदम से चौंक गई। हालांकि उसे भी समीर से बात करना बहुत अच्छा लगा। एक अंजाना सा अपनापन महसूस हुआ। मगर ऐसा कुछ होगा उसने नहीं सोचा था। यद्यपि कई सारे विचारों के चलते भी वह खुद को समीर से हां बोलने से रोक नहीं पाई।

डॉ. आर के तिवारी

मैं दिखता हूँ देवों जैसे
पर पक्का मैं व्यभिचारी हूँ
बाहर से दिखता पुरुष मात्र
भीतर से इक्षाधारी हूँ
नर हूँ नारायण बनता हूँ
नारायण को पीछे रख कर
मैं पल पल रंग बदलता हूँ
जीवन भर गिरगिट सा बनकर
है लगी आस न बुझे प्यास
मनचली मुक्त ललनाओ की
न मिटे चाह उस यौवन की
न ही मदमस्त अदाओं की

मैं यही सोच पास अकल के
कम ही जाया करता हूँ
जो बुद्धिमान जन होते हैं
उनसे कतराया करता हूँ
मेरी गीता में लिखा हुआ
सच्चे योगी जो होते हैं
वो कम से कम अठारह घंटे
लिए विदेशी सोते हैं
देश विदेश में भाईचारे का
चहुदिक् फरमान हुआ
हिन्दू मुस्लिम करते करते
अपना घर वीरान हुआ

डॉ. मंजु सिंह 'मरालिका'

नारी

तुम अनुपम वरदान ईश का,
सृष्टि सृजन का वर साधन।
आत्मिक श्रद्धा भाव से नत हो,
जग करता नारी तव आराधन।

जननी बन जगतरूप शिशु पर,
प्यार दुलार वात्सल्य लुटाती।
पत्नी रूप में पति परमेश्वर को,
सौन्दर्य दीप्ति से खूब लुभाती।

भगिनी रूप में प्रिय भाई की,
हर गलती समझ छिपा लेती।
तात मात की मार डांट से,
तुम उसको सदा बचा लेती।

पुत्री बन गृह-उपवन को,
मधु वाणी से सुरभित करतीं।
मां पापा की उलझन सुलझाकर,
नित नूतन खुशियां भरतीं।

दया माया और ममता का,
अथाह उदधि तव उर में बहता।
सौन्दर्य विश्वास और श्रद्धा से,
शोभायमान तव जीवन रहता।

विश्वास कसौटी पर कसने पर,
सीता सी खरी उतरती हो।
सावित्री सी सतत प्रयत्नरत रह,
लक्ष्य अभीष्ट सदा वरती हो।

जीवन की धूप छांव से तुम,
कभी नहीं विचलित होती।
हर मुश्किल को कर परास्त,
चुनती हो सफलता के मोती।

नारी दिवस पर आज विश्व की,
हर नारी को शीश झुकाती हूं।
नारी के महनीय चरित्र की,
गाथा गर्वित हो गाती हूं।

सविता गुप्ता

जीवन के रंग

मन की इच्छा को जब आप भोले मन से दिव्यता को समर्पित कर देते हैं तब जीवन एक उत्सव बन जाता है और जीवन मे रंग भर देता है ।

यह बात सोनिका के जीवन का एक अहम हिस्सा बन गयी थी । सोनिका नहा के आई ही थी के मोहल्ले में होली के गानों की आवाज आने लगी और वह घर का सारा काम काज भूल कर यादों की दुनिया में खो गयी के समय के साथ साथ कैसे उसके जीवन के सारे रंग ही बदल गए । ११ महीने ही हुए थे अभी शादी को के एक दिन अचानक से ट्रेन दुर्घटना ने उसका सुहाग ही छीन लिया।

एक साल पहले वह होली का ही दिन था जब घर के आँगन में मोहित का अंतिम संस्कार हो रहा था और सोनिका के माथे पर सजे
लाल सिंदूर को हटाया जा रहा था । अचानक जिंदगी ने फिर पलटी मारी । वह अपने मायके में थी, दादी ने सोनिका को उसके कमरे से निकलने पर पाबंदी लगा दी । भैया की अभी ही शादी हुई थी और भाभी की पहली होली होने के कारण सारे दोस्त, भाभी के घरवाले सब घर पर आ चुके थे । नीचे से हंसी ठहाकों की आवाजें रुक ही नहीं रही थी और तभी कमरे में माँ ने आ के खाने की थाल सजा दी । मन न होते हुए भी ज्यों ही मैंने अपने कदम हाथ धुलने के लिए वहश-बेसिन के तरफ बढ़ाए भाभी के भाई और छोटे गोलु ने पूरी बाल्टी भरे रंग से मुझे ऊपर से नीचे तक गुलाबी कर दिया। गोलु के होली है होली है के शोर में दादी का बुदबुदाना चालू हो गया।

वह कश्मकश में पड़ी ही थी, कि मोहित ने पापा के सामने मुझसे शादी का प्रस्ताव रख दिया । दिन बीते और किसी तरह पापा ने दादी को मना ही लिया और जिंदगी ने मुझे फिर मोहित से मिला दिया। अभी वह सोच के खयालो में डूबी ही थी के फिर मोहित ने उसे रंग से सराबोर कर दिया और वह पलटते ही मोहित के बाहों के घेरे में आ गयी । सोनालिका ने भी मोहित की ओर देख के सोचा के इस होली के तरह ही यह जिंदगी भी कितने सारे रंगो से भरी हुई है और उसने मोहित के रंग भरे हाथों से उसी के गालों पर रंग लगाते हुए कहा, हैप्पी होली..

भाऊराव महंत

बाल होली गीत

खेलें रंग-गुलाल, आज हम होली में।
नाचे-गाएँ हर हाल, आज हम होली में।

सोनू-मोनू-दीप, चले आओ राजा।
खूब बजाएँ आज, सभी मिलकर बाजा।
बनकर गोकुल ग्वाल, आज हम होली में।
खेलें रंग-गुलाल, आज हम होली में।।

जल्दी-जल्दी रंग, भरो पिचकारी में।
चलो चलेंगे आज, सभी हम लहरी में।
करदें मित्र धमाल, आज हम होली में।
खेलें रंग-गुलाल, आज हम होली में।।

नीला-पीला-लाल, गुलाबी रंगों से।
लतपथ कीचड़ और निबटकर पंगों से।
चलो रँगाएँ गाल, आज हम होली में।
खेलें रंग-गुलाल, आज हम होली में।।

जो न रहा हो खेल, चलो पकड़ें उसको।
भाग रहा जो दूर, चलो जकड़ें उसको।
टोली बना विशाल, आज हम होली में।
खेलें रंग-गुलाल, आज हम होली में।।

घर-घर में पकवान, रसीले बने हुए।
खाने को तैयार, सभी हम ठने हुए।
खाएँ भर-भर थाल, आज हम होली में।
खेलें रंग-गुलाल, आज हम होली में।।

होली का त्यौहार, सदा खुशियाँ लाए।
हम बच्चों पर्व, यही अतिशय भाए।
सच में हुए निहाल, आज हम होली में।
खेलें रंग-गुलाल, आज हम होली में।।

माँ हो कोई तो ऐसी कहानी

प्रकाश रवि गर्ग

माँ हो कोई तो ऐसी कहानी
जिसमें राजा ना हो ना हो कोई रानी
माँ हो कोई तो ऐसी कहानी
जिसमें ना हो कोई जादूगर
जिसमें ना हो कोई बाजीगर
जिसमें बसते हों मेरे सपने रुहानी...

माँ हो कोई तो ऐसी कहानी
जिसमें हो इस धरा की जुबानी
माँ हो कोई तो ऐसी कहानी
जिसमें आँगन सभी का महकता हो
जिसमें चूल्हा सभी का जलता हो
जिसमें दीवारों में बसती हो जिंदगानी...

माँ हो कोई तो ऐसी कहानी
जिसमें बात तुमने भी अपनी कही हो
माँ हो कोई तो ऐसी कहानी
जिसमें तुमने भी जीवन जिया हो
जिसमें मन का चाहा तुम्हें भी मिला हो
जिसमें देखें हो तुमने आँखों में रंग आसमानी...

माँ हो कोई तो ऐसी कहानी...

रागिनी स्वर्णकार (शर्मा)

महिला शक्ति

शक्ति को न ललकारो
शीतल जल ही रहने दो।
वात्सल्य अमृत की धारा
ममता कल कल बहने दो।।

रूप अनेक है शक्ति के
तुम शक्ति न अपनी दिखलाना।
मात सदा खाई उसने है
जो न नारी को पहचाना।।

जननी को अपमानित कर
कभी न कोई जीत सका।
भुजबल धनबल के बल पर
पा नहीं कोई प्रीत सका।।

सोने की लंका जली सहज
दुर्दशा हुई दुर्योधन की।
काल घेरते दिखा कंस को
सुन ललकार देवकी की।।

मर्यादा मान सदा प्यारा
त्याग, तपस्या की मूरत है।
जीत सको तो मन जीतो
हर रिश्ते में खूबसूरत है।।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर वर्ष, ८ मार्च को मनाया जाता है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा और प्यार प्रकट करते हुए इस दिन को महिलाओं के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उपलब्धियों के उपलक्ष्य में उत्सव के तौर पर मनाया जाता है।

कुछ क्षेत्रों में, यह दिवस अपना राजनीतिक मूलस्वरूप खो चूका है, और अब यह मात्र महिलाओं के प्रति अपने प्यार को अभिव्यक्त करने हेतु एक तरह से मातृ दिवस और वेलेंटाइन डे की ही तरह बस एक अवसर बन कर रह गया हैं। हालांकि, अन्य क्षेत्रों में, संयुक्त राष्ट्र द्वारा चयनित राजनीतिक और मानव अधिकार विषयवस्तु के साथ महिलाओं के राजनीतिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए अभी भी इसे बड़े जोर-शोर से मनाया जाता हैं। कुछ लोग बैंगनी रंग के रिबन पहनकर इस दिन का जश्न मनाते हैं।

सबसे पहला दिवस, न्यूयॉर्क शहर में १९०९ में एक समाजवादी राजनीतिक कार्यक्रम के रूप में आयोजित किया गया था। १९१७ में सोवियत संघ ने इस दिन को एक राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया, और यह आसपास के अन्य देशों में फैल गया। इसे अब कई पूर्वी देशों में भी मनाया जाता है।

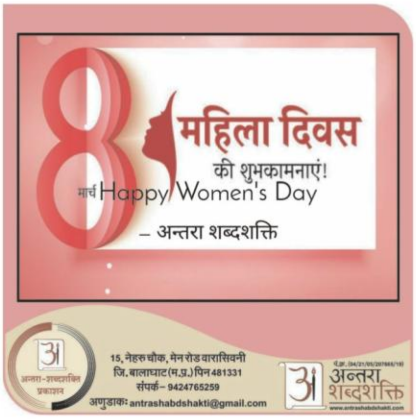

इतिहास

अमेरिका में सोशलिस्ट पार्टी के आह्वान पर, यह दिवस सबसे पहले २८ फरवरी १९०९ को मनाया गया। इसके बाद यह फरवरी के आखिरी इतवार के दिन मनाया जाने लगा। १९१० में सोशलिस्ट इंटरनेशनल के कोपेनहेगन सम्मेलन में इसे अन्तर्राष्ट्रीय दर्जा दिया गया। उस समय इसका प्रमुख ध्येय महिलाओं को वोट देने का अधिकार दिलवाना था, क्योंकि उस समय अधिकतर देशों में महिला को वोट देने का अधिकार नहीं था।

१९१७ में रूस की महिलाओं ने, महिला दिवस पर रोटी और कपड़े के लिये हड़ताल पर जाने का फैसला किया। यह हड़ताल भी ऐतिहासिक थी। जार ने सत्ता छोड़ी, अन्तरिम सरकार ने महिलाओं को वोट देने के अधिकार दिया। उस समय रूस में जुलियन कैलेंडर चलता था और बाकी दुनिया में ग्रेगेरियन कैलेंडर। इन दोनों की तारीखों में कुछ अन्तर है। जुलियन कैलेंडर के मुताबिक १९१७ की फरवरी का आखिरी इतवार २३ फरवरी को था जब की ग्रेगेरियन कैलैंडर के अनुसार उस दिन ८ मार्च थी। इस समय पूरी दुनिया में (यहां तक रूस में भी) ग्रेगेरियन कैलैंडर चलता है। इसी लिये ८ मार्च महिला दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

प्रसिद्ध जर्मन एक्टिविस्ट क्लारा जेटकिन के जोरदार प्रयासों के बदौलत इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस ने साल १९१० में महिला दिवस के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप और इस दिन पब्लिक हॉलीडे को सहमति दी। इस फलस्व रूप १९ मार्च, १९११ को पहला **IWD** ऑस्ट्रिया, डेनमार्क और जर्मनी में आयोजित किया गया। हालांकि महिला दिवस की तारीख को साल १९२१ में फाइनली बदलकर ८ मार्च कर दिया गया। तब से महिला दिवस पूरी दुनिया में ८ मार्च को ही मनाया जाता है।

वारासिवनी से डॉ प्रीति समकित सुराना वुमन पावर आइकॉन सम्मान २०२० से सम्मानित हुई।

झीलों की नगरी भोपाल में बेटी है तो कल है सामाजिक संस्था, मध्यप्रदेश द्वारा ५१ ऐसी महिलाओं का सम्मान किया जो अपने-अपने कर्मक्षेत्र का प्रतिधित्व करते हुए बेटी होने पर गर्व महसूस करती हैं।

नृत्य, नाट्य, चित्रकला, साहित्य, शिक्षा, चिकित्सा, मह्डलिंग, संगीत वादन, गायन आदि सभी क्षेत्रों से प्रतिभागी वारासिवनी, ग्वालियर, भोपाल, गुड़गांव, दिल्ली, छत्तीसगढ़, हरियाणा आदि विभिन्न स्थानों से आए।

राष्ट्रीय स्तर के इस आयोजन के आयोजक संस्था के संस्थापक डह वंदना-भूपेंद्र प्रेमी, व भोपाल की संयोजिका संगीता जी थी। कार्यक्रम के अतिथि खाद्य मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर एवं विधि मंत्री श्री पी.सी. शर्मा थे जिन्होंने सभी प्रतिभागियों को 'वूमन पावर आइकॉन' अवार्ड, माला, संस्था की स्मारिका एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित एवं प्रोत्साहित किया।

शानदार गणेश वंदना और बेटी है अनमोल के कत्थक नृत्य के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई, भूपेंद्र प्रेमी जी ने संचालन किया। डॉ वंदना भूपेंद्र प्रेमी जी ने आभार प्रदर्शन किया। स्वादिष्ट भोजन के साथ आयोजन का समापन हुआ।

अन्तरा शब्दशक्ति परिवार एवं सभी परिजनों एवं मित्रों ने डॉ प्रीति समकित सुराना को बधाइयाँ एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर अन्तरा शब्दशक्ति परिवार के व्हाट्सअप समूह के रचनाकारों के 'तीन सरप्राइज साझा संकलन' एवं मैगजीन के विगत दो अंकों का विमोचन

१. स्त्री-पुरुष - पूरक या प्रतिद्वंदी
https://antrashabdshakti.com/2020/03/08/स्त्री-पुरुषपूरक-या-प्रत/

२. स्त्री तुम सशक्त हो!
https://antrashabdshakti.com/2020/03/08/स्त्री-तुम-सशक्त-हो/

३. नारी तुम केवल श्रद्धा हो
https://antrashabdshakti.com/2020/03/08/नारी-तुम-केवल-श्रद्धा-हो/

आज शाम ५:३० को सोनी कम्प्यूटर्स (संदीप सोनी) एवं अन्तरा शब्दशक्ति के साझा कार्यलय में संस्था की संरक्षक डॉ. भारती सुराना एवं संजय रुसिया जी के आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

शहर के प्रतिष्ठित कवि प्रणय श्रीवास्तव, अंतु झकास, उपाध्यक्ष अदिति रुसिया, सहसचिव उषा निलेश खण्डेलवाल, संयोजक सौरभ संचेती, संयोजिका मीना विवेक जैन, मुद्रक राजेश पटले, कार्यकारिणी सदस्य सरफराज हुसैन, संजय सोनी, रीना सोनी, प्रियांशी, तन्मय, जयति, जैनम, अनन्य, राजवीर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का आयोजन संस्थापक डॉ प्रीति सुराना, कोषाध्यक्ष समकित सुराना, तकनीकी संपादक संदीप सोनी, संयोजिका सुषमा सोनी ने किया। स्वल्पाहार के साथ कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ।

सम्राट सिटी केबल से गणेश ठाकुर जी ने कार्यक्रम का टीवी कवरेज किया। सभी संकलनों को ईबुक के रूप में भी प्रकाशित किया गया जिसके लिंक संलग्न है।

सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। जिन्हें भी पुस्तकें चाहिए उनके लिए सभी पुस्तकें और मासिक वेब पत्रिका का मुद्रित साझा संकलन टंकित मूल्य पर बिना डाक खर्च के उपलब्ध है।

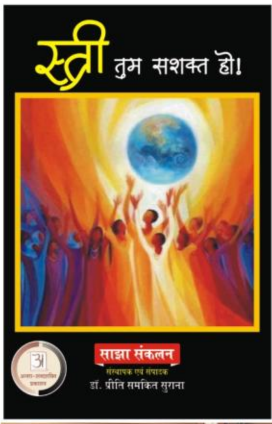

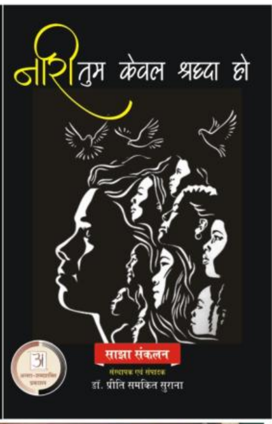

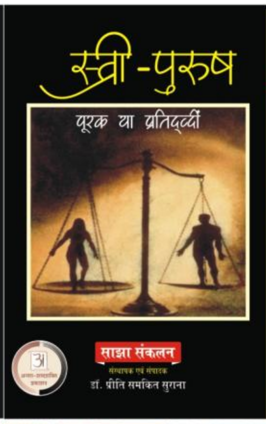

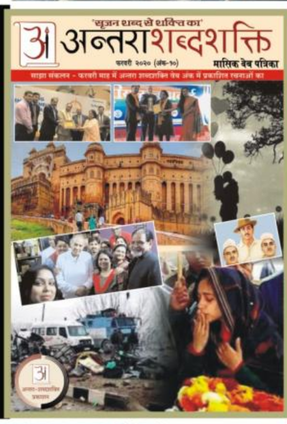

होली- भारतीय त्योहार एवं उत्सव

होली वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण भारतीय और नेपाली लोगों का त्यौहार है। यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

होली रंगों का तथा हँसी-खुशी का त्योहार है। यह भारत का एक प्रमुख और प्रसिद्ध त्योहार है, जो आज विश्वभर में मनाया जाने लगा है। रंगों का त्यौहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है। यह प्रमुखता से भारत तथा नेपाल में मनाया जाता है। यह त्यौहार कई अन्य देशों जिनमें अल्पसंख्यक हिन्दू लोग रहते हैं वहाँ भी धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। पहले दिन को होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते हैं। दूसरे दिन, जिसे प्रमुखतः धुलेंडी व धुरड्डी, धुरखेल या धूलिवंदन इसके अन्य नाम हैं, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि होली के दिन लोग पुरानी कटुता को भूल कर गले मिलते हैं और फिर से दोस्त बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्नान कर के विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।

राग-रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। राग अर्थात संगीत और रंग तो इसके प्रमुख अंग हैं ही पर इनको उत्कर्ष तक पहुँचाने वाली प्रकृति भी इस समय रंग-बिरंगे यौवन के साथ अपनी चरम अवस्था पर होती है। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। होली का त्यौहार वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है। उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है। इस दिन से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। बच्चे-बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ संकोच और रूढ़ियाँ भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ

नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ रंगों की फुहार फूट पड़ती है। गुझिया होली का प्रमुख पकवान है जो कि मावा (खोया) और मैदा से बनती है और मेवाओं से युक्त होती है इस दिन कांजी के बड़े खाने व खिलाने का भी रिवाज है। नए कपड़े पहन कर होली की शाम को लोग एक दूसरे के घर होली मिलने जाते है जहाँ उनका स्वागत गुझिया,नमकीन व ठंडाई से किया जाता है। होली के दिन आम्र मंजरी तथा चंदन को मिलाकर खाने का बड़ा माहात्म्य है।

इतिहास

होली भारत का अत्यंत प्राचीन पर्व है जो होली, होलिका या होलाका नाम से मनाया जाता था। वसंत की ऋतु में हर्षोल्लास के साथ मनाए जाने के कारण इसे वसंतोत्सव और काम-महोत्सव भी कहा गया है।

राधा-श्याम गोप और गोपियों की होली

इतिहासकारों का मानना है कि आर्यों में भी इस पर्व का प्रचलन था लेकिन अधिकतर यह पूर्वी भारत में ही मनाया जाता था। इस पर्व का वर्णन अनेक पुरातन धार्मिक पुस्तकों में मिलता है। इनमें प्रमुख हैं, जैमिनी के पूर्व मीमांसा-सूत्र और कथा गार्ह्य-सूत्र। नारद पुराण और भविष्य पुराण जैसे पुराणों की प्राचीन हस्तलिपियों और ग्रंथों में भी इस पर्व का उल्लेख मिलता है। विंध्य क्षेत्र के रामगढ़ स्थान पर स्थित ईसा से ३०० वर्ष पुराने एक अभिलेख में भी इसका उल्लेख किया गया है। संस्कृत साहित्य में वसन्त ऋतु और वसन्तोत्सव अनेक कवियों के प्रिय विषय रहे हैं।

सुप्रसिद्ध मुस्लिम पर्यटक अलबरूनी ने भी अपने ऐतिहासिक यात्रा संस्मरण में होलिकोत्सव का वर्णन किया है। भारत के अनेक मुस्लिम कवियों ने अपनी रचनाओं में इस बात का उल्लेख किया है कि होलिकोत्सव केवल हिंदू ही नहीं मुसलमान भी मनाते हैं। सबसे प्रामाणिक इतिहास की तस्वीरें हैं मुगल काल की और इस काल में होली के किस्से उत्सुकता जगाने वाले हैं। अकबर का जोधाबाई के साथ तथा जहाँगीर का नूरजहाँ के साथ होली खेलने का वर्णन मिलता है। अलवर संग्रहालय के एक चित्र में जहाँगीर को होली खेलते हुए दिखाया गया है। शाहजहाँ के समय तक होली खेलने का मुगलिया अंदाज ही बदल गया था। इतिहास में वर्णन है कि शाहजहाँ के जमाने में होली को ईद-ए-गुलाबी या आब-ए-पाशी (रंगों की बौछार) कहा जाता था। अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के बारे में प्रसिद्ध है कि होली पर उनके मंत्री उन्हें रंग लगाने जाया करते थे। मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में दर्शित कृष्ण की लीलाओं में भी होली का विस्तृत वर्णन मिलता है।

इसके अतिरिक्त प्राचीन चित्रों, भित्तिचित्रों और मंदिरों की दीवारों पर इस उत्सव के चित्र मिलते हैं। विजयनगर की राजधानी हंपी के १६वी शताब्दी के एक चित्रफलक पर होली का आनंददायक चित्र उकेरा गया है। इस चित्र में राजकुमारों और राजकुमारियों को दासियों सहित रंग और पिचकारी के साथ राज दम्पत्ति को होली के रंग में रंगते हुए दिखाया गया है। १६वी शताब्दी की अहमदनगर की एक चित्र आकृति का विषय वसंत रागिनी ही है। इस चित्र में राजपरिवार के एक दंपत्ति को बगीचे में झूला झूलते हुए दिखाया गया है। साथ में अनेक सेविकाएँ नृत्य-गीत व रंग खेलने में व्यस्त हैं। वे एक दूसरे पर पिचकारियों से रंग डाल रहे हैं। मध्यकालीन भारतीय मंदिरों के भित्तिचित्रों और आकृतियों में होली के सजीव चित्र देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए इसमें १७वी शताब्दी की मेवाड़ की एक कलाकृति में महाराणा को अपने दरबारियों के साथ चित्रित किया गया है। शासक कुछ लोगों को उपहार दे रहे हैं, नृत्यांगना नृत्य कर रही हैं और इस सबके मध्य रंग का एक कुंड रखा हुआ है। बूंदी से प्राप्त एक लघुचित्र में राजा को हाथीदाँत के सिंहासन पर बैठा दिखाया गया है जिसके गालों पर महिलाएँ गुलाल मल रही हैं।

होली की कहानियाँ

भगवान नृसिंह द्वारा हिरण्यकशिपु का वध

होली के पर्व से अनेक कहानियाँ जुड़ी हुई हैं। इनमें से सबसे प्रसिद्ध कहानी है प्रह्लाद की। माना जाता है कि प्राचीन काल में हिरण्यकशिपु नाम का एक अत्यंत बलशाली असुर था। अपने बल के दर्प में वह स्वयं को ही ईश्वर मानने लगा था। उसने अपने राज्य में ईश्वर का नाम लेने पर ही पाबंदी लगा दी थी। हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लाद ईश्वर भक्त था। प्रह्लाद की ईश्वर भक्ति से क्रुद्ध होकर हिरण्यकशिपु ने उसे अनेक कठोर दंड दिए, परंतु उसने ईश्वर की भक्ति का मार्ग न छोड़ा। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका को वरदान प्राप्त था कि वह आग में भस्म नहीं हो सकती। हिरण्यकशिपु ने आदेश दिया कि होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठे। आग में बैठने पर होलिका तो जल गई, पर प्रह्लाद बच गया। ईश्वर भक्त प्रह्लाद की याद में इस दिन होली जलाई जाती है। प्रतीक रूप से यह भी माना जाता है कि प्रह्लाद का अर्थ आनन्द होता है। वैर और उत्पीड़न की प्रतीक होलिका (जलाने की लकड़ी) जलती है और प्रेम तथा उल्लास का प्रतीक प्रह्लाद (आनंद) अक्षुण्ण रहता है।

प्रह्लाद की कथा के अतिरिक्त यह पर्व राक्षसी ढुंढी, राधा कृष्ण के रास और कामदेव के पुनर्जन्म से भी जुड़ा हुआ है।कुछ लोगों का मानना है कि होली में रंग लगाकर, नाच-गाकर लोग शिव के गणों का वेश धारण करते हैं तथा शिव की बारात का दृश्य बनाते हैं। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि भगवान श्रीकृष्ण ने इस दिन पूतना नामक राक्षसी का वध किया था। इसी खुशी में गोपियों और ग्वालों ने रासलीला की और रंग खेला था।

परंपराएँ

होली के पर्व की तरह इसकी परंपराएँ भी अत्यंत प्राचीन हैं और इसका स्वरूप और उद्देश्य समय के साथ बदलता रहा है। प्राचीन काल में यह विवाहित महिलाओं द्वारा परिवार की सुख समृद्धि के लिए मनाया जाता था और पूर्ण चंद्र की पूजा करने की परंपरा थी। वैदिक काल में इस पर्व को नवात्रैष्टि यज्ञ कहा जाता था। उस समय खेत के अधपके अन्न को यज्ञ में दान करके प्रसाद लेने का विधान समाज में व्याप्त था। अन्न को होला कहते हैं, इसी से इसका नाम होलिकोत्सव पड़ा। भारतीय ज्योतिष के अनुसार चैत्र सूदी प्रतिपदा के दिन से नववर्ष का भी आरंभ माना जाता है। इस उत्सव के बाद ही चैत्र महीने का आरंभ होता है। अतः यह पर्व नवसंवत का आरंभ तथा वसंतागमन का प्रतीक भी है। इसी दिन प्रथम पुरुष मनु का जन्म हुआ था, इस कारण इसे मन्वादितिथि कहते हैं।

होलिका दहन

होली का पहला काम झंडा या डंडा गाड़ना होता है। इसे किसी सार्वजनिक स्थल या घर के आहाते में गाड़ा जाता है। इसके पास ही होलिका की अग्नि इकट्ठी की जाती है। होली से काफी दिन पहले से ही यह सब तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। पर्व का पहला दिन होलिका दहन का दिन कहलाता है। इस दिन चौराहों पर व जहाँ कहीं अग्नि के लिए लकड़ी एकत्र की गई होती है, वहाँ होली जलाई जाती है। इसमें लकड़ियाँ और उपले प्रमुख रूप से होते हैं। कई स्थलों पर होलिका में भरभोलिए जलाने की भी परंपरा है। भरभोलिए गाय के गोबर से बने ऐसे उपले होते हैं जिनके बीच में छेद होता है। इस छेद में मूँज की रस्सी डाल कर माला बनाई जाती है। एक माला में सात भरभोलिए होते हैं। होली में आग लगाने से पहले इस माला को भाइयों के सिर के ऊपर से सात बार घूमा कर फेंक दिया जाता है। रात को होलिका दहन के समय यह माला होलिका के साथ जला दी जाती है। इसका यह आशय है कि होली के साथ भाइयों पर लगी बुरी नजर भी जल जाए। लकड़ियों व उपलों से बनी इस होली का दोपहर से ही विधिवत पूजन आरंभ हो जाता है। घरों में बने पकवानों का यहाँ भोग लगाया जाता है। दिन ढलने पर ज्योतिषियों द्वारा निकाले मुहूर्त पर होली का दहन किया जाता है। इस आग में नई फसल की गेहूँ की बालियों और चने के होले को भी भूना जाता है। होलिका का दहन समाज की समस्त बुराइयों के अंत का प्रतीक है। यह बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का सूचक है। गाँवों में लोग देर रात तक होली के गीत गाते हैं तथा नाचते हैं।

सार्वजनिक होली मिलन

विदेश (जर्मनी) में होली मनाते हुए युवा

होली से अगला दिन धूलिवंदन कहलाता है। इस दिन लोग रंगों से खेलते हैं। सुबह होते ही सब अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं। गुलाल और रंगों से सबका स्वागत किया जाता है। लोग अपनी ईर्ष्या-द्वेष की भावना भुलाकर प्रेमपूर्वक गले मिलते हैं तथा एक-दूसरे को रंग लगाते हैं। इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। सारा समाज होली के रंग में रंगकर एक-सा बन जाता है। रंग खेलने के बाद देर दोपहर तक लोग नहाते हैं और शाम को नए वस्त्र पहनकर सबसे मिलने जाते हैं। प्रीतिभोज तथा गाने-बजाने के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

होली के दिन घरों में खीर, पूरी और पूड़े आदि विभिन्न व्यंजन (खाद्य पदार्थ) पकाए जाते हैं। इस अवसर पर अनेक मिठाइयाँ बनाई जाती हैं जिनमें गुझियों का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बेसन के सेव और दहीबड़े भी सामान्य रूप से उत्तर प्रदेश में रहने वाले हर परिवार में बनाए व खिलाए जाते हैं। कांजी, भांग और ठंडाई इस पर्व के विशेष पेय होते हैं। पर ये कुछ ही लोगों को भाते हैं। इस अवसर पर उत्तरी भारत के प्रायः सभी राज्यों के सरकारी कार्यालयों में अवकाश रहता है, पर दक्षिण भारत में उतना लोकप्रिय न होने की वजह से इस दिन सरकारी संस्थानों में अवकाश नहीं रहता।

विशिष्ट उत्सव - देश विदेश की होली

भारत में होली का उत्सव अलग-अलग प्रदेशों में भिन्नता के साथ मनाया जाता है। ब्रज की होली आज भी सारे देश के आकर्षण का बिंदु होती है। बरसाने की लठमार होली काफी प्रसिद्ध है। इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएँ उन्हें लाठियों तथा कपड़े के बनाए गए कोड़ों से मारती हैं। इसी प्रकार मथुरा और वृंदावन में भी १५ दिनों तक होली का पर्व मनाया जाता है। कुमाऊँ की गीत बैठकी में शास्त्रीय संगीत की गोष्ठियाँ होती हैं। यह सब होली के कई दिनों पहले शुरू हो जाता है। हरियाणा की धुलंडी में भाभी द्वारा देवर को सताए जाने की प्रथा है। बंगाल की दोल जात्रा चैतन्य महाप्रभु के जन्मदिन के रूप में मनाई जाती है। जलूस निकलते हैं और गाना बजाना भी साथ रहता है। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र की रंग पंचमी में सूखा गुलाल खेलने, गोवा के शिमगो में जलूस निकालने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा पंजाब

के होला मोहल्ला में सिक्खों द्वारा शक्ति प्रदर्शन की परंपरा है। तमिलनाडु की कमन पोडिगई मुख्य रूप से कामदेव की कथा पर आधारित वसंतोत्सव है जबकि मणिपुर के याओसांग में योंगसांग उस नन्हीं झोंपड़ी का नाम है जो पूर्णिमा के दिन प्रत्येक नगर-ग्राम में नदी अथवा सरोवर के तट पर बनाई जाती है। दक्षिण गुजरात के आदिवासियों के लिए होली सबसे बड़ा पर्व है, छत्तीसगढ़ की होरी में लोक गीतों की अद्भुत परंपरा है और मध्यप्रदेश के मालवा अंचल के आदिवासी इलाकों में बेहद धूमधाम से मनाया जाता है भगोरिया, जो होली का ही एक रूप है। बिहार का फगुआ जम कर मौज मस्ती करने का पर्व है और नेपाल की होली में इस पर धार्मिक व सांस्कृतिक रंग दिखाई देता है। इसी प्रकार विभिन्न देशों में बसे प्रवासियों तथा धार्मिक संस्थाओं जैसे इस्कॉन या वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में अलग अलग प्रकार से होली के शृंगार व उत्सव मनाने की परंपरा है जिसमें अनेक समानताएँ और भिन्नताएँ हैं।

होली मनाने का तरीका

होली की पूर्व संध्या पर यानि कि होली पूजा वाले दिन शाम को बड़ी मात्रा में होलिका दहन किया जाता है और लोग अग्नि की पूजा करते हैं। होली की परिक्रमा शुभ मानी जाती है। किसी सार्वजनिक स्थल या घर के आहाते में उपले व लकड़ी से होली तैयार की जाती है। होली से काफी दिन पहले से ही इसकी तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। अग्नि के लिए एकत्र सामग्री में लकड़ियाँ और उपले प्रमुख रूप से होते हैं। गाय के गोबर से बने ऐसे उपले जिनके बीच में छेद होता है जिनको गुलरी, भरभोलिए या झाल आदि कई नामों से अलग अलग क्षेत्र में जाना जाता है। इस छेद में मूँज की रस्सी डाल कर माला बनाई जाती है।

लकड़ियों व उपलों से बनी इस होली का सुबह से ही विधिवत पूजन आरंभ हो जाता है। होली के दिन घरों में खीर, पूरी और पकवान बनाए जाते हैं। घरों में बने पकवानों से भोग लगाया जाता है। दिन ढलने पर मुहूर्त के अनुसार होली का दहन किया जाता है। इसी में से आग ले जाकर घरों के आंगन में रखी निजी पारिवारिक होली में आग लगाई जाती है। इस आग में गेहूँ, जौ की बालियों और चने के होले को भी भूना जाता है। दूसरे दिन सुबह से ही लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि लगाते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। सुबह होते ही लोग रंगों से खेलते अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं। गुलाल और रंगों से ही सबका स्वागत किया जाता है। इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। प्रीति भोज तथा गाने-बजाने के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

होली के अवसर पर सबसे अधिक खुश बच्चे होते हैं वह रंग-बिरंगी पिचकारी को अपने सीने से लगाए, सब पर रंग डालते भागते दौड़ते मजे लेते हैं। पूरे मोहल्ले में भागते फिरते इनकी आवाज सुन सकते हैं ''होली है..''। एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्नान कर के विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं।

साहित्य में होली

प्राचीन काल के संस्कृत साहित्य में होली के अनेक रूपों का विस्तृत वर्णन है। श्रीमद्भागवत महापुराण में रसों के समूह रास का वर्णन है। अन्य रचनाओं में 'रंग' नामक उत्सव का वर्णन है जिनमें हर्ष की प्रियदर्शिका व रत्नावली तथा कालिदास की कुमारसंभवम् तथा मालविकाग्निमित्रम् शामिल हैं। कालिदास रचित ऋतुसंहार में पूरा एक सर्ग ही 'वसन्तोत्सव' को अर्पित है। भारवि, माघ और अन्य कई संस्कृत कवियों ने वसन्त की खूब चर्चा की है। चंद बरदाई द्वारा रचित हिंदी के पहले महाकाव्य पृथ्वीराज रासो में होली का वर्णन है। भक्तिकाल और रीतिकाल के हिन्दी साहित्य में होली और फाल्गुन माह का विशिष्ट महत्व रहा है। आदिकालीन कवि विद्यापति से लेकर भक्तिकालीन सूरदास, रहीम, रसखान, पद्माकर, जायसी, मीराबाई, कबीर और रीतिकालीन बिहारी, केशव, घनानंद आदि अनेक कवियों को यह विषय प्रिय रहा है। महाकवि सूरदास ने वसन्त एवं होली पर ७८ पद लिखे हैं। पद्माकर ने भी होली विषयक प्रचुर रचनाएँ की हैं। इस विषय के माध्यम से कवियों ने जहाँ एक ओर नितान्त लौकिक नायक नायिका के बीच खेली गई अनुराग और प्रीति की होली का वर्णन किया है, वहीं राधा कृष्ण के बीच खेली गई प्रेम और छेड़छाड़ से भरी होली के माध्यम से सगुण साकार भक्तिमय प्रेम और निर्गुण निराकार भक्तिमय प्रेम का निष्पादन कर डाला है। सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया, अमीर खुसरो और बहादुर शाह जफर जैसे मुस्लिम संप्रदाय का पालन करने वाले कवियों ने भी होली पर सुंदर रचनाएँ लिखी हैं जो आज भी जन सामान्य में लोकप्रिय हैं। आधुनिक हिंदी कहानियों प्रेमचंद की राजा हरदोल, प्रभु जोशी की अलग अलग तीलियाँ, तेजेंद्र शर्मा की एक बार फिर होली, ओम प्रकाश अवस्थी की होली मंगलमय हो तथा स्वदेश राणा की होली में होली के अलग अलग रूप देखने को मिलते हैं। भारतीय फिल्मों में भी होली के दृश्यों और गीतों को सुंदरता के साथ चित्रित किया गया है। इस दृष्टि से शशि कपूर की उत्सव, यश चोपड़ा की सिलसिला, वी शांताराम की झनक झनक पायल बाजे और नवरंग इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

संगीत में होली

भारतीय शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोक तथा फिल्मी संगीत की परम्पराओं में होली का विशेष महत्व है। शास्त्रीय संगीत में धमार का होली से गहरा संबंध है, हालाँकि ध्रुपद, धमार, छोटे व बड़े ख्याल और ठुमरी में भी होली के गीतों का सौंदर्य देखते ही बनता है। कथक नृत्य के साथ होली, धमार और ठुमरी पर प्रस्तुत की जाने वाली अनेक सुंदर बंदिशें जैसे चलो गुंइयां आज खेलें होरी कन्हैया घर आज भी अत्यंत लोकप्रिय हैं। ध्रुपद में गाये जाने वाली एक लोकप्रिय बंदिश है खेलत हरी संग सकल, रंग भरी होरी सखी। भारतीय शास्त्रीय संगीत में कुछ राग ऐसे हैं जिनमें होली के गीत विशेष रूप से गाए जाते हैं। बसंत, बहार, हिंडोल और काफी ऐसे ही राग हैं। होली पर गाने बजाने का अपने आप वातावरण बन जाता है और जन जन पर इसका रंग छाने लगता है। उपशास्त्रीय संगीत में चैती, दादरा और ठुमरी में अनेक प्रसिद्ध होलियाँ हैं। होली के अवसर पर संगीत की लोकप्रियता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि संगीत की एक विशेष शैली का नाम ही होली है, जिसमें अलग अलग प्रांतों में होली के विभिन्न वर्णन सुनने को मिलते है जिसमें उस स्थान का इतिहास और धार्मिक महत्व छुपा होता है। जहाँ ब्रजधाम में राधा और कृष्ण के होली खेलने के वर्णन मिलते हैं वहीं अवध में राम और सीता के जैसे होली खेलें

रघुवीरा अवध में। राजस्थान के अजमेर शहर में ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर गाई जाने वाली होली का विशेष रंग है। उनकी एक प्रसिद्ध होली है आज रंग है री मन रंग है, अपने महबूब के घर रंग है री। इसी प्रकार शंकर जी से संबंधित एक होली में दिगंबर खेले मसाने में होली कह कर शिव द्वारा श्मशान में होली खेलने का वर्णन मिलता है। भारतीय फिल्मों में भी अलग अलग रागों पर आधारित होली के गीत प्रस्तुत किये गए हैं जो काफी लोकप्रिय हुए हैं। 'सिलसिला' के गीत रंग बरसे भीगे चुनर वाली, रंग बरसे और 'नवरंग' के आया होली का त्योहार, उड़े रंगों की बौछार, को आज भी लोग भूल नहीं पाए हैं।

आधुनिकता का रंग

होली रंगों का त्योहार है, हँसी-खुशी का त्योहार है, लेकिन होली के भी अनेक रूप देखने को मिलते हैं। प्राकृतिक रंगों के स्थान पर रासायनिक रंगों का प्रचलन, भांग-ठंडाई की जगह नशेबाजी और लोक संगीत की जगह फिल्मी गानों का प्रचलन इसके कुछ आधुनिक रूप हैं।लेकिन इससे होली पर गाए-बजाए जाने वाले ढोल, मंजीरों, फाग, धमार, चैती और ठुमरी की शान में कमी नहीं आती। अनेक लोग ऐसे हैं जो पारंपरिक संगीत की समझ रखते हैं और पर्यावरण के प्रति सचेत हैं। इस प्रकार के लोग और संस्थाएँ चंदन, गुलाबजल, टेसू के फूलों से बना हुआ रंग तथा प्राकृतिक रंगों से होली खेलने की परंपरा को बनाए हुए हैं, साथ ही इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दे रहे हैं। रासायनिक रंगों के कुप्रभावों की जानकारी होने के बाद बहुत से लोग स्वयं ही प्राकृतिक रंगों की ओर लौट रहे हैं। होली की लोकप्रियता का विकसित होता हुआ अंतर्राष्ट्रीय रूप भी आकार लेने लगा है। बाजार में इसकी उपयोगिता का अंदाज इस साल होली के अवसर पर एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठान केन्जोआमूर द्वारा जारी किए गए नए इत्र होली है से लगाया जा सकता है।

होली की बुराइयाँ

प्राचीन काल में लोग चन्दन और गुलाल से ही होली खेलते थे। लेकिन आज गुलाल, प्राकृतिक रंगों के के साथ साथ रासायनिक रंगों का प्रचलन बढ़ गया है स ये रंग स्वास्थ्य के लिए काफी हानिकारक हैं जो त्वचा के साथ साथ आँखों पर भी बुरा असर करते हैं। भांग-ठंडाई की जगह नशेबाजी और लोक संगीत की जगह फिल्मी गानों का प्रचलन आधुनिक समय में अत्यधिक बढ़ गया हैं। जगह जगह शराब के नशे में लोग मित्रों से मिलने के लिए निकलते हैं और दुर्घटनाओ का शिकार हो जाते हैं।

ये होली कुछ अलग थी!

कुछ साल पहले स्वास्थ्यगत समस्याओं के चलते होली, दीवाली आदि सारे त्योहार फीके पड़ने लगे थे। फिर बच्चों के साथ सपने भी बड़े होने लगे, लेखन, समकित और बच्चों ने जीवन की जिजीविषा को बनाए रखा।

कई बार यूँ ही बैठे-बैठे मैं सोचती थी कि मैं सबसे अलग सी हूँ, संघर्षों के बीच खुद को तसल्ली देती हुई कहती थी मैं वारासिवनी को अपना ससुराल नहीं घर मानती हूँ और सच कहूँ तो २२ साल में से पिछले १२ साल से मैं कभी ससुराल समझकर रही भी नहीं।

धीरे-धीरे सबको मेरे बेटी जैसे रहने की आदत सी पड़ गई शायद!

बड़ों से बातें, बराबरी वालों से नोकझोंक, बच्चों के साथ बच्ची बनकर मैं अक्सर अपनी पीड़ा भूल जाती हूँ।

कल होली धमाल के समय जब चारो बड़ी मम्मियों ने मेरे विगत दिनों की उपलब्धियों के लिए मेरा स्वागत किया तो मन भर आया।

मोहल्ले के सारे बड़े, सारे बच्चे, देवरानियाँ-जेठानियाँ, देवर-जेठ, सभी बड़े पापा-चाचाजी लोगों के बीच रहकर सबकी शुभकामनाएँ पाना ईश्वर के प्रसाद से कम नहीं था मेरे लिए।

इस साल यश (सीए) रिम्शा खान (डॉ) के साथ अपने डॉक्टरेट पूरा होने पर अपनों के द्वारा बच्चों के साथ सम्मानित होना बेहद सुखद था।

इस खूबसूरत आयोजन के लिए आभार विनय भैय्या, पारुल, दिव्य और पूरे नेहरु चौक के परिवारों का।

इस अपनेपन के रंग से हम सब ऐसे ही सराबोर रहें ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ।

प्रीति समकित सुराना
संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति

आशा अमित नशीने

सत्ता दे दो नारी को तुम, सब कुछ यदि अच्छा करना है,
व्यर्थ दिवस का स्वांग तुम्हारा, भाषण से क्या मन भरना है।

नर, नारायण, जग झुकता है, करें वंदना नित त्रिपुरारी।
घर से रण तक कब कुछ छूटा, नारी रही सभी पर भारी।
मधुर भाव से सौदा करती, बिना मोल के करे चाकरी
जननी, भगिनी और सुकन्या, रिश्तों में भरती किलकारी।

नारी स्वयं शक्ति पहचाने उसको रंच न अब डरना है,
व्यर्थ दिवस का स्वांग तुम्हारा भाषण से क्या मन भरना है।

पत्थर को यह मोम बना दे, नेह मान की है अधिकारी।
भोर निशा में फर्क न करती, खुशियाँ हैं सब अपनी वारी।
दर्द देख जिसको मुस्का दे, दर्पण है यह बनती प्रभु का-
घायल पंखों से उड़ लेती, डरती है इससे लाचारी।

कसम उठाओ मिलकर सब ये, हमको दुख अपने हरना है,
व्यर्थ दिवस का स्वांग तुम्हारा भाषण से क्या मन भरना है।

खुद को कतरा कतरा बाँटे, कभी न माँगें हिस्सेदारी।
रानी, दासी जो भी कह दो, पुरुषों की रहती आभारी।
सीता मीरा और अहिल्या, त्याग समर्पण प्रेम दे गईं-
इंदिरा, रानी औ कल्पना, संघर्षों से कभी न हारी।

जो जग में भयभीत हो गया उसको तो निश्चित मरना है,
व्यर्थ दिवस का स्वांग तुम्हारा भाषण से क्या मन भरना है।

मरु में भी जो पुष्प खिला दे, ममता की है ये अवतारी।
हर पल अपनी इच्छा मारे, समझौतों की करे सवारी।
विनय करे ये 'आशा' मन से, भोग न समझें इस अमृत को-
वेद ग्रंथ आयत में बसती, अद्भुत शक्ति स्वरूपा नारी।

अन्यायी जो अत्याचारी उसका कब सम्भव तरना है,
व्यर्थ दिवस का स्वांग तुम्हारा भाषण से क्या मन भरना है।

राजीव रंजन शुक्ल

आओ चलो होली मनाए

आओ चलो होली मनाए
फाल्गुन माह की पुर्णिमा को
आओ चलो होली मनाए
घृणा-द्वेष, वैमनष्य अहंकार और घृणा
का होलिका जलाय
और प्रहलाद बन जब हम आए
आओ चलो होली मनाए
मानवता का रंग लगाय
समाज मे समरसता का रंग बढ़ाए
भेदभाव को मिटाकर
प्रेमरंग में सबको डुबाकर
सबके मन का जहर बुझाकर
मानवता का अलख जगाय
आओ गीत फाग के गाएं
आओ चलो होली मनाए
आओ चलो होली मनाए
गीत प्रेम के गाए हर नर नारी
सदभाव संदेह पर हो भारी
नहीं बचे कोई भ्रष्टाचारी
भयभीत रहे हमेशा दुराचारी
आओ चलो होली मनाए
नंगे मानव के तन को
दुखी, पीड़ित, हर जन को
हर भयभीत महिला के मन को
सुख, संपन्नता और निडरता का
रंग भर आयें
कष्टों की होलिका जलाय
आओ चलो होली मनाए
रावण, कंसी सोच की
अपने-अपने दंभ की
चलो होलिका जलाए
आओ चलो होली मनाए
पतझड़ बिन तरुवर के कहा रहे
चैत्र, फागुन हमारा बना रहे
पेड़-पौधों से धरती भरा रहे
बसंती हवा बहता रहे
चलो एक पौधा लगाए
प्रकृति मे फिर रंग भर आए
बाग बगिया, वन, उपवन
रंग गुलाल हमे उपलब्ध कराय
पेड़, पौधों की होलिका नहीं जलाय
आओ चलो होली मनाए
आओ चलो होली मनाए
शांति और हर्ष हो विश्व मे
प्रेम, सदभाव हो हर दिल मे
भारत शिखर पर हो हर क्षेत्र मे
हम सभी यही मनाय
आओ चलो होली मनाए
सतरंगी सपना सबका हो पूरा
पेट भूख से न रहे किसी का अधूरा
कोई भूखा न रह पाय
मिलजुल कर उल्लास मनाएं
रंगों का यह पर्व मनाएं
आओ चलो होली मनाए
आओ चलो होली मनाए

उमा शंकर तिवारी

खूब लगाओ रंग साथियों
खूब छको तुम भंग
शक्ल बना लो बंदर जैसी
बीबी हो जाए दंग
कबीरा सा रा रा रा
कबीरा सा रा रा रा

खाओ गुझिया और मिठाई
बांटो सबको प्यार
दुश्मन को भी गले लगाओ
होली का त्योहार
कबीरा सा रा रा रा
कबीरा सा रा रा रा

सोनिया, मोदी साथ में गायें
मधुर मिलन के गीत
बुआ, भतीजा खेलें होली
भई प्रेम की जीत
कबीरा सा रा रा रा
कबीरा सा रा रा रा

राधा रानी भई दीवानी
भागे माखन चोर
मिले जो कान्हा रंग लगाऊं
मन में नाचे मोर
कबीरा सा रा रा रा
कबीरा सा रा रा रा

मन हर्षाये, मन लहराये
देख देख महबूबा
मिले तो उसको रंग लगाऊं
इसी ख्याल में डूबा
कबीरा सा रा रा रा
कबीरा सा रा रा रा

प्यार के रंग में सब रंगे हों
ऐसी हो अब होली
रणवे सारे ब्याह रचाएं
गोरी की उठे डोली
कबीरा सा रा रा रा
कबीरा सा रा रा रा

डॉ. अनिल भतपहरी

एक प्याली चाय की कीमत

तुम क्या जानो बाबु, एक प्याली चाय की कीमत?

फिल्मी डायलाग नुमा बोलती वे मुस्कराती गर्मागरम चाय की ट्रे लेकर सामने हाजिर हुई।

जबकि पहले से कहे जा चुके थे कि चाय नहीं पीते इनकी जरुरत नहीं ,पर वे मानेंगी तब? क्योंकि उनकी हाथों की बनी चाय की यशगान का वृतांत साथ आये मित्र के श्रीमुख से अब तक खत्म नहीं हुए हैं,तब तक वह प्रकट हो गई ।

बहरहाल चाय वाकिय में लाजवाब और अलग तरह के फ्लेवर युक्त हैं। सुड़कते कहां- 'शुक्रियाँ , नाहक आप परेशान हुई। ऐसा लग रहा है कि आप फिल्मों की बड़ी शौकिन हैं?'

'हां, पर मुआ अब हमारी च्वाइस की बनती कहां हैं?'

बनने लगी हैं बल्कि अब तो पहले से अधिक स्वभाविक व यथार्थवादी सिनेमा का दौर हैं।

पर जो माधुर्य, सुन्दर दृश्यवलियां और गरिमामय वस्त्राभूषण थे वे नजर नहीं आते?

कल्पनाशीलता और कला के लिए कला जैसी दौर खत्म सा होने लगा हैं। और फैमिली न होने अब फैमिली ड्रामा खत्म हुआ मानो।

वे लगभग झेपती सी पर दृढ़ता से कहीं -नहीं,ऐसा बिल्कुल नहीं, फैमिली कभी खत्म नहीं होगा। जब तक लोग हैं परिवार रहेगा सिनेमा नाटक सदृश्य एकल पात्रिय नही हो सकता, होगा तो वह चलेगी नहीं ।

अच्छा! इतनी गहरी समझ और अपट्रेक्टीव लूक के बावजूद आप कभी इस लाईन में जाने की नहीं सोची? सहसा बातचीत में भीतर से प्रश्न अनुगूंजित हुई।

-हां मैने थियेटर की, एक दो सिरियल्स और २ सिनेमा भी। पर वे रिलिज नहीं हो सकी, फिर ये ब्याह लाए और खूंटे से बांध दी गी।

ठंसी सांसे लेते.. सच कहें तो हम भारतीय नारियाँ मैहर-नैहर वालों के लिए गाय ही तो हैं, कैसे शेरनी हो जाती? दोनों कूल की लाज पल्ले में पंडित जी अग्नि के साक्ष्य में बांध दिए है... वह छूट पाना सरल नहीं।

और ठठाकर हंस पड़ी।

जैसा सुना बढ़कर निकली आप.. आपकी ये ताजी उपन्यास आपबीति हैं कि जगबीति... मुझे इनके आधार पर स्क्रिप्ट लिखने हैं सो आना हुआ।

यह जानकर क्या करोगे... जगबीति में ही आपबीति समाहित हैं।

साथ आए मियां, चाय और बिस्कुट के संग मस्त घर की अस्त-व्यस्त पर ही व्यस्त हैं।

खूंटे से बंधन तोड़ प्रायः हरही गाय भागती हैं। और जहाँ-तहाँ खप-खुप जाती हैं! पर आजकल बांझ कह खूंटे से मुक्त यदा-कदा ही हो पाती है। कुछ तो अपने ऊपर शौतन, तो कुछ गोद ले लेते है या आजकल सेरोगोसी-टेस्ट ट्युब जैसे तकनीक से बंधी जीवन निर्वाह करती हैं।

वे विलक्षण हैं, जो बंधन मुक्त हैं और लड़ रही हैं उत्पीड़ित वनिताओं के वास्ते ।

पर कुलक्षणी कह निर्वासित इस प्रख्यात लेखिका की कहानी पर फिल्म बनाने उनसे मिलने निर्माता के संग आए स्क्रीप्ट राईटर जो कभी चाय नहीं पीते, आज उनके अंदर पता नहीं क्यों? मिठास घुलती ही जा रही हैं। फलस्वरुप वे शुभ्र व सभ्य लगने लगी। हांलाकि यह आधी आबादी की प्रवक्ता हुई जा रही हैं।

अपने प्राकृतिक अधिकार की तिलांजलि इसलिए दे दी कि बुजुर्ग माता-पिता भाईयों-भाभियों द्वारा दुत्कारे न जाकर ससम्मान इनके साथ रहें।

तो दूसरी ओर नैहर वालों की अहं भी फूले-फले! भले वे एक कंठ विषपायी सदृश्य नारी से नर होना दृढ़तापूर्वक स्वीकार ली।

स्क्रिप्टर पर चाय की माधुर्य चढ़ा देख लेखिका को भी यह आभास हुआ... और उन्हें लगने लगा कि 'एक प्याली चाय की कीमत क्या हैं।' इसका रियल अहसास होने लगा ।

तरुणा पुंडीर 'तरुनिल'

बुलंदियों का आसमान

सृष्टि की रचना और सृजन का आधार
नारी का ऋणी है, यह सारा संसार।
फिर भी मांगता प्रमाण है,
पूछता उसका स्थान है।
भूल जाता है 'लक्ष्मीबाई' का बलिदान,
देश की रक्षा हेतु कफन बांध,
निकली 'रजिया सुल्तान'।
त्याग, दया की मूरत 'मदर टेरेसा' ने,
विश्व को लिया अपनी ममता में बांध।
'मलाला' की हिम्मत पर,
हर लड़की खड़ी है सीना तान,
तेजाब या आग में जला न सकोगे,
'लक्ष्मी' के इरादे स्वयं हैं तूफान,
'मैरी कॉम' की तरह विश्व में
दर्ज होगा मेरा भी मकाम,
अंतरिक्ष में भी तिरंगा लहरायेंगे,
'कल्पना चावला' के हौसले हैं परवान।
नही मानूँगी तीन तलाक का फरमान,
दूंगी अब मस्जिदों में मैं भी अजान,
शबरीमाला की सीढ़ियां चढ़,
जीत लूँगी अपने हिस्से का भगवान,
बाधा कोई रोक नहीं पाएगी अब
मेरे हौसलों की उड़ान,
जो जमी से ऊपर उठ,
छू रही है आसमान।
मुड़ कर देखोगे तो पाओगे,
हर क्षेत्र में नारी ने संभाल ली है कमान।
ट्रक, बस, हवाई जहाज
या हो मेट्रो की सुरंगे,
वहाँ देख मुझे, मत होना हैरान,
चुनौतियां नहीं लगती अब व्यवधान,
यह जीवन एक जंग है
जिसे जीतने की मन ने ली है ठान।
अब छूना है
बुलंदियों का आसमान।

श्रीमती देवयानी नायक

आदिम संस्कृति ने करवट ली

भारत के हृदयस्थल मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले को कौन भला नहीं पहचानता? यहाँ के विन्ध्याचल सतपुडा पर्वत श्रृंखलाओं के सुन्दर प्राकृतिक दृश्य, पलाश, महुआ, अंजन, आम्रकुंजों की मंद मंद खूशबु शीतलता लिए पवन यह सब कलाकार, लेखक, सृजनकर्ताओं को असीम शांति प्रदान करती हैं। खनिज विश्लेषकों के लिए ढ़ेरों खनिज संपदा जैसे-मैंगनीज, सोपस्टोन, रॉक फास्फेट, डालामाईट, एस्वेस्टेस, केल साइट आदि का दोहन करने का न्यौता तो कहीं गरीब भोले भाले आदिवासियों का स्वतः ही समाज सेवकों, संस्थाओं, विदेशियों को अपनी ओर आकर्षित 'कुछ करने' की भावना उन्हें यही विराम देकर जैसे-स्व.श्री मामा बालेश्वर दयाल जायसवालजी, चित्रकार मालवीयजी, अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त छायाकार स्व.श्री ए.एल.पारिक को जो आज भी उनके अपने फोटो के कारण अपने बीच पाते हैं। यहाँ तक की यदा कदा दूरदर्शन, समाचार पत्रों में अपना विशेष स्थान 'प्रणय पर्व-भगोरिया' के कारण पुनः स्मरण होता हैं। यहीं कारण है कि केंद्र सरकार ने भी अपनी मदद के बिना नहीं रह पाती हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में झाबुआ जिले की ख्याति के सकारात्मक आयाम बदलते जा रहे है।

आदिवासियों की भोलेपन की छाप हटकर रहवासियों या यहाँ से गुजरते यात्रियों के लिए दहशत पैदा करते है। यहां यह उल्लेखनीय है की आदिवासी जिनकी मुख्य ३ उपजातियां भील, भिलाला वह पटलिया है इनका यह व्यवसाय कतई नहीं है? क्या शहरों में लूट-खसोट, गुंडागर्दी आदि घटनाएं होती है तब अन्य व्यक्ति या शहर को संपूर्ण दोषी ठहराया जाता है? तब अमूनन शहर के सभी व्यक्ति तो बदनाम नहीं होते हैं जिनसे डरा जाए? यहां भी यही सोच लागू होता है कि प्रत्येक आदिवासी इस तरह की घिनौनी हरकतें नहीं करता है।

आज की पीढ़ी साक्षर पीढ़ी है जो अपना आचार विचार मंथन कर कार्य करती है वह आज भी अपनी जमीनी रीति रिवाजों से जुड़ा है चाहे वह डह्क्टर इंजीनियर या बड़ा अधिकारी हो परंतु रहन-सहन शिक्षा के स्तर जरूर बदले हैं । गांव के व्यक्तियों का टेलीफोन /मोबाइल का अच्छी तरह प्रयोग, बातचीत का सुंदर तरीका, रहन सहन, खान पान यह दर्शाता है कि उन्नति के शिखर पर शीघ्र पहुंचे हैं, इसका श्रेय हम मुख्यतः सरकारी तंत्र को देना चाहेंगे, जिन्होंने भ्रष्टाचारी दानों के सामने भी प्रत्येक विभाग की सुविधाओं का क्रियान्वयन कर उन्हें लाभ पहुंचा रहे हैं। अपने बजट में झाबुआ को विशेष महत्व देकर गरीबी, भुखमरी, पलायन, जैसी समस्याओं से निजात दिलाने में भी आज वह प्रयासरत है।

शहर के आसपास रहने वाले आदिवासी अपने आप को 'आदावासी' कहलाता अधिक पसंद करते हैं।उनके लिए इसका आशय वह गांव के आदिवासियों से वे अधिक समझदार है उनका पहनावा, गृह सज्जा वह भाषा का शहरीकरण हो चुका है।

गांव में मांडल, ढोल, बांसुरी, थाली के स्वर लहरियों के साथ महिलाओं का लगातार कई घंटों तक नृत्य के साथ संगीत का स्थान टेपरिकार्डर डेट आदि ने ले लिया है विवाह योग्य लड़के लड़कियां भगोरिया हाट में कम फोटो वह घर देखने के पश्चात ही विवाह के लिए हामी भरते हैं विवाह में दुल्हा प्राचीन समय में लंगोटी पहने नंगे पांव, शरीर गहरी हल्दी में सराबोर हाथ में लंबी तलवार व तीर कमान से सुसज्जित होता था। समय परिवर्तन के साथ साथ लंगोट से धोती या लूंगी/नेकर पर चमड़े का बेल्ट बांध कर मौजों पर सैंडल पहनना अपने आप में एक शान थी अब दूल्हे का नया रूप पेंट शर्ट कोट टाई हाथ में छोटी सी कटार नाम की हल्दी ललाट पर कुमकुम का तिलक चांदी की चेन हाथ में भारी पड़ा साथ में मित्र टेप या रेडियो लटकाए तो समृद्ध परिवार कैमरे का प्रयोग करता हुआ सहजता से ही दिखाई देता है । गरबा, पाली, ढोल, नृत्य के साथ साथ बैंड बाजे का प्रयोग आधुनिक तथाकथित नृत्य प्रदर्शन भी विवाह का एक हिस्सा हो गया है।

पति अपनी पत्नी को हमउम्र लिया अपने से कम उम्र की पसंद करता है जबकि इनका सोच दुल्हन को दूल्हे से बड़ी उम्र की लाना होता था ताकि वह गुरु खेती कार्यों को अच्छी तरह से संपन्न कर सके अतिशयोक्ति नो होगी कि नौकरी पेशा पुरुष की पहली पसंद अब नौकरी पेशा महिला ही है ताकि वे जिंदगी की दौड़ में अपनी निरंतर अपनी निरंतरता बनाए रख कर उन सभी आधुनिक भौतिक सुखों का अपने परिवार के साथ उपभोग कर सकें। साक्षरता कि दौड़ के साथ स्वांत सुखाय की दौड़ में भी वह शामिल है।

अब आया रहन-सहन का सवाल! वर्तमान परिपेक्ष्य में अपने आपको आदिवासी बड़े नाज के साथ आधुनिक कह रहा है परंतु पलट कर जा रहा है बहुत सुंदर मनोरम वातावरण की ओर जहां गांव की खुशबू, बांसुरी की धुन, ऊंट गाड़ी, घोड़ा गाड़ी, बैलगाड़ी की ओर तो, स्वाद में दाल पानिया, दाल बाफले लड्डू, मक्का की रोटी सरसो दा साग हो। मन को सुकून देने हेतु खुशी से गांव की गोरी बने घाघरा चोली ओढ़नी ओढ़े तो पुरुष घुटनों तक धोती ज्वेलरी पहने अपना फोटो अवश्य खिंचवाते हैं खाट पर आराम लालटेन में भोजन आजकल का आम प्रचलन हो गया है जिसे हम नोटों की गड्डी देकर बुलाते हैं दूसरी और ऐसे वास्तविक वातावरण में जाकर उनके आतिथ्य सत्कार को अपनी यादों में अमित स्थान देना स्वर्ग सुख से कम नहीं। पूर्वान्ह अतिथि को 'जलपान' पश्चात 'सुरापान' अर्थात् ताड़ के वृक्ष पर पलक झपकते ही चढ़ना एवं मटके से 'चावला डोल' (लौकी का सुखा खोकला तुमडा) गोलाकार भाग) द्वारा ताजी-ताजी ताड़ी का लोटा भरना एवं उसी तेजी से उतारकर अतिथि के समक्ष लोटा नम्रता के साथ देना अपने आप में एक बहुत आदर पूर्वक सत्कार कहलाता था। ताडी का इनके जीवन में चोली दामन का साथ है।जन्म या मृत्यु ताड़ी की धार 'पितृदेव' के नाम से चढ़ती है। घर के सभी इसका प्रसाद ग्रहण करते हैं। यह परंपरा ईश्वर भक्ति से जुड़ी होने के कारण आज भी चल रही है।

पश्चात अतिथि सत्कार में बदलाव आया है मुख्य भोजन उड़द चने की दाल पानिया (मक्के के आटे से बना) का भोजन करवाये बगैर आपको जाने नहीं देते हैं। अतिथि के शौक के आधार पर ताड़ी अथवा चाय को पेश कर अपने आप को गौरान्वित करना उनके चेहरे पर स्पष्ट झलकता है ।

रहन सहन के मामले में आदिवासियों ने अपने वस्त्र सामाजिक कार्यों के लिए सीमित किए हैं नन्ही-नन्ही बालाएं घाघरा कुर्ती से फ्रॉक, किशोरी और महिलाएं घागरा, पट्टेदार

घागरा, पोलका, छिंट की ओढनी से अधोवस्त्र सलवार सूट, साड़ी ,घेरदार घाघरा चोली, चुनरी या शॉल में और आजकल की आधुनिक शिक्षित लड़कियां जींस टीशर्ट मंध पहनकर अपनी सुंदरता को लिपस्टिक, बिंदी, आइब्रो से आकर्षित करती है। वह ब्यूटी पार्लर का मतलब समझती है और ब्यूटी पार्लर में जाती है अधिकतर कथीर के गहनो में गले की तागली, बोर, लोडीया, गलसन, तोरण, हार, अंगूठी उंगली बोर मुंदरी सांकलिया, कान में पहनने वाली कटोरिया, हथेलाकडी, सोकल, गोल नारियल की कासली, पाटलियाँ, कमर का करौंदा, पैर का कडेला, अँगुठीयाँ, बिछीया चांदी के नाजुक गहनों, जैसे- चाँदी का सेट, चूड़ियां, बिछिया, पायजेब, टीका, कंदोरा, अंगूठियां तो समृद्ध परिवार में सोने की चेन, अंगूठी, टॉप्स, लटकन, झुमकी, चूडियों में स्थान मिला है। किंतु शादी में कथीर व चाँदी के प्रचलित गहने (किलो में पहनना), लेनदेन का ही प्रचलन औपचारिकता पूरी करता है।

पुरुष घुटने तक लपेटी धोती, कुर्ते, मोजे, सैंडल से पेंट, शर्ट, बेल्ट, स्पोर्ट्स शूज, चमड़े के जूते, चप्पल, आंखों पर काला चश्मा रुमाल/कथीर के कड़े, हाथ की भुरकियों का स्थान चांदी की चेन, घडी, चांदी के मोटे कडे ने ले लिया है। मोटरसाइकिल पर सवार शिक्षित युवा पुरुष ब्यूटी पार्लर का प्रयोग करते हुए देखे जा सकते हैं।

छोटे से लकड़ी या खपच्ची से बने दरवाजे की झोपड़ियों का स्थान टीन शेड वाले कच्चे मकानों ने लकड़ी लोहे के दरवाजों के साथ ले लिया है इनमें से कुछ के सर्वसुविधायुक्त मकान देखकर भी बहुत आनंद होता है।

स्वास्थ्य लाभ हेतु बड़वा भोपा कम अस्पताल अधिक जाना अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।टीकाकरण में सहयोग करना व साफ-सफाई आदि में जागृति देखी जा सकती है। जहां पर जापा अर्थात डिलीवरी के वक्त पति का हस्तस्पर्श गर्भ को करवा कर घर के महिला पुरुष से डिलीवरी करवाने का कार्य चिकित्सालय को सौंपने से झाबुआ जिले की बाल मृत्यु दर, गर्भवती महिला मृत्यु दर, गर्भवती महिला मृत्यु में कमी हुई है। इसका श्रेय शासकीय समस्त कर्मचारियों, समाजसेवियों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को जाता है जिनकी योजनाओं से गर्भवती महिला को ३ वर्ष तक के बच्चों को पौष्टिक आहार दिया जाता है।

खेतिहर आदिवासी सिंचाई जल पर्यावरण खेती कार्यों में आधुनिक मशीनों के प्रयोग करने लगे हैं महिलाएं हैंडपंप सुधारना, लघु उद्योग जैसे मोतियों के गहने बनाना बांस की टोकरी सूपडी, झाड़ू, सजावटी वस्तुएं बनाना, सिलाई कार्य अल्पबचत द्वारा 'बयरा नी कुलडी' आदि के माध्यम से समूह बनाकर सैनिटरी नैपकिन, मूंगफली की चिक्की, तिल्ली की चिक्की, अगरबत्ती, बिस्कीट्स आदि बनाने में लग गई। जिसे झाबुआ जिले में रह चुके कलेक्टर श्री मनोज श्रीवास्तव जी ने साकार किया था।योजना से लाभ लेकर महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही है। प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के पंचायती राज के सपने को साकार करने हेतु पंचायती राज का प्रथम दायित्व मध्य प्रदेश पर सौंपा। इसके चलते गांव में सड़क,बिजली, पानी स्टॉपडेम, हेण्डपम्प, विद्यालय, प्रौढ शाला भवन, अस्पताल भवन, आदि का अधिकतर प्रत्येक गांव में पाना अपने आप में उपलब्धि है। आदिवासियों का तेजी से बदलते परिवेश के बावजूद अपनी संस्कृति, कला, प्रकृति, अपनी मासूमियत से आज भी जुड़े रहना सुखद बंद पड़ा है वह सच्चे प्रकृति पुरुष का लाने के अधिकारी है।

स्त्री

स्त्री एक कविता है
छंद बद्ध तो
कभी छंद विहीन
अपने ही लय में चलती
जहां भी होती
अपने एहसासों के शब्दों में
संदली रंगभर
बिखेर देती
अक्षर अक्षर में।

स्त्री एक दर्पण है
जो स्नेह रूपी
चांदी की परत
जीवन के कांच पर चढ़ा
पैदा करती है
प्रतिबिम्ब नेह का
जो भर देता है
प्रकाश उसके आँचल में।

स्त्री एक वीणा है
जिस में छुपा है संगीत
जीवन का,
जिसकी तारें
न कसी न ढीली
एक व्यवस्था में
संतुलित हो
पैदा करती हैं
एक गीत
अलौकिक सुरों का
झंकृत होता है जिसमें
सृष्टि का नाद और
झूमता है कण कण।

स्त्री एक नदी है
जो बहती है
अपनी ताल में
मुस्कुराती इतराती
प्यास बुझाती
सुखी धरा की,
फैला कर अपना दामन
समा जाती है सागर में।

स्त्री एक महाकाव्य है
जिसका शब्द शब्द
श्रद्धा से भरा
विशालता और
गहनता लिए हुए
जो माँ बहन बेटी पत्नी
सभी अलंकारों से
मिलता है सजा हुआ।

स्त्री ईश्वर की सुंदर कृति
सृष्टि रचयिता की
अलौकिक कहानी
मौन की वाणी
कालजयी
जीवनदायिनी
कालजयी
जीवनदायिनी।

रजनी शर्मा

शिक्षा तेरी लाचारी

शिक्षा तेरी लाचारी देख
उजड़ रही फुलवारी देख
कल जो शिक्षक गुरुजी थे
आज बना कर्मचारी देख

ज्ञान ज्योति जलाने वाला
सबको राह दिखाने वाला
सबके आज निशाने पर है
बुराइयों से लड़ जाने वाला
मूल काम तो पीछे छूटा
है किसकी जिम्मेदारी देख

सुरेन्द्र सागर

खाता खोलना आधार बनाना
घूम-घूम कर वोट बनाना
खाना देना दूध पिलाना
किताबें लाना वर्दी लाना
अगर पढ़ाना छूट गया तो
भड़क उठे अधिकारी देख

रोज नए फरमान है जारी
तंग करते सब बारी-बारी
किसी काम की सुध नहीं
लीपा पोती सब सरकारी
गली से कागज चुग लाना है
आदेश हुआ क्या जारी देख।

अमित अग्रवाल 'मीत'

नारी ही नारी की दुश्मन

छोटी थी तो दादी माँ ने, पढ़ने से रोका उसको!
घर के सारे काम काज में, अम्मा ने झोका उसको!!

बड़ी हुयी तो मोहल्ले की, चाची ताना देने लगी!
कब तक घर पे बोझ रहेगी, ताई उसकी कहने लगी!!

आसपास की महिलाएं भी, जम कर चुगली करती हैं!
लाज शरम को छोड़ के देखो, हंसी ठिठोली करती है!!

ब्याह हुआ तो सासु माँ के, जुल्मों का शिकार हुयी!
ननंद की खातिर बैठे बिठाए, मुफ्त की सेवादार हुयी!!

सास ननंद सब सही मिले तो, बहू ऐंठने लगती है!
छोटी छोटी बातों पर, पीहर में बैठने लगती है!!

दहेज के झूठे प्रकरण में, सास ससुर को फंसाती है!
घर की सारी जायदाद पर, अपना नाम लिखाती है!!

सास ससुर गर राजी न हो, पति को फिर भड़काती है!
माँ बेटे को एक दूजे से, दूर वही करवाती है!!

कहने को तो नारी जाति, भावनाओं का सागर है!
छल कपट द्वेष और ईर्ष्या, सारे जग में उजागर है!!

हिंद देश में हर एक नारी, देवी रुप कहाती है!
नारी ही नारी की दुश्मन, फिर कैसे बन जाती है!!

मुकेश मनमौजी

नारी शक्ति महान

हुई आज ही क्यों ये पहचान
जिसे देखो वहीं
नारी के गुण गा रहा
नई नई रचनाओं से
पटल खूब सजा रहा
क्या ये दिखावा मात्र आज के लिये,
क्योंकि आज महिला दिवस
कल से फिर महिला पुरुष के आगे विवश
चारदीवारी में बंद
बस घर चलाने की जिम्मेदारी
समय पर ये, समय पर वो
समय से चुके तो सुने फटकार हमारी,
दाल में नमक कम तो फेंको थाली
चाय बने पतली तो दे दो गाली
दिन रात बस करें सेवा
मिलें नही कोई इसको मेवा
निसंतान हो तो कह दो बांझ
बेटी जन्में तो उपेक्षा सुबह सांझ
बेटे को भी थी रह भी पाले
मिलते नहीं बुढापे में इसे
बिन माँगे दो निवाले
नारी, नारी कह आज सब
कह रहें नारी महान
सच में करो यदि रोज नारी का
गुण गान, दो उसे उसकी पहचान
तो जीवन सबका सार्थक हो जाइये
नारी है ये भगवान भी है
इसी नारी की कोख के जाये
नारी से ही धन्य सदा ये धरा धाम
नारी शक्ति को करो सदा प्रणाम

प्रदीप पुष्पेन्द्र

गोरी आकर हमसे बोली
आओ हम तुम खेले होली

रंगों से त्यौहार भरा है
नीला पीला लाल हरा है
नहीं संग है कोई टोली
फिर भी मैं खेलूँगी होली

रंग डालो चुनरिया चोली
आओ हम तुम खेले होली।

प्यार भरा उन्माद रंगीला
अधरों पर है गीत रसीला
अंखिया भी मेरी कजरारी
मारुँगी इनसे पिचकारी

मत समझो तुम मुझको भोली
आओ हम तुम खेलें होली

छोड़ो बातें ये बचकानी
लगती हो कुछ कुछ दीवानी
कर डाली पहले मनमानी
अब करती हो आनाकानी

मलूँ गाल पर कैसे रोली
आओ हम तुम खेलें होली

कुँवर उदय

खुद की ही करनी ड़रा रही है,
क्या? जीना छुप छुप कर,
सुध करिए क्यों जनम बिताना,
खुद को ही गुप चुप कर।

अपनी करनी गौर कीजिए,
करनी ही फल बोती
दूजे पर इल्जाम लगाकर,
बात करो ना थोथी।

बेध्यानी में फिरता अंधा,
जीवन सर पर लादे,
जीवन रथ है, करो सवारी,
कोई उसे बतादे।

करे आदमी खुद ही पैदा
ज़ज्बे खुद के भीतर,
ज़ज्बे ही बेसुध हो जाए,
खोटा खोटा कर कर।

ज़ज्बातों का सागर जीवन,
लहर लहर ज़ज्बों की,
डूबे उभरे लहर लहर हर,
ज्यूं करनी कर्मों की।

हक से हटना पड़े,
करे जो गलत अकेलेपन में,
दुखी हमेशा रहे आदमी,
रहे दोगलेपन में।

नील मणि पाण्डेय

मैं ढूँढ़ रहा हूँ फिर जीवन,
राहें कोई बतला दे तो।
पतझड़ के बाद बहारें फिर,
जीवन में कोई ला दे तो।

जड़ है जमीन में भीतर तक,
हरियाली कोई ला दे तो।
ठूँठ बन चुकी डाली पर,
कोई फिर फूल खिला दे तो।

मैं हार रहा अब जीवन से,
तकरार कोई निपटा दे तो।
बुझती बाती में घी भरकर,
इस लौ को फिर भड़का दे तो।

सतयुग का प्राणी कलियुग में,
युग बन्धन तोड़के ला दे तो।
भारतमाता में सामर्थ्य बहुत,
सुत सुता कोई प्रकटा दे तो।

नवजीवन की फिर चाह उठे,
कोई सूरत दिखला दे तो।
हे! धनुषवाण, बंशीवाले,
फिर चमत्कार वह ला दे तो।

माँ की ममता (एक संस्मरण)

क्षत्रपाल देवासी

रात्रि के ग्यारह बज रहे थे।हमारी बस जोधपुर से पोकरण की ओर रवाना हो चुकी थी।बस मे मेरे और ड्राइवर के अलावा और कोई सवारी नही थी।

मै और ड्राइवर पास पास बैठे हुए थे। ड्राइवर साहब को गप्पे मारने की आदत थी। पर मुझे बहुत डर लग रहा था कि इनकी बातो की फुर्सत का लाभ उठाकर बस को कही आसपास की खाईयो की गहराई नापने का अवसर न मिल जाए।

मैने उन्हे सांत्वना दी कि बस किसी तरह गंतव्य तक पहुँच जाए, फिर पूरी रात बैठकर बाते करेंगे।

तभी सामने सर से पाँव तक काले लिबास मे अटी एक औरत दिखी, जो हाथ हिलाकर बस रोकने का इशारा कर रही थी।

बस रूकी, वह चढ गयी। मैने उससे किराया लिया और टिकिट काटकर दिया।

टिकिट लेकर वह काफी पीछे वाली सीट पर बैठ गयी।

उसका डर जायज था। इतनी रात को निर्जन बस मे दो आदमियो पर विश्वास करना भी नही चाहिए।

पर हमे संदेह था। संदेह का पहला कारण तो यह कि वह इतनी रात को सडक पर अकेली क्या कर रही थी।

दूसरा उसने काला बुर्का पहन रखा था। और वह अपने पल्लू मे कुछ चीज छिपा रही थी।

हमे उस चीज के चाकू या पिस्तौल होने का सुबहा था।

हमे ये भी विश्वास हो गया था कि यह औरत का लिबास पहने जरूर कोई चोर या हत्यारा है।

इसी उधेडबुन मे उसका स्टहप आ गया। हमने तुरंत बस रोकी और उसे उतरने के लिए कहा। लेकिन जैसे ही वह खिडकी के पास आई,उ सके पल्लू की गांठ छूट गई और उसमे से दो केले नीचे गिर गए।

ये वही केले थे, जिन्हे पल्लू की आड से देखकर हमारे मन ने पिस्तौल या चाकू होने का फितूर पैदा कर दिया था।

उसने केले उठाने के लिए घूंघट उठाया।

और ये क्या!

वह सचमुच औरत थी।

अब मेरी उत्सुकता का पार नही रहा। मैने पूछ लिया-माँजी इतनी रात गए आप सडक पर क्या कर रही थी।

वह बोली-मै अपने बेटे को केले खिलाने आयी थी।उसे केले बहुत पसंद है।

दरअसल, दो महिने पहले उसी जगह दुर्घटना मे उसके बेटे की मौत हो गयी थी और वह बेचारी बेटे के गम मे विक्षिप्त हो गयी थी।

ड्राइवर ने मजाक के लहजे मे कहा-आपके बेटे ने केले खाए कि नही।

वह अत्यंत करुण स्वर मे बोली-आज मेरा बेटा सो गया होगा। तभी तो मेरे बार-बार बुलाने पर भी नही आया।

उसे कल आकर खिला दूंगी।

मैं और कोई

मनीष गौतम

मैं- मेरा घर, बेजोड़,
कोई- जीर्ण हुआ तो,
मैं- बहुत सशक्त है। मेरा शरीर, मनमोहक,
कोई- रुग्ण हुआ तो,
मैं- नित्य व्यायामी है। मेरी वाणी, मधुर,
कोई- कटु हुई तो,
मैं- रायशुमारी करवा लो। मेरे कर्म, सफल,
कोई- असफल तो,
मैं- कभी हुआ नहीं। मेरा ज्ञान, आत्मस्वाभिमान,
कोई- अभिमान निकला तो,
मैं- लोग शंकाग्रस्त हैं। मेरे भाव, निर्मल,
कोई- कलुषित हुए तो,
मैं- परहित में अग्रणी। मेरी बुद्धि, कुशाग्र,
कोई- पथभ्रष्ट हुई तो,
मैं- मेरी कीर्ति देखो। मेरे विचार, सदाबहार,
कोई- विनाशक हुए तो,
मैं- अब तो सोचना पड़ेगा,
कोई- कौन सोचेगा... वो, जो अभी तक,
मेरे-मेरा-मेरी था,
मैं- नहीं नहीं...मैं,
कोई- मैं कौन,
कोई- मैं कौन..
कोई- अरे मैं कौन... मौन !!

होली

पवन कुमार 'पवन'

गिरा दो नफरत की दीवार होली ऐसे खेलो जी
ऐसे खेलो जी होली तुम ऐसे खेलो जी
गिरा दो नफरत की दीवार होली ऐसे खेलो जी
दिलों में सबके भर दो प्यार होली ऐसे खेलो जी
ऐसे खेलो जी होली तुम ऐसे खेलो जी
गिरा दो नफरत की दीवार होली ऐसे खेलो जी

जले किसी का कुछ भी होता भारत का नुकसान
यह इतनी सी बात नहीं क्यों समझ सके नादान
फिर ना होवे नरसंहार होली ऐसे खेलो जी
किसकी वजह से वे बेचारे जो बेमौत मरे हैं
भारत मां की छाती में अब तक ये घाव हरे हैं
भारतमां का हो उपचार होली ऐसे खेलो जी

उत्तेजक माहौल बनाकर जहर दिलों में भरते
दंगों में क्यों ये समाज के ठेकेदार ना मरते
बदलो ऐसे ठेकेदार होली ऐसे खेलो जी
जाति भाषा धरम सभी से देश बड़ा होता है
श्सबके मिलजुल कर बढ़ने से देश खड़ा होता हैश्
करदो यही भाव संचार होली ऐसे खेलो जी

है अफसोस कि ऐसे भी गद्दार देश में रहते
भारत के टुकड़े करने की बात यहाँ जो कहते
अब ना बचे कोई गद्दार होली ऐसे खेलो जी
ऐसे खेलो जी होली तुम ऐसे खेलो जी
गिरा दो नफरत की दीवार होली ऐसे खेलो जी ....

आशुतोष राना

हिंदी विरुद्ध अंग्रेजी - मूल्य विरुद्ध कीमत

मेरे एक स्नेही मित्र हैं वे एक सफल और सक्षम व्यक्ति हैं। हैं हिंदी भाषी, लेकिन उनके मुँह से अंग्रेजी ऐसे पटपटाते हुए निकलती है जैसे मशीनगन से गोलियाँ। वे अंग्रेजी की मारक क्षमता और अंग्रेजी से उत्पन्न होने वाले चमत्कारिक प्रभाव से भलीभाँति परिचित हैं, उनका कहना है कि महाभारत काल में जिस अस्त्र को मोहनास्त्र कहा जाता था जिसकी मार से रणभूमि में खड़े हुए योद्धा मोहित हो जाते थे वही मोहनास्त्र वर्तमान भारत में अब अंग्रेजी के नाम जाना जाता है। अंग्रेजी की चोट से समाज को सुन्न भी किया जा सकता है और टुन्न भी किया जा सकता है। उनका कहना है कि अंग्रेजी की ओट में खड़े हुए व्यक्ति की खोट भी छिप जाती है और वो नोट भी बहुत छाप लेता है।

कल वे मुझसे मिलने आए और बोले- भाई, रामनवमी को तुम्हारी किताब- रामराज्य आ रही है, जितनी तुमने मुझे पढ़कर सुनाई उससे मैं ये कह सकता हूँ कि तुमने सच में उपयोगी, और नए दृष्टिकोणों से युक्त एक रोमांचक उपन्यास लिख दिया है, लेकिन यदि तुम इसे- हिंदी की जगह अंग्रेजी में लिखते तो पहले दिन ही रामराज्य सोल्डआउट हो जाती और तुम सुपर टैलंटेड ऐक्टर होने के साथ-साथ एक ब्रिल्यंट राइटर के रूप में भी स्टेब्लिश हो जाते, अंग्रेजी में बहुत ताकत है भाई।

मैंने कहा- लेकिन हिंदी भी कहीं से कमजोर नही है, वो भी अत्यंत शक्तिशाली है।

वे बोले- बुरा मत मानना, तुम्हारा विषय या लेखन शैली कितनी ही रोचक क्यों ना हो किंतु अपने देश में हिंदी अंग्रेजी से पिछड़ ही जाती है। हिंदी लेखक को वह स्थान नही मिलता जो अंग्रेजी में लिखने वाले को मिलता है। मेरी सलाह है कि तुम पहले रामराज्य को इंग्लिश में रिलीज करो उसके बाद इसे हिंदी में लेकर आओ।

मैंने कहा- ये नही हो सकता। मैंने रामराज्य हिंदी में लिखी है क्योंकि हिंदी मेरे सपनों की भाषा है, मेरे अपनों की भाषा है, मेरे राष्ट्र कि भाषा है और मेरे व्यवसाय की भाषा है। वो पहले हिंदी में ही आएगी फिर अंग्रेजी सहित भारत में बोली जाने वाली अन्य प्रांतीय भाषाओं में।

मेरी बात काटते हुए वे बीच में बोले- तो ठीक है, तुम इसे हिंदी में ही लेकर आओ

लेकिन अपने प्रकाशक से कहो की वो किताब की कीमत कम करे।

मैंने पूछा- इससे क्या होगा ?

वे बोले- अपने यहाँ हिंदी पढ़ने, समझने, बोलने वाले अंग्रेजी किताब पर तो पैसा खर्च कर देते हैं लेकिन हिंदी किताब पर नही। यही कारण है कि अंग्रेजी में लिखे गए सामान्य से उपन्यास भी बेस्ट सेलर हो जाते हैं और हिंदी का अच्छा साहित्य भी बुक शह्ल्फ्स में घूल खाता रहता है। तुम इस गलतफहमी में मत रहना कि हिंदी भाषा में लिखी गयी किताब अच्छी होगी तो अच्छी बिकेगी, बल्कि किताब सस्ती होगी तो ही इसके अच्छी बिकने की सम्भावना है।

मैंने कहा- कमाल बात करते हो ? अपने ही देश में अपनी ही भाषा दोयम दर्जे की कैसे हो सकती है ? हिंदी पढ़ने, लिखने, बोलने, समझने वाले इतने दीन हीन, गरीब या अक्षम तो हैं नही जो वे एक किताब ना खरीद सकें ?

उन्होंने कहा- बात पैसे खर्च करने की नही है, स्टैटस की है। हिंदी किताब पर पैसा खर्च करने के बाद भी उनको वो स्टैटस नही मिलता जो अंग्रेजी किताब हाथ में रखने से मिलता है। उन्होंने अपने पक्ष को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए तर्क देने शुरू किए- भाई, हिंदी अखबार या न्यूज चैनल के किसी पत्रकार या सम्पादक को गुणी होने के बाद भी वो पैसा नही मिलता जो अंग्रेजी वाले को मिलता है। हिंदी में जिरह करने वाला वकील भले ही केस जीत जाए किंतु अंग्रेजी दाँ वकील की तुलना में उसे वो रिस्पेक्ट, पह्प्युलैरिटी या फीस नही मिलती। तुम देख लो, हिंदी मीडीयम स्कूल्स की तुलना में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल्स की फीस ज्यादा होती है। अरे यार तुम किसी और को क्यों देखते हो, खुद को देख लो ना, तुम कमाल के ऐक्टर हो, जितनी प्रतिभा तुम्हारे अंदर है उसकी तुलना में तुम्हें वो पैसा नही मिलता जो अंग्रेजी बोलने वाले ऐक्टर को मिलता है। ऐसे कितने सारे ऐक्टर हैं जो तुम्हारे साथ के थे या तुम्हारे बाद इंडस्ट्री में आए वे सब अंग्रेजी बोलकर तुमसे ज़्यादा कमाकर आगे बढ़ गए! अगर तुमने मेरी बात मानकर अंग्रेजी बोली होती तो आज थई-थई कर रहे होते। हिंदी तुम्हारे मन की भाषा हो सकती है, लेकिन अंग्रेजी धन की भाषा है। तुम कितने गुणी या टैलंटेड हो इसका फैसला इस बात से होता है कि तुम्हारे पास कितना पैसा है।

उनकी बात सुनकर मैं ठहाका लगाकर हँस पड़ा क्योंकि मैं ये समझ रहा था कि इस पूरी चर्चा का केंद्र बिंदु धनार्जन ही है, क्योंकि सामान्यतः लोग धन को ही प्रतिभा और सफलता का पर्याय मानते है, मैंने कहा- मित्रवर ऐसा है, मुझे जब जिस चीज की इच्छा होती है वो गुरुकृपा से पूरी हो जाती है, कुछ लोग धन कमाने में माहिर होते हैं तो हम जैसे कुछ लोगों के पास विवेकपूर्वक धन खर्च करने का हुनर होता है। इसलिए आवश्यकताओं की पूर्ति योग्य धन गुरुदेव की कृपा से हमारे पास सदैव बना रहता है, अपनी नजर दौलत है।

उन्होंने कहा- भाई, मैं सिर्फ इतना चाहता हूँ कि तुम्हारी किताब रामराज्य अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचे क्योंकि वो बच्चे, बूढ़े, जवान सभी वर्गों और वर्णों के काम की है। मुझे सिर्फ इस बात की चिंता है कि रामराज्य हिंदी में है, तो कहीं उसकी हाई कीमत के कारण वो मार ना खा जाए ? क्योंकि हिंदी में कही गयी

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

अच्छी, उपयोगी बात भी लोगों को आजकल प्रवचन के जैसी लगती है लेकिन जब उसी बात को अंग्रेजी में कहा जाता है तो लोग उसको मास्टर क्लास कहकर उसकी खँजरी बजाते हुए घूमते हैं।

मैंने चर्चा को विराम देने के उद्देश्य से, विश्वास पूर्वक उनसे कहा-

तुलसी बिरछा बाग के सींचत से कुम्हलायें।
राम भरोसे जो रहें वे पर्वत पर हरियाये।।

मित्रवर, आप या मैं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के लिए रास्ते नही बनाते वे श्रीराम ही हैं जो हमारे-आपके लिए कल्याणकारी रास्तों का निर्माण करते हैं। श्रीराम तो ऐसे स्थानों पर भी सहजता से पहुँच जाते हैं जहां पहुँचना सामान्यतः असम्भव होता है। इसलिए आप निश्चिन्त रहिए, राम के नाम में ही इतनी शक्ति है कि वे पत्थर को भी पानी पर तैरा देते हैं फिर तो ये किताब है जो श्रीराम के चरित उनके जीवन दर्शन से भरी हुई है। किताब महँगी हो सस्ती हो, हिंदी में हो अंग्रेजी में हो कोई फर्क नही पड़ता, क्योंकि संसार जानता है कि श्रीराम का सम्बंध कीमत से नही, जीवन के मूल्यों से हैं और मनुष्य किसी भी कीमत पर मूल्यों को अंगीकार करता है क्योंकि वे जीवन मूल्य ही होते हैं जो हमारे जन्म को सार्थकता प्रदान करते हैं। और सबसे बड़ी बात, जहां पर भी श्रीराम की चर्चा होती है वहाँ पर वायुपुत्र हनुमान जी महाराज स्वयं ही उपस्थित हो जाते हैं जिनके लिए २०० योजन समुद्र लांघना भी सामान्य सी बात है यदि हनुमान जी महाराज को उचित और उपयुक्त लगेगा तो वे अपने प्यारे राम की कथा को सहज ही १२५ करोड़ लोगों तक पहुँचा देंगे। इसलिए आप आनंद करें रामराज्य की कीमत नही उसमें निहित मूल्य ही रामराज्य का मार्ग प्रशस्त करेगा, श्रीराम के रामराज्य को जिस व्यक्ति तक पहुँचना होगा पहुँच जाएगा। क्योंकि ये सिर्फ मेरे ही राम नही हैं, सबके राम हैं.. श्रीराम से सिर्फ मैं ही नही, सभी प्यार करते हैं। मैंने अंग्रेजी के प्रबल पक्षधर अपने मित्र की ओर देखकर कहा- यदि आस्था है तो बंद द्वार में भी रास्ता है।

हर हर महादेव जय श्री सीताराम

-आशुतोष राणा

डेजी बेदी जुनेजा

खुद से खुद का मिलन
साक्षात्कार

ना जाने कब सुबह हो गई पता ही नहीं चला! यूंही रात भर अंधेरे में बैठी रही! क्या हूँ मैं इसी उधेड़ बुन में अपने वजूद को खोजती रही! उड़ना चाहती थी नीले आसमाँ पर छोटी छोटी ख्वाहिशो संग! पर जमी को भी तरसती रही!

उफ्फ... नींद ना जाने दूर कहीं तारों में खो गई थी!

इस रात ने फिर मुझे मेरे बिखरे वजूद की दास्ताँ सुना दी! ओर मेरे गालों पर बूंदों ने ऐसे लकीरें बना ली थी की शायद वो मुझे झंझोड़ देना चाहती थी की उठो पहचानो खुद को.. इक नई सुबह तुम्हारा इन्तजार कर रही है!

हाथों में कुछ पन्ने थे ओर उन पर लिखी चन्द पंक्तियाँ ना जाने कब मैंने लिखी थी।

क्या हुआ जो कुछ वक्त गुजर गया
क्या हुआ जो बेहद गम दें गया
वक्त का क्या फिर लौट आएगा..
जो तेरे हौसलों में उड़ान बाकी है...

हाँ सच में यें मैं थी जो लफ्जों को मायने दें सकती थी, हाँ था ये हुनर मुझमें जो छिप गया था... इस रात के अंधेरे ने मुझे हल्की सी इक किरण दिखा दी.. मुझे मुझ से हीं साक्षात्कार करवा दिया! कहीं नजर नहीं आती थी मैं खुद में मुझे मेरा परिचय दे दिया। आज साक्षात्कार हुआ था खुद से मेरा!

समय की चाल के आगे
नहीं चलती किसी की भी कोई
कहीं कोई निखर जाता है
ओर कहीं टूट कर बिखर जाता है कोई...
मुझे आज मेरा वजूद वापिस मिल गया। खुश थी मैं !

दुर्गा प्रसाद झाला

चाल

हर मोहरे पर चाल है
बड़ी मुश्किल बिसात है,
शतरंज के खिलाड़ी
व्यावहारिक और चालक है,
यहाँ हाँथी घोड़ों की
तिरछी ही चाल है,
कब कौन पियाद
क्या मुखोटा पहने,
समय के गर्द में ही
यह कठिन चाल है,
रियासत सियासत
बड़ी मुश्किल बिसात है,
कौन सा दाँव
किस पियाद पर लगे,
इस सवाल का जवाब
जाने किसके पास है,
रिश्ते नाते और चरित्र
गिरगिट की चाल है,
कौन सा कदम
किस ओर ले जाए
यह तो निमित्त मात्र है।

अर्चना पाठक

देहरी के भीतर

सूरज फैलता है
मिट्टी के घर,
टूटते छप्पर
और खुरदुरे छतों पर
नहीं ढूंढता
संगेमरमर के आँगन
पूस की ठिठुरती ठंड में
अलसुबह चला आता
गाता हुआ प्रभाती,
बरसों पहले
पिता के आँगन में
चला आता था जैसे
फैलता-बिखरता हुआ
बिल्लस के गोले पर
फैलता रहा सूरज
तब से अब तक
लगातार
परावर्तित
लौटतीं हैं
कुछ रश्मियाँ
संगेमरमर के आँगन से
पर कुछ डाल देतीं हैं डेरा
छप्पर की सुराखों से
देहरी के भीतर

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

सोमा आनंद गुप्ता

इक जान हैं हम

दो साया नहीं, इक जान हैं हम,
बरसों की खोई, पहचान हैं हम।
कुछ लम्हें, आए और बीत गए
एहसास बूंद-बूंद कर, रीत गए।

बस यादें मीठी सी, थमी रही,
इन पलकों पर ठहरी नमी रही।
सब मौसम जैसा ही बदल गया
पतझड़ आया और वसंत गया।

मैं उम्मीद की गठरी, साथ लिए,
सूनी राहों पर इक, विश्वास लिए।
अनजान पथिक की हमराही सी
निर्जन राहों पर, नित चलती रही।

इक रोज वो दिन, आ हीं गया,
दो साया जुदा सा, मिल ही गया।
राहें अलग थीं, लेकिन फिर भी,
जिसे मिलना था, वो मिल हीं गया।

दिनेश 'देहाती'

हम बोलेगा तो बोलोगे कि बोलता है

वो भूल कर देश के हालात,
जो धोता नहीं है अपने हाथ,
ढंकता भी नहीं मुख अपना
सुनता नहीं है सबकी बात,

हर नसीहत को तराजू में तौलता है।
हम बोलेगा तो बोलोगे कि बोलता है।

दुश्मन ही है सून सब अपने,
सुनते नहीं गर कहा जो सबने,
जिद करके लायेगा घर बिमारी
बिखर जायेंगे जीवन के सपने।

गुस्से से अपना तो खून खौलता है।
हम बोलेगा तो बोलोगे कि बोलता है।

संभलो सब संकट कि घड़ी है,
सारे संसार पर विपदा बड़ी है,
संयम ही समाधान है इसका
घर में रहो तुम्हे क्या हड़बड़ी है।

ठहर जा वो कोरोना नाग डोलता है।
हम बोलेगा तो बोलोगे कि बोलता है।

यूसुफ साहिल,नोहर

वो लड़की पागल है

कितनी बार समझा चुका हूँ उसे
पता नहीं...क्या जूनुन सवार है?
वो समझती ही नहीं।

पता है उसे
मैं हो चुका हूँ किसी का
फिर भी वो...
मुझसे मुहब्बत करती है।
उसे पता है
इंतजार की घड़िया खत्म हो गई।
फिर वो जाने किस आस में रहती।
वो चेहरे की रौनक
वो आंखों की चमक

वो बातों की धमक
जाने कहाँ खो गई
जब भी मिलती है एक उदासी साथ।

वो बातें करती है
बड़ी संजिदगी के साथ
पर कभी...गिला शिकवा नहीं करती।

मैं पूछता हूँ उससे
अब किस आस में जी रही हो?
तुम भी चुन लो कोई हमसफर।
वो कहती है....
तुम नहीं समझोंगे
मैंने तो मुहब्बत की है।

अब मैं समझ नहीं पा रहा
वो पागल है या मैं पागल था।

रामप्रसाद मीणा लिल्हारे

नवगीत

मात-पिता बच्चों के हित पर,
अपना सबकुछ त्यागते।
बस शादी की देरी बेटे,
अलग रास्ता नापते।

जन्म हुआ तो लड्डू बाटे,
अंतसरू से हर्षाया।
लाया माँग उधारी आटे,
खीर पूड़ी बनवाया।
उसके लिए सहे हर घाटे,
पूर्ण सपने करवाया।
खुद खाकर दुनिया के चाटे,
हरपल उसको बचाया।

ऐसी-तैसी अहसानों की,
डींगे अपनी हाँकते।

अँगुली पकड़ सिखाया चलना,
गिरा तो दिया सहारा।
सिखाने वक्त संगत ढलना,
किया अभ्यास करारा।
दिया सीख नित चोटी चढ़ना,
किया हर मोड़ इशारा।
उसे सिखाया आगे बढ़ना,
न्यून में किया गुजारा।

अधिकारों तक सब ठीक दूर,
कर्तव्यों से भागते।

पकड़ी कलम सिखाया लिखना,
रात-रात न माँ सोई।
उसे सिखाया नित खुश दिखना,
भले माता नित रोई।
बेच उसे जो ना था बिकना,
खुशी उसके पग बोई।
सिखा उसे फूलो-सा खिलना,
सुधी सब अपनी खोई।

संग नवेली पत्नी के मिल,
अलग आलाप रागते।

इंदु पाराशर

मेरा देश

यह देश रहा है सदा खड़ा,
यह देश रहेगा सदा खड़ा।

ईरानी, यूनानी आए,
शक, पहलव और कुषाण हूण।
अरबी, तुर्की और मुगलों ने,
इस पर ढाए हैं जुल्म खूब।

ब्रिटिशों ने भी भारत आकर,
था भारत को बर्बाद किया।
आपस में फूट डाल कर के,
खुद का गुलशन आबाद किया।

लेकिन भारत की संस्कृतियाँ,
पुरखों के गहरे संस्कार।
आस्था, विश्वास, भाईचारा,
इनको कोई ना, सका मार।

नेतृत्व, जब कभी श्रेष्ठ मिला,
भारत ने स्वर्ण- मुकुट पहना।
यह विश्व-गुरु पहले भी था,
फिर से यह अवसर आन खड़ा।

इस दैत्य कोरोना को अब भी,
भारत देगा गहरी शिकस्त।
संयम, साहस, संकल्प-शक्ति,
मिलकर कर देंगे इसे ध्वस्त।

चौदह दिन सूतक के मानें,
स्पर्श ना होवे दूजों का।
स्वच्छता, शुद्धता और सुचिता,
संग ध्यान रखें सब अपनों का।

अपना प्रहरी चौकन्ना है,
हर ओर कर रहा सावधान।
यदि हम अनुशासन को माने,
आपत का होगा समाधान।

यह देश रहेगा सदा खड़ा,
यह देश रहेगा सदा खड़ा।

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

सीमा गर्ग मंजरी

आओ प्रिय..

आओ प्रिय प्यारा खेल रचाये,
शहद रस घोल प्रेम-बेलि बोये!

तुम मैदे की लोई प्रिये,
मैं रसगुल्ला तुम्हारा!
डूबे प्रेम भरी चाशनी में,
मैं हारा, ये तन मन वारा!

आओ प्रिय प्यारा खेल रचाये,
शहद रस घोल प्रेम बेलि बोये!

तुम मीठी गुंजिया सी,
मैं गोल घेवर तुम्हारा!
केवड़ा गुलाब सा महके,
प्रिया ये जीवन मेरा-तेरा!

आओ प्रिय प्यारा खेल रचाये,
शहद रस घोल प्रेम बेलि बोये!

शहद चाशनी रस में डूबे,
भीगे केसर रसमलाई!
मुंह में घुला स्वाद सा मैं,
तुम चमचम भरी मिठाई!

आओ प्रिय प्यारा खेल रचाये,
शहद रस घोल प्रेम बेलि बोये!

तुम बर्फी मेवे वाली,
पिस्ते काजू की कतली!
मन में चाशनी रस घोली,
जैसे गुलाबजामुन काली!

आओ प्रिय प्यारा खेल रचाये,
शहद रस घोल प्रेम बेलि बोये!

तुम लड्डू मनभावन,
मैं बंधा हुआ बूँदी सा!
घुला जायका रस में भीगा,
मकरंदी बालूशाही सा!

आओ प्रिय प्यारा खेल रचाये,
शहद रस घोल प्रेम बेलि बोये!

कुँअर बेचैन

तीन कुण्डलियाँ

कोरोना का वायरस, ऐसा फैला यार
कुछ ही दिन में आ गया, खतरे में संसार
खतरे में संसार, मिली ना कोई दवाई
सुनकर उसके वार, आज दुनिया घबराई
कहें 'कुँअर' कविराय, छोड़िए रोना-धोना
कर लें अगर बचाव, करेगा क्या कोरोना

कोरोना से युद्ध के, हैं ये ही हथियार
साबुन से कर धोइये, करें दूर से प्यार
करें दूर से प्यार, नमस्ते कीजे भाई
छींक और खाँसी पर, दे रूमाल दिखाई
कहें 'कुँअर' कविराय, कभी धीरज मत खोना
अगर करें नित योग, करेगा क्या कोरोना

कोरोना क्यों आएगा, जहाँ न होगी भीड़
बिना काम मत छोड़िये, अपने घर का नीड़
अपने घर का नीड़, मास्क से मुख ढक लीजे
जब पीना हो, साफ-गर्म पानी ही पीजे
कहें 'कुँअर' कविराय, नींद पूरी ही सोना
इतना यदि कर लिया, करेगा क्या कोरोना

शेखर 'अस्तित्व'

अतीत की यादें

है अतीत की यादें केवल,
वर्तमान का भान नहीं है!
तुम्हीं नहीं तो कैसा जीवन?
तन है लेकिन प्राण नहीं है!

शब्द नहीं तो अर्थ कहाँ का?
देह बिना कैसी परछाई?
नींद नहीं तो कैसे सपने?
किरण बिना कैसी अरूणाई?

पुष्प नहीं तो गंध कहाँ की?
लक्ष्य नहीं तो कैसी राहें?
नैन नहीं तो दर्पण कैसा?
तुम्हीं नहीं तो अब क्या चाहें?

मृत्युलोक के महासागर में,
इक बेबस तिनके सा बहना!
आस नहीं! उल्लास नहीं!!
तुम पास नहीं और जीते रहना!

तुम्हीं कहो, ये साँसें लेना!
क्या सचमुच विषपान नहीं है?
तुम्हीं नहीं तो कैसा जीवन?
तन है लेकिन प्राण नहीं है।

भवानी शंकर खत्री

रिश्तों की मृगतृष्णा

मन की यह व्यथा है
कि वह रिश्तों के पीछे
अनवरत भागता है
हम माने या न मानें पर
यह हर किसी को अपना
मानता है
जब वह रिश्ता मुक्कमल होता है
तो खुश भी बहुत होता है
और कोई रिश्ते से दूर होता है
तो दुखी भी बहुत होता है
आप लाख चाह कर भी
उसे समझा नहीं सकते
इसीलिए ही कहा जाता है
मन के हारे हार है
और मन के जीते जीत
और इन रिश्तों की
मृगमरीचिका में मन अनवरत
भागता रहता है
जो जितने पास जाओ
उतने ही दूर होने लगते हैं
सही कहा है किसी ने
ओस के चाटने से
प्यास नहीं बुझती
और रिश्तों की मृगतृष्णा से
रिश्ता नहीं मुक्कमल होता।

मुकेश कुमार सिन्हा

फिर भी जीना ही होगा

है नितांत निराशा
फिर भी उम्मीद का दामन थामे
ढूंढ रहे आशा भोर की
उन फिजाओं में जहां
कल सिर्फ चहचहा रही थी चिड़िया
पर उस चिरपी सी चहचहाहट में
महसूस रहा था नीरवता

है ये कैसा दर्द
जो है बिना दर्द के
जो विराट जिंदगी मे हो रहा है परिणत
चाहते ऐसी कि
कब और कैसे भी पा जाएँ ताकत
तो क्यों ना
उन अंगुलियों के आगे कर दें
माथा नत

जिनके छू लेने भर से
फूल भी हैं खिलखिलाते
शायद भर जाए उम्मीद
एक स्नेहिल स्पर्श से
मन के छाले जो छलछलाते

ओ मेज के कोने पर
माथा रख कर रोने वाले
हर दर्द को नए अर्थ तक जाने दो
ताकि समझ पाए
हम सहने वाले

फिनिक्स सी उम्मीदों को सहेजे
खुद की चिंगारी में लहक कर
खुद के राख से जन्मना ही होगा

जिंदगी फिर भी जीना ही होगा
... है न!

ये क्या जगह है दोस्तों...!

मुकेश दुबे

हर किसी की जिंदगी में कुछ जगहें ऐसी होती हैं जहाँ वो नहीं जाना चाहता। लेकिन यह भी सच है कि कभी न कभी उसे न चाहते हुए भी उस जगह जाना पड़ता है।

ऐसी ही एक जगह, घर के पीछे बाड़े में आखिरी सिरे पर बनी वो कोठरी थी जिसमें जानवरों के लिए भूसा रखा जाता था। कुछ फासले पर पीपल का पेड़ था जिसकी पत्तियाँ हवा के साथ मिलकर अजीब सी डरावनी आवाज निकालती थीं।

हरवाहा छन्नू कहता था पीपल में भूत रहते हैं। उसकी बात सच थी या गलत यह नहीं मालूम लेकिन उस आवाज से तो सच ही लगती थी।

जब कभी छन्नू काम से गोल मारता, गाय को चारा देने के लिए मैं ही पकड़ में आता था। भैया पढ़ाई का बहाना बना बच जाता, बहनें रसोई में घुस जातीं और फरमान मुझे ही मिलता उस कोठरी से भूसा निकालकर लाने का।

उसी समय सोच लिया था जब बड़ा हो जाऊँगा, बिल्कुल नहीं जाऊँगा उस जगह जिस जगह जाना पसंद नहीं होगा।

एक और सच्चाई है, आप जिस डर से भागते हैं वो आपका पीछा नहीं छोड़ता कभी।

उस कोठरी और पीपल ने भी मेरा पीछा नहीं छोड़ा। वो घर छूट गया, गांव बहुत पीछे रह गया लेकिन पता नहीं कैसे वो दोनों मेरे साथ चली आईं। मन में कहीं समा गई थीं।

वैसा ही घुप्प अँधेरा उस कोठरी जैसा, वही डरावनी पीपल के खड़कते पत्तों की आवाज।

समय चक्र के साथ चलती जिंदगी का कुछ हिस्सा ठहर गया था किसी जगह। गुजरा कल मानकर हम उसे बिसरा देते हैं। कभी-कभी यह अतीत का छोटा सा टुकड़ा इतना जिद्दी इतना कठोर और इतना पैना होता है जिसे भुलाना आसान नहीं होता।

बस ऐसे ही किसी अतीत को उस कोठरी में रखकर बाहर से कुंडी लगा दी थी दरवाजे पर। पता नहीं कब और कैसे उसका कोई हिस्सा सूखे ठूँठ से पीके की तरह फूटा और पनपकर पीपल बन गया। कुछ बातें पत्तियाँ बनकर लटकी हैं और जब यादों की हवा चलती है, वही डरावनी आवाज निकलने लगती है।

दरवाजे की कुंडी खट्ट की आवाज के साथ अपने आप गिरती है और दरवाजा खुल जाता है।

अक्सर ऐसा रात के गहराने पर होता है। जिस्म पसीना-पसीना हो जाता है। साँस तेज चलने लगती है, उस कोठरी के खुले दरवाजे को बंद करने जाना मतलब उसी सुरंग से गुजरना जिससे बचपन से बचना चाहा है, लेकिन उस कोठरी का बंद होना भी जरूरी है। हिम्मत बटोरने की कोशिश में नींद खुल जाती है।

जोर की हँसी आती है तब। रेग्यूलेटर से पंखा तेज कर पानी का गिलास उठाकर गटागट पीकर घड़ी देखता हूँ, तीन बजे हैं। काफी देर है सुबह होने में। लेटकर आँख बंद करने पर वही कोठरी और पीपल दिखाई देता है। छन्नू को पकड़ कर पिटाई करने का मन करता है। क्यों बताई उसने भूत वाली बात....

फिर सोचता हूँ वो सब तो कब का छूट गया। ये कोठरी खुद मैंने बनाई है और रोपा है पीपल... अब न चाहते हुए भी जाना पड़ता है उस जगह जिसे अतीत कहते हैं। पूछते रहिएगा खुद ही खुद से -

'ये क्या जगह है दोस्तों, ये कौन सा दयार है
हद-ए-निगाह तक जहां, गुबार ही गुबार है
ये क्या जगह है दोस्तों....'

पवन अरोरा

किसने कहा प्यार
सिर्फ एक बार होता है
किसी सिर्फ एक से होता है
वो हो सकता है
हर उस शख्स से
जो हमे अच्छा लगे
जिसका साथ सच्चा लगे
जो मन में बस जाए
जिसके आते ही
धड़कन धुन गुनगुनाये
जो मान दे सम्मान दे
जिसकी बाते धड़कनों को
एक सुरीली तान दी
किसी की बाते अच्छी
किसी की आंखे अच्छी
किसी की मुस्कुराहट से प्यार
तो किसी का अलग अंदाज
हां हो सकता है
ये भी हो सकता है
एक समय में ही
अलग अलग लोगो से हो प्यार
किसी एक का तो
कॉपी राइट नही है यह यार।

गुलशन प्रेम

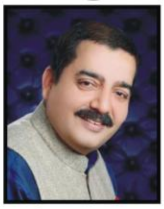

ग़ज़ल

अपने गम इस तरह न छुपाया करो
देखकर आइना मुस्कुराया करो

जिनसे करते हो तुम दावा-ए-दोस्ती
उनसे मिलने कभी घर भी जाया करो

दूसरों को परखते हो हरदम मगर
तुम कभी खुद को भी आजमाया करो

दिल दरवाजा छोड़ा है हमने खुला
रोज आया करो रोज जाया करो

बांटते हो जमाने को खैरात तो
प्यार माँ बाप पर भी लुटाया करो

बस्तियां जाने कितनी उजाड़ी हैं, अब
फूल 'गुलशन' में कुछ तो लगाया करो

केदार नाथ शब्द मसीहा

युद्ध विराम

'अरे बेटा! उठो अपने खेत में चलें।' बापू ने बेटे को पुकारा।

'बापू! दो दिन बाद काट लेंगे फसल। बेचनी तो है न अभी। चारों तरफ कर्फ्यू लगा है...मंडी बंद पड़ी हैं।' बेटा बाहर आते हुए बोला।

पिता ने हंसिया उठाया और बेटे की तरफ देखते हुए बोला -

'हा हा हा... अरे पगले! हम किसान हैं, हमारी लड़ाई हमेशा जारी रहती है, भूख कभी युद्धविराम नहीं करती। लोग मौत के डर से भले सैनिक की जय बोलें... पर सकून से तो हमें ही धन्यवाद देते हैं पेट पर हाथ फिराते हुए... हमारी कोताही तो भगवान को भी मंजूर नहीं.... भले हमारी हालत न देखता हो।'

चन्द्र प्रभा सूद

लिंगभेद का भाव

बेटी और बेटे में लिंगभेद का भाव उनके पैदा होने से ही आरम्भ हो जाता है। यद्यपि एक ही माता-पिता की दोनों ही सन्तान होते हैं और एक ही कोख से उनका जन्म होता है। फिर भी यह भेदभाव युक्त व्यवहार हर घर में देखने को मिलता है।

कहने और सुनने में यह बहुत अच्छा लगता है कि हमारे घर में बेटी व बेटे दोनों के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाता है। यह सच है कि बहुत से माता-पिता आज दोनों की पढ़ाई-लिखाई के विषय में सोचने लगे हैं। उन्हें समान सुख-सुविधाएँ भी दी जाने लगी हैं। दोनों के खान-पान और रहन-सहन में भी आजादी दी जा रही है।

उन घरो की लड़किया उच्च शिक्षा ग्रहण करके उच्च पदों पर आसीन हैं। ज्ञान, विज्ञान, राजनीति, साहित्य, व्यापार आदि हर क्षेत्र में वह अग्रणी बन रही हैं। यही कारण है कि वे हर क्षेत्र अपने झण्डे गाढ़ रही हैं। भारत की पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमति इन्दिरा गाधी और राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा पाटिल से हम सभी परिचित हैं। अपने क्षेत्र कीआधुनिक सफल महिलाओं कल्पना चावला, इन्दिरा नूई आदि को भी नहीं भूल सकते।

प्रश्न यह है कि ऐसे लोग कितने हैं जिनकी सोच का ऐसा विस्तृत दायरा है? मेरे विचार में इनका प्रतिशत आज भी बहुत कम है।

बहुत से माता-पिता लड़के और लड़की के खाने-पीने, सोने-जागने, हँसने-खेलने आदि में भी अन्तर करते हैं। जो अच्छा, पौष्टिक व स्वास्थ्यवर्धक खाद्य हैं वे बेटे को दिए जाते हैं, बेटी को नहीं। इस कारण उनमें पौष्टिकता की कमी हो जाने से एनिमिया आदि कई रोग होते हैं।

लड़का देर तक सोए और घर या बाहर का कोई भी काम न करे तब भी उसके लाड़ लड़ाए जाते हैं। दूसरी ओर लड़की से आशा की जाती है कि वह सवेरे उठकर घर के काम-काज में हाथ बटाए। हर खेल लड़का खेल सकता है और कितना भी समय वह घर से बाहर रह सकता है परन्तु लड़की के लिए यहाँ भी बन्धन रहता है। कुछ ही खेल खेलने की उसे आज्ञा मिलती है और घर से बाहर अधिक समय रहने की उसे आज्ञा नहीं मिलती। लड़की को जोर से बोलने अथवा हँसने पर यह कहकर टोक दिया जाता है कि उसे पराए घर जाना है। इसलिए उसका व्यवहार सदा संयमित होना चाहिए। लड़कों को यहाँ भी छूट दे दी जाती है।
पैदा होने के बाद वह होश सम्भालती है तभी से उसे यह घुट्टी में पिलाया जाता है कि उसे अपने बाबुल का यह घर छोड़कर ससुराल जाना है। उसे घरेलू कार्यों, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई आदि में दक्ष होना चाहिए। उसका ऊँचा बोलना, जिद करना आदि अनुचित कार्य हैं। उसे उच्च शिक्षा दिलाने में आज भी बहुत से माता-पिता आनाकानी करते हैं। बहुत से माता-पिता उसे नौकरी भी नहीं करने देते।

वह अपने भाई के साथ बराबरी के व्यवहार की माँग नहीं कर सकती। दोनों यदि कहीं से आते है तो लड़की से ही अपेक्षा की जाती है कि आराम न करके भाई को चाय-पानी लाकर दे। वह नवाब बना खुद होकर पानी का गिलास भी न ले। ऐसे व्यवहार लड़की के मन को तार-तार कर देते हैं। उसे लगने लगता है कि सारे बन्धन उसी के लिए हैं। उसे क्यों लड़की का यह जन्म ईश्वर ने दिया है।

धार्मिक स्थलों पर उसके प्रवेश का मुद्दा आजकल सुर्खियों में है जो बहुत ही गरमाया हुआ है। आज इक्कीसवीं सदी में हम जी रहे है। फिर भी यह बेटे और बेटी के लिए व्यवहार में यह भेदभाव समझ में नहीं आता जो कन्या भ्रूण को गर्भ में ही नष्ट करा देता है। संवैधानिक रूप से उसे माता-पिता की सम्पत्ति में अधिकार प्राप्त है। फिर भी प्रायरू उसे वंचित रखा जाता है। बेटे को ही सब कुछ सौंप दिया जाता है चाहे वह उस योग्य हो या नहीं। यदि कोई बहन विरोध करे तो उसे तिरस्कृत किया जाता है।

आज एकल परिवारों के चलते समय और परिस्थितियों की माँग है कि दोनों को ही घर-बाहर के कार्यों में दक्ष होना चाहिए। बिना पूर्वाग्रह के दोनों के लिए समानता का व्यवहार अपेक्षित है। बेटियों को यदि समान अवसर दिए जाएँ तो निस्सन्देह वे हर क्षेत्र में चमत्कार कर सकती हैं।

धर्मराज देशराज

ग़ज़ल

तुझपे रब ईमान रखूं
मैं अपनी पहचान रखूं।

तुझको चाहूं तुझको पूजूं
कुछ भी न दरम्यान रखूं।

मैं फकीर दिल का राजा
आन, वान और शान रखूं।

मेरे प्राण बसे गजलों में
माथे पर दीवान रखूं।

नये जमाने से डरता हूँ
मैं अपना सम्मान रखूं।

कौन यहां पर अपना है
दिल में इतना ज्ञान रखूं।

सखृत सफर है संग अपने
मौसम बेईमान रखूं।

मेरी जान वतन है मेरा
दिल में हिंदुस्तान रखूं।

औरत...

रश्मि अभय

चौखट भी...दर भी...दीवार भी औरत...
आते जाते ठोकरों की मार है औरत...

जिंदगी के हर रिश्तों का किरदार है निभाया...
फिर भी अपनों से हीं बेजार है औरत...

जिस मकां को घर बनाने में उम्र सारी गुजर दी
उसी घर में बेगानों सा आजार है औरत...

चाहे तो मिट्टी को भी कुन्दन बना दे...
वक्त आने पर चंडी की अवतार है औरत...

ता-उम्र जिसके साथ हमवार बनी रही...
आज उसी की वफा की तलबगार है औरत...

रहने दो अश्क बनकर ना गिरने दो जमीं पर...
तू जहां खड़ा है उस की हकदार है औरत।।

मेघा राठी

अहम् ब्रह्मास्मि

ख्वाब जब आंखों से दिल में उतरते हैं न तब वे अपनी चमक चेहरे पर नुमायां करने लगते हैं और जब ख्वाब चकनाचूर हो जाते हैं तब आंखें मुस्कान भी फीकी कर देती हैं। दोस्ती, प्रेम का यही बन्धन जब कमसाना शुरू करता है, भावुक मन वेदना को पहले शब्द देता है फिर तड़पता है और उसके बाद चरम पर पहुंच कर उसी वेदना को पीना शुरू कर देता है।

वेदना शरीर में अंगीकार होने लगती है तब आंखें सर्वथा अनूठा परिदृश्य देखना आरम्भ करने लगती हैं, वे दृश्य जो खुली आँखों से कभी देखे ही नहीं थे। रिश्ते-दोस्ती-प्रेम इन सबसे पृथक संसार को देखने का नवीन दृष्टिकोण जन्म लेने लगता है। एकांत का साथ भला-भला सा लगता है।

धीरे-धीरे वेदना की अनुभूति समाप्त होने लगती है और निर्लिप्तता प्रादुर्भाव करने लगती है। यह निर्लिप्तता शून्य से साक्षात्कार करने की कड़ी बनने लगती है यानि स्वयं को और ब्रह्म को सम्पूर्ण रूप में जानकर 'सोहम्' (जो तू है वही मैं हूँ) की स्थिति में आना।

और जब अहं ब्रह्मास्मि की स्थिति आ जाती है तब न कोई वेदना रहती है, न इच्छा न ही ख्वाब, केवल चिर शांति की मंदाकिनी प्रवाहित हो कर रोम-रोम को पावन करती हुई दिव्य प्रकाश त्रिकुटी मंम जाग्रत कर ब्रह्मानंद में लीन कर देती है। व्यक्ति दिन-रात, ऋतु चक्र, आयु आदि के प्रभाव से मुक्त केवल उसी दिव्य प्रकाश की साधना के आनन्द में निमग्न रहता है। तब आंखों व चेहरे पर जो चमक आती है वह चिरस्थायी होती है।

पर यह स्थिति साधना लम्बे मानसिक नियंत्रण के पश्चात प्राप्त होती है इसलिए स्वप्न यदि टूट कर वेदना दे रहे हैं तो समझ जाइये कि यह समय स्वयं को पहचानने का है। एक बार स्वयं को जान लिया तो जीवन में सफलता और जीवन की सफलता दोनों प्राप्त करना आसान हो जाएगा।

मुकेश सोनी सार्थक

ग़ज़ल

बन कर दूध में चीनी रहे तो देर तलक रह पाओगे
बन कर खून बहे तो कैसे दूर तलक बह पाओगे
खून का रंग पानी मे ज्यादा दूर तक न बह पायेगा
नये पृष्ठों का इतिहासी अब ये सब ना सह पायेगा
तुम सच से अनभिज्ञ नही भीड़ बड़ा कर फुले हो
खुद को गोरी समझे बैठे हो बस प्रताप को भूले हो
जयचंदो के चक्कर मे अपना अस्तित्व मिटाओगे
मिट ही गये तो बच्चों को दो जख से समझाओगे
गर हो पाओ तो जल्दी ये सच स्वीकारी हो जाओ
अपने जहन के आईने के तुम आकारी हो जाओ
कई कई मुद्दतो तक हमसे तुमने मोहब्बत पाई है
पर जब भी मुल्क में आग लगी तुमने ही लगाई है
क्यो तुम्हारे केवल तुम्हारे बच्चे आतंकी हवाले है
बोल तो ऐसे बोलते हो जैसे के जबान के छाले है
क्या तुम्हारी नीतियों से दिल भी तुम्हारे काले है
या आस्तीनों में पुरखो ने हमारे ही साँप पाले है
फूल के संग बन कर गन्ध गमकना सीखना होगा
मन की स्लेटों पर प्रीत का ककहरा लिखना होगा
तुम सियासी दाँव के मोहरे हो हकीकत जानो तुम
जरा गर्द हटा कर चेहरों है सूरत को पहचानो तुम
यही राह है अपनाओ तुम गुलशन फिर आबाद हो
अपनी नाजायज जिद से वतन ऐ अम्न न बर्बाद हो
रमजान मिला लो होली में संग दिवाली ईद करो
इस धरती की मिट्टी चूमो ओर चाँद की दीद करो

रामबाण

डॉ. रामकुमार चतुर्वेदी

कोई ऐसी गजल बनाओ, कोरोना भाग जाये
कोई ऐसा गीत सुनाओ, कोरोना भाग जाये।

लिखना पढना भूल गये है, कोरोना के नाम से
कोई ऐसा ज्ञान बताओ कोरोना भाग जाये।

लॉक डाउन से बंद सब, भूखे की खैर नहीं
कोई धर्म सामने लाओ, कोरोना भाग जाये।

ऐसी अजान सुनाओ, किसी का पेट भर जाये
मंदिर में घंटी बजाओ, कोरोना भाग जाये।

जब पाप धुल जाते हैं, चारों धाम करने से
कोई एक तीर्थ बनाओ, कोरोना भाग जाये।

चर्च में हो या गुरुद्वारे, बन जाओ तारनहारे
कोई तो धर्म ग्रंथ लाओ, कोरोना भाग जाये

भूखे की भूख बुझाओ, मानव सेवा अपना लो
मानव धर्म अपनाओ, कोरोना को भाग जाये।।

घर में रहकर दूर करो, शंकाओं से दूर रहो
साफ स्वच्छता अपनाओ, कोरोना को भाग जाये।।

पद्मा प्रसाद

आत्मविभोर

सारी भीड़ थी आत्मविभोर,
उसकी काया पे,
पर!
वह थी निराश,
हर क्षण अपने छोटे होने का एहसास,
अंतर्द्वंद्व के भाग दौड़ से निकल,
उसे लगा....
उसमें वो कौतूहलता नहीं,
तर्क करने की शक्ति नहीं,
पुनः आ बैठी,
दहकते अंगारों पे,
उसे हिम्मत नहीं,
कि!
जिधर चाहे मोड़ ले,
मनचाही राहों पे,
बुद्धिजीवी मौन क्यों हैं?
जमाने पर प्रहार किया,
बनाते हैं रिश्ते जमाने भर से,
मगर!
घर में जरूरत हो तो,
रिश्ते भूल जाते हैं,
बस!
सावधान होकर देख रही थी,
हर तमाशा व करामात,
जितनी कौतूहलता अब थी,
उतनी शीतलता भी,
रोक दूं,
यही ख्याल है,
किसी न किसी रूप में,
फिर!
आत्मविभोर हो उठी....

आशीष जैन

कैसे बताऊं?

कैसे बताऊं तुम कैसी हो,
एक हसीन ख्वाब जैसी हो,
हर पल साथ जीना चाहूँ,
चाहत तुम्हारी भी है अगर यही,
तो बताओ तुम मेरी हो या मेरे जैसी हो?

फर्क नहीं पड़ता कौन क्या कहता है,
सोचता है कौन क्या यहाँ,
तुम जैसी हो मैं अपना लूँ,
और वैसे ही मुझे तुम अपना लो,
बीत जाएंगे ये पल भी सभी,
बना ले हम इन पलों से लम्हे सभी,

नहीं कहता मैं, कि इश्क ही इबादत है,
हम में इश्क होके भी नहीं है, ये हकीकत है,
कौन परवाह करे इश्क मोहब्बत की,
जैसे भी हो हालत, थोड़ी परवाह मैं करुँ,
थोड़ी परवाह हम करे,
सफर हो जाएगा आसान ऐसे ही,

मैं एक प्यार का आशीष हूँ,
एहसास बहुत है पास,
मगर खामोशी की फरमाइश हूँ,
बता नहीं सकता, बस जताना चाहता हूँ,
समझ सको तुम मुझे,
प्यार की वो ख्वाहिश हूँ,

चाहता नहीं कि मुझे इतना प्यार तुम भी करो,
मगर तकरार मुझसे ज्यादा खुद के लिए करो,
एहसास के कोने में थोड़ा साथ तुम भी दो,
बता तुम नहीं पा रही, तो जता तुम भी दो,
समझ जाऊं तेरी आंखों की जुबान से भी,
मैं प्यार की वैसी आजमाइश हूँ,

सच कह रहा हूँ
हमारे प्यार के लिए तुम बदलती ऋतु हो
तो मैं खुदा का आशीष हूँ।

शिखर चंद जैन

जिंदगी ना मिलेगी दोबारा

जिंदगी ईश्वर का दिया हुआ कीमती उपहार-

कोरोनावायरस के कहर के इस दौर में मौत को अपने सिर पर मंडराते देख आपको इसकी कीमत का एहसास हो रहा होगा। लेकिन बहुत कम लोग ईश्वर के इस उपहार का सही उपयोग कर पाते हैं। कड़वा सच तो यह है कि हम में से ज्यादातर लोग अपनी जिंदगी को जी नहीं रहे बल्कि बिता रहे हैं। बहुत कम लोग इसे सही मायने में जीते हैं। जरा सोचिए कि आपको अपने मोहल्ले, जिले, राज्य, देश या विश्व के कितने लोगों के नाम याद हैं या आप उन्हें जानते हैं या आपने कभी उनका नाम पढ़ा या सुना है? मुट्ठी भर लोगों का! क्योंकि इतने से ही लोग हैं, जिन्होंने जिंदगी में कुछ ऐसा किया जिससे उन्हें भीड़ से अलग पहचान मिली।

इतनी सी पहचान तो बनाऐं-

मैं यह नहीं कहता कि हम सब को अंतरराष्ट्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर ही अपनी पहचान बनानी चाहिए तभी जिंदगी को सही मायने में जीना माना जाएगा। लेकिन आपकी पर्सनैलिटी कम से कम ऐसी जरूर हो कि आपकी बिल्डिंग, सोसाइटी, मोहल्ले, जिले या राज्य के लोग तो जानें। कई बार तो बड़ा आश्चर्य होता है जब एक बिल्डिंग की छोड़िए एक ही फ्लोर पर रहने वाले किसी व्यक्ति को उसके ही फ्लोर के फ्लैट में रहने वाले लोग नहीं जानते। वजह यही कि उस व्यक्ति ने न तो कभी सोसाइटी के लिए कुछ अच्छा काम किया ना कभी वहां रहने वाले लोगों के साथ सलाम नमस्ते की।

ऐसी भी क्या जिंदगी?-

दोस्तों यह जिंदगी दोबारा मिलने वाली नहीं है। इसलिए इसे एक बार में ही इस तरह से जिएँ कि आपको सफलता, सुकून और लोकप्रियता मिले। वैसे भी जिंदगी कच्ची पेंसिल की तरह है जो रोज छोटी होती चली जा रही है..

तो क्यों ना रोज कम से कम एक अच्छा काम किया, किसी एक व्यक्ति की मदद करके उसकी दुआएँ ली जाएं या खुद को परिष्कृत अथवा सफल करने के लिए कोई प्रण लें!

रामायण के पंचम कथांश से क्या शिक्षा मिलती है?

रजनीश दुबे
धरतीपुत्र

१) माँ कौशल्या को अपने पुत्र के विवाह की सूचना मिलते से ही उन्होने दान कोष खुलवाने का आदेश दिया उन्होने कहा कि याचक को इतना दो कि उन्हें मांगने की आवश्यकता ही न पड़े। जिसमे ब्राह्मण को गौ दान का अधिक महत्व बताया गया। गौ अपने आप में कालांतर से श्रेष्ठ बताई गई है।

२) पिता जी के चरण दबाते समय पिता ने पुत्र से जब पूछा कि हमारी याद नही आती थी क्या पुत्र? तो अपनी प्रशंसा से सकुचाते हुये श्री राम ने कहा कि आपके द्वारा दिये गये कार्य में त्रुटी न हो जाये इसलिए आपके आदेश का आभास ही आपकी और परिवार की स्मृति बनकर सदा साथ रहता था।

३)श्री राम जी ने कहा कि पिता न भी कहे तो पुत्र को पिता के मन की इच्छा जानकर भी उसका पालन करना आवश्यक होता है।

४) जब शत्रुघन जी ने कहा कि भैया प्रेमशास्त्र तो गुरुकुल में नही पढ़ाया गया तो बड़े भाई कहते हैं कि प्रेम की शिक्षा प्रकृति देती है अतः प्रकृति जिससे भी प्रेम से भेंट कराये हमें स्वयं को सदा के लिए उसे सौंप देना चाहिए ।

५) श्री राम जी के लिये पिता की आज्ञा सर्वोपरि है इसलिए वे बिना आपसी वार्तालाप के कोई निर्णय नही लेना चाहते।वही गुरु श्रेष्ठ ने कहा कि विवाह दो व्यक्तियों का मेल नहीं अपितु दो कुलों का मेल है जो समाजिक रीति रिवाजों को निभाकर ही सम्पन्न होना महत्वपूर्ण कहलाता है।

६) श्री राम जी ने अपने सारे बारातियो को प्रणाम किया क्योकि वे देवी देवताओं के रूप में होते है और दूल्हा दुल्हन का स्थान शीर्ष पद पर होने के कारण उस समय सभी उनके चरण पखारते है। इस मर्यादा का पालन आज के विवाहों में नही होता, कभी भी दूल्हा दुल्हन को गोद में उठाकर या हास्यस्पद कृत्य कर जयमाला और फेरे विधि का मजाक नही उड़ाना चाहिये।

७) जनक जी ने स्वयं को छोटा बताया तो दशरथ जी ने उन्हें अपनी उदारता से प्रभावित किया उन्होने कहा कि हम याचक है एवं सदैव आपके ऋणी रहेंगे कि हीरे जैसी कुल की शोभा बढ़ाने वाली वधुयें नही बेटियों का वरण करके आपसे दान लेकर जा रहे हैं बिना आपकी अनुमति के नही जावेंगे। उन्होने बेटियों की विदाई हेतु जनक जी व माता सुनयना को पर्याप्त समय दिया।

यहाँ मंथरा जी ने श्री राम जी के संघर्षों का वह बीज कैकयी माता के मन में बो दिया जिससे सारे संसार को कष्टों से उबारने का भाग्य लिखा गया।

किशोर छिपेश्वर 'सागर'

मुश्किल में सफर है

सुनसान है सड़क सुनसान शहर है
देख लो भाई मेरे कोरोना का कहर है

परिवार संग बिता रहे है आज का ये दिन
मोबाइल हाथ पर और टीवी पे नजर है

बच्चो संग मस्ती बचपन याद आ गया
जिंदगी हमारी कुछ इस तरह बसर है

खिलवाड़ क्यों कर रहा आदमी प्रकृति से
मैं सोच रहा हूँ बट रहा क्यों ये जहर है

कहना मेरा मान लो अपना लो शाकाहार
ये जिंदगी का अब मुश्किल में सफर है

राजेन्द्र जैन अनेकांत

बंद

बंद हुआ क्यों कैसे, इस पर करें विचार।
बंद सफल करने सभी घर मे रहियो यार।।

बंद आज जो देश मे, वह जन हित मे जान।
बंद से बड़कर नही कोरोना का निदान।।

बंद शरीर से हुए मगर,विचारों से उन्मुक्त ।
बंद मे कुछ ऐसा करें, जो पापों से मुक्त ।।

बंद तो बंदीजन भी,किन्तु तब अपराध ।
बंद समूचा देश तब, केवल जनहित साध।।

बंद सुअवसर कीजिए, चंचल मन को रोक।
बंद सुमंगल बनेगा, नित प्रति ईश्वर धोक।

बंद नही हम समझिए, यह संकट का समय।
बंद खुलेगा शीघ्र ही, क्योंकि शीघ्र विजय।।

बंद मुट्ठी मजबूत, खुली तो सब लुट जाय।
बंद कभी अच्छा तभी, कभी खुले पिट जांय।।

बंद मे संयम रखिए, तभी सत्य की सूझ।
बंद व्यर्थ बकबास, 'अनेकांत' से बूझ।।

विनोद वर्मा 'दुर्गेश'

दोहा गीत

सहमे सहमे लोग हैं, हुए सभी लाचार,
कोरोना जल्लाद है, करता छिप कर वार।

चहल पहल अब बंद है, सन्नाटा चहुँओर,
कदम कदम खतरा हुआ, विपदा है घनघोर।
डर का इक माहौल है, हर घर चीख पुकार,
कोरोना जल्लाद है, करता छिप कर वार।

रहम किसी पर ना करे, बच्चा बूढ़ा रंक,
जहर उगलता फिर रहा, देखे मारे डंक।
नभचर सब दुबके पड़े, मान गए हैं हार,
कोरोना जल्लाद है, करता छिप कर वार।

आँधी कैसी चल पड़ी, ढ़हते मानव गात,
दूरी सबसे राखिए, बैठ लगाए घात।
इक्कीस दिन गुजर लो, होगी इसकी हार,
कोरोना जल्लाद है, करता छिप कर वार।

सूर्य 'निदान'

रफ्तार

रफ्तार करो कम, के बचेंगे तो मिलेंगे!
गुलशन न रहेगा तो कहाँ फूल खिलेंगे?
वीरानगी में रहके खुद से भी मिलेंगे!
रह जाएं सलामत तो गुल खुशियों के खिलेंगे!

अब वक्त आ गया है कायनात का सोचो!
ये रूठ गई गर तो ये मौके न मिलेंगे!
जो हो रहा है सोचो, क्यूँ हो रहा है ये,
कुदरत के बदन को और कितना ही छीलेंगे?

मौका है अभी देख लो फिर देर न हो जाए!
जो कुदरत को दिए जख्म वो कैसे सिलेंगे?
है 'कोई' तो जिसने जहां हिला के रख दिया!
लगता था कि हमारे बिन पत्ते न हिलेंगे!

झाँको दिलों के अंदर,
क्या करना है 'निदान' तो सोचो!
खाक में वरना हम सभी जा के मिलेंगे!
खाक में वरना हम सभी जा के मिलेंगे!

पैरोडी

प्रणय श्रीवास्तव अश्क

हम लाये हैं चीन से कोरोना को पाल के।
भारतको बचाना है, कोरोना के जाल से।।

किया है हमारे मोदीजी ने, जनता कर्फ्यू का आव्हान।
रविवार २२ तारीख को बाहर न निकलना श्रीमान।।
पानी, या द्रव्य कोई भी पीना उबाल के।
दुनिया को बचाना है कोरोना के जाल से।।

देखो ना विश्व सारा पीड़ित है महामारी से।
सुरक्षा, सर्तकता ही बरतना, बारी बारी से।
मिलना जुलना कम करो, रहो देख भाल के
दुनिया को बचाना है कोरोना के जाल से।।

खाएं न डिब्बा बन्द चीजें जो पुरानी हों ।
बासी न खाएं सामग्री, जिनमे न निशानी हों।।
ए. सी., फ्रिज, कूलर साफ करें अंतराल से।
दुनिया को बचाना है कोरोना के जाल से।

सेनेटाइजर का उपयोग, प्रतिदिन किया करें।
सर्दी,खांसीबुखार मे, सलाह डॉक्टर की लिया करें।
बच्चों, और बुजुर्गों को रखना है संभाल के।
दुनिया को बचाना है, कोरोना के जाल से।।

रखना है आस पास में भरपूर सफाई।
संक्रमित वस्तु को, छूना नहीं भाई।।
डरना नहीं कभी भी कोरोना की चाल से।
दुनिया को बचाना है, कोरोना के जाल से।

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

अनिल श्रीवास्तव 'जाहिद'

ग़ज़ल

समुन्दर में अगर प्यासा कोई दरिया उतर जाये।
वो अपनी ही नजर में जाने कितनी बार मर जाये।।

कहो दोनों ही सर्जन से मिटा दें रोग वो जड़ से।
कहीं! वो जख़्म फिर नासूर बनकर ना उभर जाये।।

नजर भर के मुझे गर देख लो इक बार महफिल में।
मेरी उजड़ी हुई तकदीर इक पल मे सँवर जाये।।

हवा को खूब भड़काकर बनाया आपने आँधी।
तो अब उसकी ही मर्जी है इधर जाये उधर जाये।।

अरे! लो उसके साइन हर अहम कागज पे तुम, वरना।
करोगे क्या, अगर वादे से कल वो ही मुकर जाये।।

न वो गुल है, न कांटा है, वो ख़ुशबू है तो फिर उसकी।
उधर जाना है मजबूरी हवा लेकर जिधर जाये।।

सड़क, तय है बनेगी ही परिंदे की किसे चिंता।
भले घर जाये उसका या वो मरता है तो मर जाये।।

मैं सोया ही नहीं कल रातभर ये सोचकर 'जाहिद'।
मेरे दर पर कहीं! कुछ देर को चंदा ठहर जाये।।

मनोज जैन मधुर

पलाश

सौभाग्य जगा जिस क्षण पाया
तुमसे मैंने रक्तिम पलाश।

मखमली हथेली पर तुमने,
दिल जैसा जिसे सजाया है।
यह मंगल पल इस जीवन में,
संचित पुण्यों से आया है।

तुम प्रेम परस से, पाहन-से
जीवन को देती मृदु तराश।

तुम प्रेम स्वरूपा मनभावन,
करूणा की सुंदर मूरत हो।
लावण्य तुम्हारा मोहक है
तुम प्रेम प्रीत की सूरत हो।

तुमसे ही जीवन नेहिल है
मैं समझा पाता तुम्हें काश!

तुममे सम्मोहन है इतना
हर ओर नजर तुम आती हो।
मन वीणा को झंकृत करके
मधुरिम गीतों को गाती हो।

आशाएँ तुमसे बँधती हैं जब भी
होता है मन निराश।

नीरज कुमार मिश्र

सीढ़ी सफलता की

सीढ़ी सफलता की,
चढ़ने का प्रयास करते हैं लोग,
जिनमें कुछ लोग,
चलते हैं खरगोश चाल,
कुछ कछुआ चाल,
उस सीढ़ी में लगे होते हैं
दो रेलिंग,
जिसका बायां छोर बना होता है,
बेईमानी से, विश्वासघात से,
धोखे से, फरेब से, मक्कारी से,
और दायां छोर,
ईमानदारी, विश्वास, कठोर मेहनत का,
जो पकड़ते हैं बायां छोर,
वो शीघ्र पहुंते हैं शिखर पर,
मगर स्थिर रह नहीं पाते,
ज्यादा तर तक,
लुढ़क कर लौट आते हैं वहां,
जहां से चढ़ना शुरू किये थे कभी,
जो लोग पकड़ते हैं दायां छोर,
वही रह पाते हैं स्थिर,
फलक पर स्थाई रूप से,
यद्यपि पहुंचने में लगता है बहुत समय,
देनी पड़ती है परीक्षा धैर्य की,

मान बहादुर सिंह 'मान'

खुद से हिन्दुस्तान

जान है तो जहान है प्यारे!
हम अपने घर शान हैं प्यारे!
साथी, तू भी अपने घर पे रह,
समझ, हम अंजान हैं प्यारे!!

जान है तो जहान है प्यारे!
घर से निकलना छोड़ प्यारे!
कोरोना से बच उपाय केवल,
सरकार निर्देश संज्ञान प्यारे!!

कोरोना फटाफट फैलता!
संपर्क की जो चैन पाता!
गर संपर्क से हम बच सके,
फिर है सुरक्षित जान प्यारे!!

होकर निकलती मस्त आली!
जब घर से दीमक पंख वाली!
घर में कहाँ फिर लौट पाती,
छोड़ परिजन दे प्रान प्यारे!!

न औषधि कोई कोरोना लड़े!
है प्रबल शत्रु हम निर्बल पड़े!
घर में रहो हल ढाल इसका,
खुद की हथेली है जान प्यारे!!

आओ, करें संकल्प मन सब!
घर में रहेंगे परिजनों संग!
हम जीत लेंगे जंग यह भी,
है खुद से हिन्दुस्तान प्यारे!!

ऐ! जिंदगी

साधना छिरोल्या

चलो आज कुछ अलग कर आयें,
कुछ वक्त अपने लिये गुजार कर आयें।

कुछ अपने मस्तिष्क से,
कुछ अपने भी हिय से,
कुछ देर गुफ्तगूं कर आयें।।
कुछ वक्त अपने लिये गुजार कर आयें।

बहुत शोरगुल है बाहर,
बहुत झंझावात है,
इस दुनिया के चक्रव्यूह से निकल,
चल कुछ पल शांति के गुजार कर आयें।।
कुछ वक्त अपने लिये गुजार कर आयें।

बहुत पाश बाँधे इस मन और मस्तिष्क में,
मकड़जाल में उलझे कुछ अपने ही कर्म से,
कुछ क्षण आँख मूंद,
ये सारे बंधन तोड़ आयें।।
कुछ वक्त अपने लिये गुजारकर आयें।।

दिव्या श्रीवास्तव 'देव'

कोरोना का कहर

कोरोना के कहर को, प्रभु थाम दीजिए।
हे महाकाल इस काल को, विश्राम दीजिए।।
इंसान की हैवानियत से, अब कुपित धरती हुई।
विश्व हाहाकार कर, परित्राण कीजिए।।

दुस्साहसी चीनी की करनी, चहुँ ओर है बस आपदा।
साँईं बाबा विश्व को, अपनी शरण में लीजिए।।
ले करोना दण्ड कर में, क्रुद्ध है सबसे प्रकृति।
मानते हम भूल, मत कोहराम कीजिए।।

विनाशकारी है विपद, अब दाँव पर जीवन लगे।
कल्याण हो इस सृष्टि का, वरदान दीजिए।।
शेष शैय्या छोड़कर, अब क्षीरसागर को।
त्राहिमाम करती धरा, कुछ ध्यान कीजिए।।

व्याकुल उर की आवाज, गुनाहों को कबूल कर।
दें अब जीवन दान, यही आव्हान कीजिये।।
हम नादान हैं, मगर हैं सन्तान आपकी।
क्षमादान दे 'देव', जीवनदान दीजिए।।

आनंद पाण्डेय 'केवल'

ग़ज़ल

मत कहो ये जहान अच्छा है
सिर्फ अपना मकान अच्छा है...।

शहर की रौनकें बताती हैं,
दें लुटा जिस्मों जान अच्छा है...।

कर्म उनके बताते यार सभी
उनका भी खानदान अच्छा है...।

सोचता हूँ किसे कहूँ यह सब,
मैं रहूँ बेजुवान अच्छा है...।

तेरी चौं-चौं से तो कहीं बेहतर,
जानवर बेजबान अच्छा है...।

मुंह से कुछ भी निकल न पाए अब,
खीच दें ये जबान अच्छा है...।

बोझ 'केवल' कभी नही उतरा,
यूँ चढ़ा जो लगान अच्छा है...।

मंजू सरावगी मंजरी

नमन है नमन

डॉक्टर होते हैं इतने महान
जाग्रत दुनिया के ये भगवान
दिन रात नही देखते हैं फिर
मरीज पर ही रहता ध्यान
आज आराम हो रहा हराम
कोरोना के इलाज में हैरान

पुलिस होते सम्मान के हकदार
गुंडागर्दी, जुलुस या हो त्यौहार
इनका सहयोग होता हर बार
समाज देश की देखभाल पहले
पीछे रखते इच्छा और परिवार

गाँव, गली हो शहर महानगर
स्वच्छता कर्मचारी से चलती डगर
इनका काम है कितना जरूरी
घर बाहर की गंदगी हटाते है
अपनी जान जोखिम में डालते हैं
हमारी जिंदगी महफूज करते है

ये सब सम्मान के अधिकारी हैं
जीवन रूपी फुलवारी के माली है
पुलिस डॉक्टर और सफाई वाले
धन्य धन्य है जज्बा तुम्हारा
तुमसे है सुखमय जीवन हमारा

सुधा शर्मा

प्रार्थना गीत

जागो जागो हे जगजननी,
आओ कष्ट हटाओ।
भीर बड़ी माँ संकट भारी,
विपदा दूर भगाओ।

धरती-अंबर भीत हुए सब,
काँप रहा मन थर-थर।
जाने कब हो काल ग्रास ये,
सांसे चलती डर-डर।
हे सुलोचनी, भीत मोचनी,
करुणे नयन उठाओ।
भीर बड़ी...

जीवन पानी मोल हुआ है,
नव- नित लाशें गिनते।
करुण- क्रंदन मची हुई है,
सुरसा रोज निगलते।
कौन रूप अब मात पुकारें,
जननी- जगत बचाओ।
भीर बड़ी...

काल -क्रूर का विकट खेल है,
ताँडव भीषण जारी।
कर बाँधे है मनुज निरखता,
मानवता अब हारी।
हे पीर -हरणी मात अंबे,
रूप- कराली आओ।
भीर बड़ी...

विश्वास दीप अंतर बाले,
असुवन की आचमनी
आकुल मन है भावी संबल
द्वार देहरी सूनी।
असुर मर्दनी मंगल करणी
सब संत्रास मिटाओ।
भीर बड़ी...

एक वार्ता

तुमेश पटले 'सारथी'

पहला पंछीः-
अरे मित्र अचंभित हूँ मैं,
जरा एक बात बता,
कि आजकल इंसान के
रहने का क्या है पता!!
कहाँ करता है वो विचरण,
नहीं कर रहा अतिक्रमण!!

दूसरा पंछी बोलाः-
इंसान अभी बहुत डरा हुआ है,
जिंदा होते हुए भी मरा हुआ है!!
नहीं करता कहीं भी अब भ्रमण,
उसके शहर में फैला है संक्रमण!!

पहला पंछीः-
हाँ तभी ये आसमाँ आसमानी है,
मौन ही इस धरती की वाणी है!!
बेफिक्र है चौबारे की नन्हीं गौरैया,
सुरमय लगते है सब ताल-तलैया!!
उमंग में है यहाँ सारे जीव-जंतु,
बुनते है धरा पर उम्मीदों के तंतु!!

दूसरा पंछीः-
दुआ है इनसानों के बीच क्रांति न हो,
यह तूफान के पहले की शांति न हो!!
दूर हो जाये ये जीत की अंधी होड़ से,
लौट आए वे भी मौत के उस मोड़ से!!
इनके बीच स्नेह का ही अब संक्रमण हो,
इनकी दुनिया में भी सब आकर्षण हो!!
ईश्वर की दुनिया में रहे सब प्राणी मिलकर,
सभी अपनी जिंदगी को जी सके खुलकर!!

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

साजिद खैरो साजिद

ग़ज़ल

हाय ये होंठ ये रुखसार खुदा खैर करे
हो न जाऊँ मैं गुनहगार खुदा खैर करे

मैं हूँ इस पार वो उस पार खुदा खैर करे
कोई चिट्ठी न कोई तार खुदा खैर करे

चाँदनी चाँद से ही रुठ गई हो जैसे
ऐसे रूठा है मेरा यार खुदा खैर करे

अपनी चिलमन को हटाया न करो रुख से तुम
जान ले लेंगे ये रुखसार खुदा खैर करे

दाने दाने को कई शख्स है मोहताज यहाँ
और सरकार है लाचार खुदा खैर करे

ये वबा है या गुनाहों की सजा है अपने
कैद घर में हुआ संसार खुदा खैर करे

मौत साये की तरह मंडरा रही है साजिद
और जनता नहीं बेदार खुदा खैर करे

नवनीता दुबे 'नूपुर'

दीवार

कोरोना से युद्ध मे
ऐसे न जीत पाएंगे,
जब तक खुद को,
अनुशासन की दीवार में
कैद न कर पाएंगे।।

हारेगा फिर ये खतरनाक वायरस,
जब हम होंगे समरस,
एकता के बंधन में
जब बंधते चले जायेंगे,
हर कठिन घड़ी में
हम विजय पताका फहराएंगे।।

होगी सफलता चरणों मे नतमस्तक,
खुशियों की फसल फिर लहरायेंगे।।
नियमों, निर्देशों की अनदेखी न करके
जब हम धीरज का दामन थामेंगे।।

महामारी भाग जाएंगी
अपना सा मुंह लेकर,
फिर से सुखमय भारत में
हम सभी मुस्कुरायेंगे।।

ऋतु कोचर

कैद

पृथक्करण कोई कैद नही है
उपाय है ये सुरक्षा का,
संक्रमण से बचाव यही है
घर परिवार की रक्षा का,
अलग रहे और करें निरीक्षण
लक्षण कोई यदि आयेंगे,
उपचार तुरंत मिलेगा सबको
ठीक होकर ही जायेंगे,
बंधन समझ यदि कोई भी
इस व्यवस्था से मुँह मोड़ेगा,
समझ लो फिर कोरोना से
वो कितनो को जोड़ेगा,
बात समझ आयेगी जल्दी
तो ही समझो सुलझन होगी,
वरना एक सौ तीस करोड़ आबादी
मे उलझन ही उलझन होगी,
होंगे प्रयास असफल फिर तो
कोई नही बचा पायेगा,
पीढित हो हर मानव फिर तो
त्राहि त्राहि चिल्लायेगा,
नहीं चाहते दृश्य भयानक
देखना हमको पड़ जाए,
कस के कमर इरादे जमकर
रणभूमि में उतर जाएं,
बंधन को बंधन न माने
कुछ दिन ही तो है रहना,
जल्द मिटेगी विकराल समस्या,
मोदीजी का है कहना।

इक तस्वीर अधूरी सी..

हेमंत बोर्डिया

तेरा मेरा रिश्ता जैसे,
इक तस्वीर अधूरी सी..
दिल में भीतर इक दूजे के,
बाहर लंबी दूरी सी...

रात ख्वाब इक देखा मैने,
और ख्वाब में क्या देखा..
सपने हो गये सारे सच्चे,
उम्मीदें सब पूरी सी...

तेरे दिल की धड़कन भी बस,
मुझे पुकारा करती है..
दिल में तुम भी बसी हो मेरे,
हिरन की कस्तूरी सी...

कैद जमीं को किया घटा ने,
बादल भी बौराये हैं..
सूरज भी कह रहा अलविदा,
शाम हुई सिंदूरी सी..

उस कस्बे में ना बदली है,
सोच है वही पुरानी सी..
बेटा मुरादों का हासिल है,
और बेटी मजबूरी सी..!

स्पंदन

इसे बंधन बना लो तुम
किनारा मिल ही जाएगा
उसे हमदम बना लो तुम
हवा में घुल गया है जो
उसे चंदन बना लो तुम

तेरी खातिर गमकता है
किसी कानन में खोकर वो
नई एक नई रीत बन जाए
उसे चंदन बना लो तुम

ये बिखरे हैं बगीचे में
तुम अपने अंक में भर लो
बने प्यारी सी एक माला
इसे बंधन बना लो तुम

डॉ अर्चना पाण्डेय

सजे धरती के आंचल पर
तुम्हारे प्यार की डलिया
विरह यह प्रीत बन जाए
उसे स्पंदन बना लो तुम

श्रीमती प्रेमलता शर्मा 'आयुमी'

सपनों का घरौंदा

वो होती घर की हर सिंगार सी,
दौड़ा करती सुबह से शाम तक।
सब की अपेक्षाऐ, इर्द-गिर्द घूमती,
घड़ी की सुई के साथ वो चलती।
मुस्कुराकर रसोई, झाड़ू-पोंछा करती,
और पूजा-अर्चना सारी जिम्मेदारी।
दवा, बाजार और साग-भाजी,
सहेज, सम्भाल घर लाती।
तीस दिनों के आय-व्यय को,
सारे खर्चे का बजट बनाती।
उसकी दुनिया सपनों का घरौंदा,
चुन-चुन खुशियाँ जिसे सजाती।
पडे मुसीबत कभी अपनों पर,
ईश्वर से वो लड़ तक जाती।
चारदीवारी में कोई बंधन तो नहीं,
पर कोरोना तो घर में भी है।
गृहणी सदा रहती मुस्कुराती,
सबके लिए वो प्रार्थना करती।

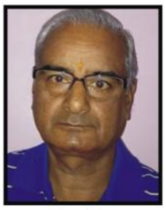

सत्यप्रसन्न

बंधन से कह

बांहों के बंधन से कह।
ओंठों के चुंबन से कह।

थोड़ी परदे दारी रख
सांसों के चंदन से कह।

चुप रहने का वादा था,
अपने इस कंगन से कह।

नजरों में बेशर्मी है,
ढंक ले मुँह दर्पण से कह।

हो जाये तन मन झंकृत,
गीतों के गुंजन से कह।

धड़कन धड़कन तक पहुँचे
अपने हर स्पंदन से कह।

रेखा ताम्रकार 'राज'

मैं नारी

सहमी चारदिवारी में कैद,
रश्मों की जंजीर में जकड़ी।
जब कभी निकलना चाहा,
कोई मजबूरी धर पकड़ी।

कक्का बाबा भैया दादा
सभी का लिहाज करती
दादी अम्मा काकी नन्नी
हर एक का कहा सुनती
उसपे भी तोहमतो की बौछार
मुझमें हरदम पड़ी
जब कभी निकलना चाहा,
कोई मजबूरी धर पकड़ी।

खेलने की उम्र, खेली नहीं
न तो शाला गई न ही पढ़ी
थी छोटी नादान नासमझ
औरो को दिखी सदा बड़ी
गुड्डे गुड्डी का ब्याह रचाती कैसे,
खुद मंडप बीच खड़ी
जब कभी निकलना चाहा,
कोई मजबूरी धर पकड़ी।

चूल्हा बर्तन झाड़ू पौंछा
सास-ससुर, ननद देवर
तन-मन में सज गये मेरे
त्याग लाज धर्म के जेवर
बुझ सकी न राख हूई,
रही मै सदा अधजली लकड़ी
जब कभी निकलना चाहा,
कोई मजबूरी धर पकड़ी।

अब ये दिल चाहता विस्तार
मैं चाँद-तारों को छूना चाहूँ
तोड़ फैंकूँ सब पहरे, जंजीरें
उन्मुक्त गगन में उड़ना चाहूँ
जो मुझसे मेरा परिचय करा दे,
पाना चाहूँ वो कड़ी
जब कभी निकलना चाहा,
कोई मजबूरी धर पकड़ी।

पूनम (कतरियार)

चेतावनी

चैत की हवा पगलायी दौड़ रही है,
सुनसान गांव-शहर,
खेतों, गली-कूचों को,
हर तरफ बंद हैं रास्तें,
टोले-मुहल्ले हैं निस्पंद,
चौक-चौराहें की रौनकें।
माथा पटकती, जाने कहाँ है गायब?
देव चरणों की अभिलाष लिए,
चादरपोशी की आस लिए,
धरा पर लोट, रो रहें हैं फूल।
मन्नतों के कितने ही धागें,
छोटी-बड़ी अनेक घंटियां,
गांठों की प्रतीक्षा में हैं पड़ें,
लगन की शहनाईयां है मौन,
उदास हैं मेंहदियों की कुप्पियां।
हां इस विप्लव-काल में,
कैद पड़ें हम भी घरों में,
भूख-प्यास, परेशानियों के
नित-नयें विकास के मध्य,
हंसते-बतियाते उकतायें सें।
लेकिन कमर कसे हैं बैठे कि,
हम नहीं हैं हारने वालें कोरोना।
हम हरायेंगें तुम्हें कोरोना,
चेत जाओ ए कोरोना,
खदेड़ भगायेंगें तुम्हें कोरोना।
ठहर अपने घर हम एकजुट,
बे-रोकटोक तुम्हारी आवाजाही,
बेफिक्र-बेलौस अंदाज शाही,
नहीं करेंगें बर्दाश्त हम।
नहीं सहेंगें ये आवारगी।
जल्द भरोगे बेचैन हो आहें।
बददुआएं ले डूबेगी तुम्हें,
सुना तो तुमने भी होगा ना कोरोना।
हस्ती मिटती रही है हर शैतान की
नहीं सुना तो आज जान लो,
गिरह अपनी तुम बांध लो।
लेकर अपनी मरदुद चाहतें,
जल्द ही तुम भी मिटोगे,
हां, जरूर नेस्तनाबूद होगे।

वंदना राय

सबक

अच्छे दिन भी आ जाएँगे
काले बादल छँट जाएंगे
जिसने हमें दिया है जीवन
अब वो ही राह दिखाएंगे

मत कर अपना मन तू खोटा,
जीवन चाहे है अपना छोटा
खुल जाएगा पिंजरा एक दिन
और फिर हम उड़ जाएंगे

डाल डाल कभी पात पात,
हम खूशी से जीवन जीते थे
कैद हो कर इस पिंजरे में
अब घूँट पीड़ा के पीते हैं

रख विश्वास अपने प्रभु पर
हम उनको याद जब आएँगे
पीड़ा देने वाले इन्सान को
वो खुद ही सबक सिखायेंगे

आभा अनिल

क्रंदन

घर मे बैठे देश की खतिर
यह कोई बंधन नहीं
लहकडाउन का पालन करना
यह कोई बंधन नहीं
मुझे स्वीकार है यह बन्धन
घर में है परिवार संग
एक साथ सबका जुड़ जाना
ऐसा कोई नन्दन नहीं
यह कोई बंधन नहीं
नहीं तोड़ना है यह बन्धन
सब से इतनी अर्जी है
घर पर रहकर ही कर लो तुम
जो चाहे जो मरजी है
बाहर जाने से जो होगा
ऐसा कोई क्रंदन नहीं
यह कोई बंधन नहीं

सीता गुप्ता

जीवन भी एक बंधन

अभी भी वक्त की माँग यही है,
सारे रह लो बंधन में।
तभी कोरोना नहीं घुसेगा,
आपके जीवन आँगन में।

स्वयं के हाथों कैद हो जाओ,
अपने प्यारे घर में तुम।
कर लो तुम परिवार की रक्षा,
होठों की मुस्कान हो तुम।

तुम्हीं हो सिंदूर की लाली,
और ममता की आँखे तुम।
सारे सुरक्षित रहेंगे तब ही,
जब बंधन को कैद न मानो तुम।

यूँ तो आपा -धापी में,
चलता था जीवन मेला।
पर आज कोरोना के कारण ही,
सजालो घर में ही मेला।

अपनों को तुम समय खूब दो,
कर दो दूर शिकायत अब।
कोरोना तो भागेगा ही,
घर से ही प्रार्थना कर लो सब।

मीना विवेक जैन

जिम्मेदारियां

आज अपने देश के
उन सभी डाक्टरों को
मैं शत शत नमन करती हूँ
जो लड रहे हैं महामारी से
आज अपने देश के
उन सभी सुरक्षाकर्मियों को
मैं शत शत नमन करती हूँ
जो सुरक्षा कर रहे हैं इसके फैलने से
आज अपने देश के
उन सफाई कर्मचारियों को
मैं शत शत नमन करती हूँ
जो कर रहे हैं साफ वातावरण को
डाक्टरों, सुरक्षाकर्मियों और
सफाई कर्मचारियों को पूरे देशवासियों की
अनेकों अनेकों शुभकामनाएं
सभी मिलकर देश को विजयी बनायें
कोरोना टिक नहीं पायेगी हमारे देश में
आओ हम सब भी
अपनी-अपनी जिम्मेदारियां निभायें।

रमा प्रेम 'शांति'

मेरा शत-शत नमन है

खुद की परवाह कम, लेकिन हमारे लिए ज्यादा सोच रहे है,
ऐसे मेरे डॉक्टर भाई-बहनों को मेरा शत-शत नमन है,

सच्ची सेवा भाव से जो लगाती मरहम और दवा दे रही है,
ऐसी मेरी महान ममतामयी बहनों को मेरा शत-शत नमन है,

बेमौसम बारिश के बीच में भी रात भर चौराहे पर खड़े है,
ऐसे मेरे पुलिस वाले भाईयों को मेरा शत-शत नमन है,

नगर, शहर और पर्यावरण को जो साफ करने में तत्पर लगे है,
ऐसे मेरे दमदार सफाईकर्मी भाई-बहनों को मेरा शत-शत नमन है,

शासन-प्रशासन के वो सभी जो अपनी ड्यूटी पर डटे है,
ऐसे सब अधिकारी-कर्मचारी को मेरा शत-शत नमन है,

देश-विदेश की खबर, जान जोखिम में डाल कर ला रहे है,
ऐसे मेरे मीडिया से जुड़े लोगों को भी मेरा शत-शत नमन है,

समाज सेवा आज निस्वार्थ भाव से जो लोग कर रहे है,
ऐसे मेरे सभी भारतीय बंधुओ को मेरा शत-शत नमन है,

आज जो कोरोना महामारी को खत्म करने में सहयोग दे रहे है 'रमा'
ऐसे सभी तपस्वी मानव को मेरा हृदय तल से शत-शत नमन है।

अर्चना कटारे

नमन

हम बैठे अपने घरों में बाहर लग रही आग
देख देख कर जी घबड़ाए क्या होगा बाद

पुलिस डाक्टर सेवा कर्मीयों का देखो त्याग
जान हथेली रख पर रखकर सेवा करते आज

संकट समय में मंदिर देवालय सब हैं बंद
इनकी सेवा देखकर भगवान भी होंगे प्रसन्न

नमन है इन वीरों को संकट में हैं संग संग
करते नहीं अपनी परवाह देखकर है दुनिया दंग

दिनकर राव दिनकर

ग़ज़ल

तोप गोले बंदुकों की मार क्या है
इस कलम के सामने तलवार क्या है

जिन्दगी में रंग है पल पल बदलता
आदमी बतला तेरा किरदार क्या है

नज्म कह दूँ गीत कह दूँ या रूबाई
लिख दिया जो आपने सरकार क्या है

वक्त की रफ्तार भी लिख्खो गजल में
हर घड़ी ये दर्द का बाजार क्या है

मयकदे ही मयकदें हैं जिन्दगी में
दिलजलों से पूछिए कि प्यार क्या है।

रफीक नागौरी

गुजर जाएगी

सर पे जो आ पड़ी है, गुजर जाएगी।
यूं तो आफत बड़ी है, गुजर जाएगी।

छांव भी इसके बाद आएगी, सब्र कर।
धूप माना कड़ी है, गुजर जाएगी ।

आंख में डाल कर आंख लड़ जाईये।
मौत आ कर खड़ी है, गुजर जाएगी ।

सदियां संकट की हमने गुजारीं कई।
आज तो इक घड़ी है, गुजर जाएगी।

हौसलों से इसे हम भगाएं 'रफीक'
रुकने पर जो अडी है, गुजर जाएगी।

कहाँ है महिला सशक्तिकरण?

कहाँ है महिला सशक्तिकरण? क्या सिर्फ पाश्चात्य सभ्यता के वस्त्र पहनने से या कुछेक लड़कियों के उच्च शिक्षा ग्रहण कर लेने से या हर फील्ड में ऊँची ऊँची पोस्टों पर अपनी उपस्थिति भर दर्ज कराने से महिला सशक्तिकरण हो गया? कितनी भागीदारी है लड़कियों की उच्च शिक्षा में, किसी भी अहफिस में कर्मचारियों चाहे वो अपर ग्रेड हो या लोअर ग्रेड कितना परसेंटेज होता है महिलाओं का? क्या आज भी ज्यादातर घरों में पेरेंट्स अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए बाहर भेजते हैं? कारण कुछ भी हो, चाहे डर हो असुरक्षा का या पैसों का आभाव, होता है बेटी के लिए ही है। ब्रेन पह्वर कम नहीं है, शारीरिक रूप से कमजोर होने के बाद भी बेटो से अच्छा करने की क्षमता रखने के बावजूद उनको संसाधन नहीं मिल पाते कि वो अपनी पढाई तक पूरी कर पाएं। सिर्फ सोशल साइट्स पर आकर महिला सशक्तिकरण की बात करने से कुछ नहीं होने वाला। देखा है मैंने गांवों में जहाँ तक स्कूल है वहां तक पढ़ाई करने के बाद अपनी शादी का इंतजार करती लड़कियों को। क्योंकि घर वाले दूसरी जगह भेज नहीं सकते लड़कियों को। इसमें ज्यादा दोष घर की महिलाओं का भी होता है। आप सब कहेंगे की महिलाओं का दोष कैसे? वो इसलिए कि आप स्वयं इतनी कमजोर हैं, इतनी दबी हुई हैं कि अपनी बात घर के मुखिया यानि कि पुरुष से कह ही नहीं पाती। पुरुष चाहे वो बाबा हो या पिता ज्यादा रोकटोक नहीं करते। रोकटोक का जिम्मा भी औरतों ने ही ले रखा है। माना की असुरक्षा की बात है मगर बेटियां सिर्फ घर में रहकर ही कितना मजबूत बन जाएँगी, उनकी कमजोरी नहीं उनकी हिम्मत बनिए। जो पेरेंट्स हैं वो बेटों के साथ अपनी बेटियों के लिए भी सोचिये। उनको मौके तो दीजिये। सिर्फ ग्रेजुएशन कराकर शादी कर देना ताकि वो सिर्फ किसी की भोग्या या किसी की बहू या बच्चा पैदा करके उनकी देखभाल करने वाली या पूरे घर की बिना वेतन की केअर टेकर बनकर अपनी जिंदगी गुजारें अपने अस्तित्व को भूलकर। क्या आप अपनी नन्ही परी के लिए सिर्फ यही सोचते हैं? मेरी गुजारिश है हमारी बहन-बेटियों से भी कि खुद की अहमियत को समझें। पढाई लिखाई कर के स्वयं अपने पैरों पर खड़ी हो तब विवाह करें। विवाह करके अपने जीवनसाथी के कदम से कदम मिला कर गृहस्थी की गाड़ी को चलायें। एक दूसरे के पूरक बनें। एकदूसरे का भावनात्मक सम्बल बने, बोझ नहीं।

सभी अभिभावकों से अनुरोध है कि अपने बच्चों में भेदभाव ना करते हुए उन्हें समान अवसर दें पढ़ने का और बढ़ने का। बहू लाइए तो उसके साथ वैसा ही व्यवहार कीजिये जो आप अपनी बेटी के लिए उसकी ससुराल वालों से चाहते हैं।

इस दिवस के मौके पर सभी बहनों और बेटियों से मैं बस यही कहना चाहता हूँ कि अपनी अहमियत समझिये और समाज में खुद को स्थापित करिये। यूँ ही घुटने टेकती रहेंगी तो कोई आपको उठने ही नहीं देगा। पुरुष वर्ग आपके दुश्मन नहीं हैं उनसे लड़ने की बजाय, उनका विरोध करने की बजाय साथ चलना सीखिये। क्योंकि दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। पत्नी बनें तो सहचरी बनें, बहू बनें तो अपने से बड़ों का सम्मान करें, माँ बने तो अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दें। अपनी गरिमा के साथ और आत्मविश्वास के साथ अपनी क्षमता का उपयोग करें और अपनी नजरों में, अपने माता-पिता की नजरों में, अपने पति की नजरों में और अपने बच्चों की नजरों में सम्मान पाएं।

मैं दूसरे पहलू पर अगर बात करूँ तो

सरकार की तरफ से हर साल महिला दिवस पर बड़े-बड़े से विज्ञापन जारी किए जाते हैं और हमेशा इस दिन नई-नई योजनाएं व घोषणाएं तक की जाती हैं।

वहीं समाचार पेपरो में कहीं पांच साल की मासूम बच्ची तो कहीं सात साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म की शर्मनाक वारदात देखने को मिल रही हैं, हर साल यूहीं कागजों में, समारोहों में, फोटों में महिला दिवस मनता रहेगा, और यूं ही मासूम बच्चियों के साथ हैवानियत होती रहेगी, सारी योजनाएं व घोषणाएं कागजों में ही धरी होकर रह जाती हैं।

जब तक दुष्कर्म को लेकर कोई सख्त कानून नहीं बन जाता।

वैसे हमारी सरकार को सांसदों, विधायकों व अधिकारियों को ज्यादा से ज्यादा सुविधाएं व लाभ दिये जाने से फुर्सत मिले तब कहीं जाकर मासूम बच्चियों के साथ दुष्कर्म पर प्रभावी कानून बन पायेगा।

क्या मासूम बच्चियो के साथ दुष्कर्म करने वाले आरोपियों को सख्त सजा संबंधित कानून बनाने के लिये इस पर बहस होना जरूरी नहीं है या सिर्फ बाकी मुद्दे ही बहस के योग्य हैं। ईश्वर नें सृष्टी को दो भागों में विभक्त किया पुरुष को बल प्रधान और नारी को भावप्रधान बनाया।

आज तक तो हमारे समाज में बल की महत्ता रही है लेकिन धीरे धीरे सभ्य होते होते ताकत की जरुरत कमतर होती जा रही है और भावशक्ति का महत्व दिनों दिन बढ़ता जा रहा है।

यदि पुरुष को जड़ जगत का राजा कहा जाए तो नारी चेतन जगत की रानी है। साथ भी ये भी साफ होता जा रहा है कि चेतन जगत की शक्तियां जड़ जगत से कई-कई गुना अधिक है

आज नारी दिनों दिन अपेक्षाकृत अधिक सशक्त होती दीख रही है।

इससे मैं पूरे दावे के साथ कह सकता हूँ कि आने वाला कल नारी प्रधान ही होगा!

शिशुपाल यदुवंशी (म.प्र.पुलिस)

नवीन जैन अकेला

उत्तरदायित्व

विधवा रूक्मणी ने जैसे ही कोरोनावायरस फैलने और शहर बंद होने की खबर सुनी अपनी जमापूंजी से घर का सामान लाई और घर में कैद हो गई।

अकेली थी शादी के साल भर बाद ही एक्सीडेंट में पति का देहांत हो गया। उसकी दुनिया ही वीरान हो गई। लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। एक सिलाई मशीन खरीदी और आत्मनिर्भर हो गई। उसके पति को सूती साड़ियों बड़ा शौक था। उसकी लाई साड़ियां बक्से में भरी पड़ी थी जिन्हें रुक्मणि एक बार भी पहन नहीं पाई थी। जब भी रुक्मणि बक्सा खोलती इन साड़ियों को देखकर उसकी आंखें छलछला जाती। लेकिन आज बक्सा खोलते हुए उसकी आंखों में एक अजीब सी चमक थी उसने बक्से में रखी सभी नई कोरी साड़ियों के मास्क बनाकर जरूरत मंदों में बांटने का निर्णय कर लिया था।

आओ, हम एक इतिहास जी लें

ऋषिकेश वैद्य

पार साल जब तुम जयपुर गईं थीं
तब वहाँ से तुमने
एक तस्वीर ले भेजी थी
और लिखा था....
'तस्वीरें बोलती हैं,
यदि तुम सुन सको!'

सच कहूँ
तब तुम्हारी बात,
बिल्कुल समझ नहीं आयी थी
लेकिन आज...
जब मोबाइल के हैंग होने और अलर्ट आने पर
तस्वीरें डिलीट करने बैठा
तो ये तस्वीर
खुद ही मुझसे बातें करने लगी।

शोख रंग से सजी एक स्त्री की पीठ।
मेहनतकश होने का सबूत देती
वृद्ध हो रही काया,
चाँदी का मोटा कड़ा पहने एक हाथ,
हाथ में हरकत करता लौहे का चिमटा !

और उधर उस स्त्री के सामने...
मुस्कुराता हुआ एक चेहरा
आँखों पर ऐनक, सिर पर लिपटा गमछा
.....क्लीन शेव।
गौर से देखो तो भ्रूमध्य पर
एक हल्का केसरिया टीका।

बन चुकी रोटियाँ
आटे से सने हाथ !
शायद...
अब दाल उबालने
और सब्जी छौकने की तैयारी है।

मन में खयाल आया
कि खुसरो, मीर और गालिब ने भी
अपने जीवनकाल में
कभी न कभी ऐसे दृश्य देखे ही होंगे।
पता नहीं उनके मन में
तब क्या उभरा होगा !
लेकिन सच कहूँ,
मुझे तो ये तस्वीर देख कर
सिर्फ तुम्हारी याद आई।

कहते हैं कि उम्र अनुभव की निशानी होती है
चेहरे की हर झुर्री...
एक तजुर्बा होता है,
लेकिन मुझे लगता है,
कि उम्र कहानियों का पिटारा होती है।
हर सलवट के नीचे
एक छिपी हुई याद होती है।
वो याद,
जिसका सिर्फ उस व्यक्ति से ही सरोकार होता है
जो उस उम्र को जीता है।
वो कुछ बातें,
जिन्हें किसी से साझा नहीं किया जा सकता,
लेकिन उनको याद करो
तो कभी मुँह में गुड़ की डल्ली घुल जाती है
या कभी जबान पर कसैला स्वाद उभर उठता है।

मैं उन पुरुषों की खोज में हूँ प्रिये
जिनके हाथों पर
आटा गूँथने और रोटियाँ बेलने के निशान मौजूद हों।
मैं उन स्त्रियों को भी ढूँढता हूँ
जो हाथ में चिमटा लिए
पीठ करके,
आगत औ अनागत के भय से मुक्त
चूल्हे पर रोटियाँ सेंकती रहें।

अच्छा ये तो बताओ
गरम-नरम रोटियों से
क्या तुम्हारी कोई याद जुड़ी है ?
मुझे अक्सर ऐसी रोटियाँ देखकर
कच्चे आम और प्याज की
गुड़वाली चटनी याद आती है।

दरअसल, सपनों का ताअल्लुक
किसी बड़ी इमारत, चमचमाती गाड़ी
या शान-ओ-शौकत से बिल्कुल नहीं होता।
हम तो यों भी छलावे में जिया करते हैं।
सपनों का ताअल्लुक रोटी से होता है।
सपनों का ताअल्लुक गेंद से होता है।
सपनों का ताअल्लुक चाँद से भी होता है...
और सपनों का ताअल्लुक पृथ्वी से होता है।
चाहे फिर, वो कोई गरीब हो,
बच्चा हो, प्रेमी हो या कि कोई नश्वर जीव!

इतिहास और कुछ नहीं,
सिर्फ जी लिया गया वर्तमान है!
आओ...हम एक इतिहास जी लें।
ताकि जब हम,
दादा-दादी, नाना-नानी बन जाएँ
तो तीसरी पीढ़ी से कह सकें
कि हमने...
सन दो हजार बीस के मार्च के महीने में
एक सपने को जीया था !

तुम्हारा
देव

जयकृष्ण चांडक 'जय'

ग़ज़ल

मुश्किलों के हल निकालो बैठकर,
जीने के कुछ पल निकालो बैठकर।

जोड़कर हाथों को बोलो प्रेम से,
पेशानी के बल निकालो बैठकर।

नागों के पहरे लगे हैं आजकल,
कैद से संदल निकालो बैठकर।

मस्तियां बाजार में मिलती नहीं,
घर में ही हलचल निकालो बैठकर।

तोड़कर विश्वास कुछ न पाओगे,
मन से अपने छल निकालो बैठकर।

नफरतों की बारिशें थम जाएंगी,
प्यार के बादल निकालो बैठकर।

होंगे 'जय' साकार सब सपने यहां,
कोशिशों के फल निकालो बैठकर।

डॉ शम्भु शलभ

अनुभूति दंश

हवा के साथ कुछ देर सांस थमी भी है
पत्थर सी आंखों में कुछ गलतफहमी भी है

सिर पर बोझ की गठरी तन ढांचा एक ठठरी
कांपते ओठों में मगर कुछ नमी भी है

कभी भूख से कभी प्यास से तो कभी
अपनेआप से लड़ता पागल मन वहमी भी है

खामोश है हवा परिंदे पड़े हैं गुमसुम
गुंगी दुपहरी की घड़ी सहमी सहमी भी है

बाहर तेज धूप भीतर खौल रहा है लावा
चेहरे पर दर्द की स्याही जमी भी है

डरावनी लगती है पीपल की घनी छांव
सूखे दरख्त का साया लाजिमी भी है

केटी दादलाणी

ग़ज़ल

न जाओ दूर आओ पास तो ये दिल संभल जाये
अगर तुम लौट आओ तो वही खुशबू बिखर जाये

जमाना आज चलता है अंधेरी राह पर गुमसुम
कदम ऐसे बढ़ाओ राह गुलशन सी संवर जाये

चलेंगे साथ सारे बस नियम हो साफ सुथरे ही
बने सिद्धांत जीवन के बुराई डूब मर जाये

मिला है सारथी ऐसा निभाना साथ जीवन भर
अश्वमेध यज्ञ जीतने का ही निराला आ हुनर जाये

तुम्हारे पांव कांटो पर चले चढ़ लो पहाड़ों पर
विजय विश्वास की है आज कुंठा से उबर जाये

इरादा पार जाने का किया है अब नहीं रुकना
धराशायी घिनौनी चाल चकनाचूर हो जाये

अमित पाराशर इश्क

मेरी आरज़ू कि बस उसी की झलक देखूँ..
पर मुझे इजाजत इतनी है कि पलक देखूँ..

ख्वाबों में ख्वाब बनके उभरती है रात भर..
बताइये कि आखिर ख्वाब कब तलक देखूँ..

अपनी रसभरी निगाहों से वो ताकते है मुझे..
उन की आँखें देखूँ या गालों पे अलक देखूँ..

समंदर सामने है और रूह की बढ़ती प्यास..
खारे का खौफ रखूँ या सूखता हलक देखूँ..

करीब आते ही तन कम्पन करने लगता है..
हाथ मिलाते कैसे चुम्बन की ललक देखूँ..

मेरी आरज़ू कि बस उसी की झलक देखूँ..
पर मुझे इजाजत इतनी है कि पलक देखूँ..

वसुंधरा राय

भर कर साँसो में घुटन, बन गये हो अंजान।
इँसानियत को छोड़ कर, ले ली कैसे जान।।

चीनी की करतूत ये, मानव है बेहाल।
पड़ गया है संसार में, कैसा ये आकाल।।

किया कपट तुमने यहाँ, मन को देकर पीर।
दिखती प्रलय यहाँ-वहाँ, रोग चुभाते तीर।।

दूर दूर यूँ हो गये, ऐसा किया प्रहार।
बाँट दिया तुमने जहर, वसुधा है लाचार।।

नहीं फलेगा छल-कपट, हैं तो कई प्रमाण।
रावण ही हारे यहाँ, राम हरे हैं प्राण।।

ऋषभ तोमर

राधे राधे

जब-जब तेरे पैरों में, ये रुनझुन पायल बाजे है
हाल कहूँ क्या इस दिल का ये दिल तो राधे राधे है

चाहत की गहराई जाकर, चाहे तुमको ये अंतर्मन
साँसों की इस माला को, तेरे नाम की डोरी बांधे है

तुम बिन पागल से नयना है कैसे तुमको मैं बतलाऊँ
चंदा की तरह रातों में तेरी याद में हम भी जागे है

तुमको मुझसे मुझको तुमसे बांधे जो सातो जन्म तक
फिर भी चाहत के बंधन को, बोले क्यूँ कच्चे धागे है

राधा के युग से रीत है ये, जग में प्रेमी न मिल पाते
इसलिये न सोचो प्रियवर ये, हम दोनों यहाँ अभागे है

ये प्राण शजर पतझड़ झेले, कारण बस इसका ये ही है
एक दिन मधुमास ले आओगी, मुझसे ये मिलन के वादे है

तुम फोन पे मुझसे पूछती हो कैसे हो ऋषभ बतलाओ जरा
तब हाल ए दिल समझाऊं कैसे, ये रूह जिस्म सब आधे है

कृष्ण कुमार सिसोदिया

प्यारा मेरा गाँव है

कोरोना नें फैलाया जब,
शहर में अपनें पाँव है।
लगता दुनियाँ भर से अच्छा,
प्यारा मेरा गाँव है।।

खाने पीनें की चीजें,
आसानी से मिल जाती हैं।
धीमी मंद सुगंध हवायें,
सबके मन को भाती हैं।
पंक्षी के कलरव हर घर में,
घने पेड़ की छाँव है।। लगता दुनिया..

सबकी अपनी अपनी राहें,
अपने अपने काम हैं।
हाथ जोड़ कर यहाँ दूर से,
करते जय जय राम हैं ।
भोले भाले लोग यहाँ के,
नहीं पेंच और दाँव है।।लगता दुनिया..

छोटी पगडंडी से चलकर,
खेतों तक हो आते है।
देख देख कर फसल खेत की,
सपनों में खो जाते हैं।
खुले खेत खलिहान यहाँ पर,
अमराई भी ठाँव है।। लगता दुनिया..

तुम्हें देख मैं भी हंस लूंगा

विजय कनौजिया

तुम्हें मिले खुशियां झोली भर
मैं तो देख उन्हें जी लूंगा
आपकी मुस्कानों की खातिर
जीवन भर मैं तो रो लूंगा..।।

जीवन का माधुर्य तुम्हीं से
तुम्हीं से है इस मन को राहत
तुम बस मार्ग दिखाते जाना
पद चिन्हों पर मैं चल लूंगा..।।

कंधे पर हो हाथ आपका
हर मुश्किल से लड़ जाऊंगा
तुम बस यूं उत्साह बढ़ाना
मैं जीवन यूं ही जी लूंगा..।।

मिलता है सम्बल तुमसे ही
जीवन का आधार तुम्हीं हो
तुम बस अपनापन ये रखना
हर पथ पर मैं यूं चल लूंगा..।।

सभी गिले शिकवे मिट जाएं
प्रेम पल्लवित सदा रहे
तुम बस यूं मुस्काते रहना
तुम्हें देख मैं भी हंस लूंगा..।।

संस्मरण

नौशाद वारसी

शनिवार के दिन सभी को घर जाने की जल्दी होती थी, ट्रेन हीं घर जाने का एक मात्र साधन थी, कार्य समाप्त करके बेतिया स्टेशन पर पहुंचने की उत्सुकता होती थी। ०१.०० बजे हमलोग स्टेशन पहुँच गए, ट्रेन की टिकट लेने के पश्चात हम प्लेटफार्म पर प्रवेश कर गए, मै अपने अन्य दो मित्रों की प्रतीक्षा करने लगा। प्लेटफार्म पर एक तरफ भीड़ थी, जाकर देखा तो एक व्यक्ति लोगो का मनोरंजन कर रहा था, यह व्यक्ति प्लेटफार्म पर रहकर अपना जीवन-यापन करता था, अपने आप को लालू प्रसाद यादव का मुँह बोला बेटा कहता था, जब तक ट्रेन नहीं आजाए तब तक लोगो की भीड़ इन्ही के साथ मनोरंजन करती थी। १५२१६ नरकटियागंज से मुजफ्फरपुर जाने वाली इंटरसिटी एक्सप्रेस के आने की सूचना माइक से मिलने के बाद यात्रियों की भीड़ ट्रेन की ओर देखने लगी। मेरे दो साथी भी तब तक प्लेटफार्म पर आ गए थे, यात्रियों की संख्या ज्यादा होने के कारण कुछ लोग ट्रैक के दोनों तरफ लाइन लगा लिए। ट्रेन आने के बाद, हमलोग भी बैठने के लिए खाली सीट खोजने लगे। ट्रेन धीरे धीरे चल ही रही थी कि कुछ लोग रुमाल फेंक कर सीट रिजर्व करने लगे तो कुछ महिलाएं बोल कर ही अपनी सीट रिजर्व करा लीं।।

हमलोगों को भी थोड़ी प्रतीक्षा करने के बाद सीट मिल गयी, ट्रेन सीटी की आवाज देते हुए आगे बढ़ जाती है कुछ लोगो के साथ सीट को लेकर बहस की आवाज आने लगती है, आज गर्मी भी बहुत थी, पंखा का आनंद लेते हुए वार्तालाप का दौड़ चलता है, कोई राजनीति पर चर्चा, तो कोई ट्रेन लेट आने पर चर्चा करने लगता है। कुछ यात्री चर्चा में भाग लेते हैं, कुछ यात्री चुप रहना ही बेहतर समझते हैं। सगौली जंक्शन आने वाला था तब तक टीटी मेरे पास आ पहुंचा, मैंने टिकट दिखाया, टीटी टिकट पर कलम से क्रॉस करके दे दिया।

सामने सीट पर बैठी महिला से टिकट माँगा, महिला ने कहा मेरे पति के पास है टिकट, पति बाथरूम गए हैं। टीटी ये सुनकर आगे की ओर बढ़ जाता है, मेरा ध्यान उस महिला की तरफ जाता है, देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे महिला किसी सरकारी नौकरी में थी, सगौली जंक्शन से ट्रेन के प्रस्थान करते हीं उस महिला के मोबाइल में कॉल आने का रिंगटोन बजता है, गपशप का दौर कुछ धीमा पड़ जाता है, महिला कॉल रिसीव करती है जवाब में कहती है मोतिहारी स्टेशन अब पहुंचने वाली हूँ, फिर कहती है बच्चे लोग क्या कर रहे है, आज रात खाने में क्या बनेगा, और आप सब्जी लेकर आने के बाद मुजफ्फरपुर जंक्शन समय से पहुँच जाइएगा। कॉल समाप्त होने के बाद मोबाइल को पर्स में रखती है, फिर पर्स से निकाल कर कुछ खाने लगती है। और मै सोचने लगता हूं, कॉल करने वाला पति है या ट्रेन मे कोई पति साथ में है? क्यूंकि बेतिया से मैंने देखा कोई पुरुष इनके पास आया ही नहीं था।

ट्रेन मुजफ्फरपुर पहुँच गयी, महिला यात्री उतर कर जाने लगी बिलकुल बिंदास, मै अपने मित्रों से बोला, देखो उस महिला को,उसने टीटी से कहा कि उसका पति बाथरुम मे हैं और टिकट उनके पास है, पर इसके साथ तो कोई भी नही है, मेरे मित्र हंसने लगते हैं और कहते है इनका पति इस ट्रेन में नहीं है, टीटी को बेवकूफ बनाई है, बेटिकट यात्रा कर रही थी, सरकारी नौकरी करके, सरकार को ही चूना लगा रही है। मै आश्चर्य में था मुझे विश्वाश नहीं हो रहा था। मेरे साथी वैशाली की ओर चले गये, और मै समस्तीपुर के लिए ट्रेन का इंतेजार करने लगा।

मीनाक्षी सुकुमारन

लॉकडाउन

अरे भाग्यवान सुनती हो न मेरे पास कोई काम रहा न ही तुम अपने काम पर जा पा रही हो इतने दिन गुजारा चलेगा कैसे। राधा भी तमतमाती बोली मुआ इस लॉकडाउन ने तो हमारी किस्मत, रोजी रोटी पर ही ताला लगा दिया है। ऊपर से मालिक मकान खोली करने को कह रहा है सड़क पर कहां चलें सामान और बच्चों को लेकर। ये तो सब बड़े लोग हैं लात तो हमारी रोजी रोटी और ठिकाने पर पड़ी। इस का दर्द ये मुआ बड़े लोग और लॉकडाउन क्या जाने। वैसे ही दुःख कम थे जो ये कहर हम गरीबों पर टूटा। मैडम जी ने भी एडवांस देने से मना कर दिया क्योंकि सोसाइटी में आने पर रोक है सभी कामवालियों की और आपकी तो फैक्टरी ही बंद है।

तो आगे काम भी रहेगा या नहीं ये ही नहीं पता तो पगार क्या मिलेगी। दोनों एक दूसरे को नम आँखों से एकदूसरे को देख मासूम बच्चों का सोच हिम्मत हारे जा रहे थे, करें तो क्या करें इन हालातों से उभरने के लिए। क्या किसी का भी उत्तरदायित्व नहीं बनता हम गरीबों के प्रति? कोई हमारे लिए भी सोचे? देश हो या अमीर लोग उन्हें क्या दिक्कत चाहे बंद महीना भर हो या २० दिन। हम जैसे भाई बहन जो काम पर जा नहीं पा रहे, जिनके काम छूट गए वो क्या करे सिर्फ फाके और कोसे अपनी किस्मत को।

अर्चना जैन

दुविधा

रविवारीय कॉलम समाज सेवा की शुरुवात घर से पढ़ रही थी शुभ्रा। उसमे लिखा था कि घर मे काम करने वाली बाइयो के काम मे सहयोग करना भी एक तरह की समाज सेवा ही होती है। शुभ्रा के मन को ये बात छू गई और उसने बाई को सहयोग करना प्रारंभ कर दिया। बाई बर्तन मांजती तो वो धोने लगती। वो झाड़ू लगाती तो शुभ्रा पोंछा करने लगती।

उसे बड़ा सुकून मिलता। धीरे धीरे बाई की आदत पड़ गई। एक दिन शुभ्रा के घर में बहुत से मेहमान आ गए। उसका काम बढ़ गया। बाई आई तो वो उसके साथ बर्तन धुलवाने नहीं जा पाई, पोंछा भी नहीं लगा पाई। मेहमानों के जाने के बाद वह बुरी तरह थक चुकी थी। पर बाई ने बर्तन मांज के बिना धुले ही रख दिये थे और झाड़ू लगाने लगी थी।

शुभ्रा ने कहा आज तू बर्तन भी जमा देना मैं बहुत थक गई हूं।

'मैं नई जमा सकती मैडम।मुझे दूसरे घर मे भी काम करना है।और अभी तो बर्तन धुले भी नहीं। रोज आप धोती हो तो मैंने रख दिये हैं।'

'अरे मौसी वो तो मैं आपकी मदद कर देती थी। पैसे तो मैं आपके पूरे काम के देती हूं न'

'देखो मैडम आप बर्तन खुद धोती थी तो मुझे लगा मेरे धुले बर्तन आपको पसंद नहीं।इसलिये आप धोती है'

इस बहस के बीच बाई की झाड़ू लग चुकी थी और वो बोली

'मैं जाती है मैडम'

'अरे पोंछा भी लगा न. मेहमानों के आने से घर कितना गंदा हो गया है' शुभ्रा ने कहा।

'वो तो आप लगाएगी न मैडम जैसे रोज लगाती है' बाई झाड़ू पटक के चलती बनी

शुभ्रा कशमकश में थी कि आगे से समाज सेवा के नाम पर किसकी मदद करे और किसकी नहीं। तभी जअ पर समाचार वाचिका की आवाज मुखर होने लगी

'राजधानी में बाइयो की विशाल रैली, बेरोजगारी भत्ता उन्हें भी दी जाए, साथ ही बोनस, और पेंसन भी की मांग..

धैर्य

सीमा जैन

मीनाक्षी अपनी तीसरी मंजिल के फ्लैट की बालकनी में कुर्सी पर बैठी नीचे पार्क को देख रही थी। एक भी बच्चा या बड़ा नजर नहीं आ रहा था। उसे अकेलेपन और बेबसी के कारण चिड़चिड़ाहट हो रही थी। पति को गुजरे दो साल हो गए थे और बेटा चार महीने पहले ही पत्नी और दोनों बच्चों के साथ कंपनी की तरफ से विदेश चला गया था। अकेले रहने में अब तक उसे कोई परेशानी नहीं हुई थी। सोसाइटी के लोग आते जाते रहते थे। वह स्वयं भी नीचे जाकर बैठ जाती थी, रौनक देख कर मन बहल जाता था। लेकिन अभी एक हफ्ते से बच्चों का शोर-शराबा, पुत्र अमित की हाय तौबा और बहू की झुंझलाहट, सब बहुत याद आ रहे थे। इतना सन्नाटा। खीझ के कारण फोन और वाई-फाई बंद कर दिया था तीन दिन से। तभी दरवाजे की घंटी की आवाज आई। कौन होगा? करोना की वजह से सब कैद हो गए थे अपने अपने घरों में।बस सुबह चौकीदार एक पैकेट दूध और कुछ सब्जी दरवाजे पर रख जाता था। उसकी शक्ल देखे भी तीन-चार दिन हो गए थे।

दरवाजे से बहुत दूर सामने वाले फ्लैट की प्रीति खड़ी थी। मुंह पर मास्क और ग्लव्स पहने किसी दूसरे ग्रह की लग रही थी। मीनाक्षी ने बेरुखी से पूछा, 'क्या है?'

वह प्यार से बोली, 'क्या हुआ आंटी जी, आपने फोन और कंप्यूटर बंद क्यों कर रखा है? अमित का फोन मेरे पास आया था। चिंता के कारण बहुत परेशान है।'

मीनाक्षी मुंह बनाते हुए बोली, 'अच्छा फिक्र हो रही होगी, बुढ़िया मर तो नहीं गई? नहीं करनी मुझे किसी से बात। तू भी कितनी बुरी है, ना खुद आती ना बच्चों को भेजती है। पहले तो कैसे प्यार जताती थी। सब स्वार्थी है। मुझसे तुम लोगों को क्या खतरा है?'

प्रीति समझाने वाले लहजे में बोली, 'आंटी जी हमें आप से खतरा नहीं है, आपको हमसे खतरा है। मेरे पति को तो ड्यूटी के कारण बाहर जाना पड़ता है। मैं उन्हें बिलकुल अलग कमरे में रखती हूं। लेकिन फिर भी सावधानी तो रखनी पड़ती है। अब गुस्सा थूक दो, अमित से बात कर लो। वह बहुत परेशान हो रहा है।' मीनाक्षी ने कमरे में आकर कंप्यूटर चालू किया तो अमित और तीनों के चिंतित चेहरे नजर आए। अमित गुस्से में बोला, 'सब कुछ ऑफ करके क्यों बैठी हो? आपको पता है कितनी चिंता हो रही थी हम सबको?'

मीनाक्षी टेढ़ा मुंह बना कर बोली, 'और तुझे पता है अकेले रहना कितना मुश्किल है? नहीं करनी मुझे किसी से बात।'

अमित की आवाज से अभी भी नाराजगी नहीं गई थी, 'पेपर तैयार हो गए हैं। यह करोना का झंझट खत्म होगा तो आपको यहां बुला लूंगा। आपका यही अड़ियलपना अच्छा नहीं लगता है। कुछ समझना नहीं चाहती हो।'

मीनाक्षी अकड़ कर बोली, 'हां नहीं समझती, तू मेरा बाप मत बन।' तभी दस साल की पिंकी की आवाज आई, 'दादी डैड आपके पापा बन जाते हैं और हम दोनों आपके भाई बहन। चलो ऑनलाइन लूडो खेलते हैं, बहुत मजा आएगा।' पोती को देख मीनाक्षी की आवाज ढ़ीली हो गई, 'कैसी है? बहुत मिस कर रही हूं। आज मेरा बर्थडे है और कोई नहीं है मेरे पास।'

सनी बोला, 'हम हैं ना दादी। आपके लिए केक बना कर बैठे हैं सुबह से और आप मुंह फुला कर बैठी हो। आप फूंक मारो हम केक काटते हैं।' कुछ देर बात करने के बाद अमित बोला, 'मां धैर्य रखो, खुद ही तो कहती हो उम्मीद पर दुनिया टिकी है। अच्छा मेरे कैक्टस का पौधा कहां है? दिखाना कैसा है? बिल्कुल रेयर पौधा है।' मीनाक्षी बिगड़ती हुई बोली, 'मैं छत पर रख आई थी। तूने कहा था उसको देखभाल की कोई जरूरत नहीं है।' अमित माथे पर हाथ मारते हुए बोला, 'अरे मेरा मतलब था परेशान नहीं होना पड़ेगा उसके कारण। यह थोड़ी ना कहां था कहीं भी फेंक आना।' फिर दुखी स्वर में बोला, 'पता नहीं सही सलामत है की नहीं।'

कंप्यूटर पर बात खत्म कर मीनाक्षी छत पर गई तो देखकर दंग रह गई। कैक्टस पर फूल खिला हुआ था। सोचने लगी। सृष्टि में सब अपनी प्रकृति के अनुसार व्यवहार करते रहते हैं चाहे जैसी भी स्थिति में हो। फिर वह क्यों धैर्य नहीं रख पा रही थी।

कैक्टस के पौधे को लाकर उसने अपनी खिड़की पर रख दिया। उसके लिए उम्मीद की किरण बन गया था वह नन्हा सा पौधा।

स्नेह लता

लड़ती रहूँ यूँ ही

मैं बस लड़ ही रही हूँ,
धरती पर कदम रखते ही,
मैं बस लड़ ही रही हूँ,
अपेक्षाएँ खोकर भी लड़ रही हूँ,
तमन्नाएँ खोकर भी लड़ रही हूँ,
अधिकार खोकर भी लड़ रही हूँ,
मानो एक संघर्ष के साथ हर पल
जी रही हूँ,
कभी अपने आत्मसम्मान के लिए,
तो कभी अपनी पहचान बनाने के
लिए,
एक तरफ तो ये जग कहता है मैं
ही सृष्टि की जननी हूँ,
तो क्या एक जननी को भी अपनी
पहचान के लिए लड़ना पड़ता है,
क्या घुट-घुट उसको भी जीना
पड़ता है,
इसी दुविधा में स्वयं को मैं हर वक्त
पाती हूँ,
मेरी बात अभी खत्म न हुई अब
आगे की गाथा बताती हूँ,
क्या मेरा अपना कोई घर कभी
हुआ ही नहीं,
जहाँ अपने मन से मैं चल पड़ूँ कहीं,
जहाँ मेरा जन्म हुआ उस घर पर
मेरा कोई अधिकार नहीं,
मेरा कोई किरदार नहीं,
क्या अधिकार तभी होगा जब धन
कमा पाऊँ मैं कभी?
क्या बिना धन मेरा कोई वजूद नहीं?
क्या स्वतंत्र जीना मेरा अधिकार नहीं?
क्या मैं जीवन भर लड़ते रहूँ यूँ ही?

डी कुमार अजस्र

'करोना' हमसे डरेगा....

खुशियों की बिसातें होंगी,
रौनकें हर अहाते होंगी।
अंत 'करोना' का भी निश्चित,
गुजरे जमाने की बातें होंगी।

आज के दम पर कल को मिलेंगे,
उसको भी हसीन करेंगे।
कुछ पल की खामोशी है यह,
बाद फिर से बारातें होंगी।
खुशियों की बिसातें होंगी,
रौनकें हर अहाते होंगी।
अंत 'करोना' का भी निश्चित,
गुजरे जमाने की बातें होंगी।

कुछ तो समझो समय की हरकत,
आज रुकोगे तो कल संभलोगे,
खुद को सुरक्षित आज रखा तो,
कल दोस्तों की जमातें होंगी।
खुशियों की बिसातें होंगी,
रौनकें हर अहाते होंगी।
अंत 'करोना' का भी निश्चित,
गुजरे जमाने की बातें होंगी।

जैसे समय यह रुक सा गया है,
मातमी सन्नाटा पसरा है।
मृत्यु का डर तो सबको लगता,
पार कसौटी समझाते होगी।
खुशियों की बिसातें होंगी,
रौनकें हर अहाते होंगी।
अंत 'करोना' का भी निश्चित,
गुजरे जमाने की बातें होंगी।

आज समय कुछ ऐसा चला है,
आदमी-आदमी से डरने लगा है।
आज का डर भी जायज लगता,
कल फिर से मुलाकातें होंगी।
खुशियों की बिसातें होंगी,
रौनकें हर अहाते होंगी।
अंत 'करोना' का भी निश्चित,
गुजरे जमाने की बातें होंगी।

एक गलती से आफत आई,
मिलकर चलो अब इसे भगाएं।
काम आज तुम ऐसा करो ना,
गहरी खताएं बताते होंगी।
खुशियों की बिसातें होंगी,
रौनकें हर अहाते होंगी।
अंत 'करोना' का भी निश्चित,
गुजरे जमाने की बातें होंगी।

भागदौड़ से फुर्सत मिली है
घर का चलो कोई कोना सजाएं।
घर परिवार के साथ रहे तो,
दो सुख-दुख की बातें होंगी।
खुशियों की बिसातें होंगी,
रौनकें हर अहाते होंगी।
अंत 'करोना' का भी निश्चित,
गुजरे जमाने की बातें होंगी।

खेल मौत का आप रुकेगा,
इक दिन 'करोना' हमसे डरेगा।
'डी कुमार' की एक दुआ बस,
मानवी सुबहें फिर सुहाते होंगी।
खुशियों की बिसातें होंगी,
रौनकें हर अहाते होंगी।
अंत 'करोना' का भी निश्चित,
गुजरे जमाने की बातें होंगी ।

श्रीमती मधु तिवारी

कलयुग में सब देख रहे,
कल्कि रूप को धार हरी।

विनती बारंबार हरी।
फिर से लो अवतार हरी।

कोरोना को करो खतम,
जग में हाहाकार हरी।

राम रूप में कितनों का,
किया हुआ उद्धार हरी।

कृष्णा बनकर तारे हो,
सबको लिया उबार हरी।

तारो आकर फिर से अब,
देख रहा संसार हरी।

पाप बोझ से दबी धरा,
हल्का कर दो भार हरी।

बढ़ते पापी भारत में,
आकर उनको मार हरी।

प्रेम-राग जो गाए थे,
करदे फिर झंकार हरी।

सब मिथ्या है जानूँ मैं,
तू ही जग में सार हरी।

यह जग तो भवसागर है,
तुम हो खेवनहार हरी।

नाम तुम्हारे जपने से,
लगता बेड़ा पार हरी।

मधु भी नाम रटे तेरी,
आकर उसको तार हरी।

मदन सोनी

क्या हमने अपने तमाम मुखौटे उतार फैंके है?

मुखोटे अभी उतरने बाकि है
प्रेम अभी भी छिपा है मुखोटों की ओट में
कवितायेँ भी सुप्त सी है प्रेम की अभिव्यक्ति बिना
दांपत्य हो या हो कोई प्रेम विवाह ...
मुखोटे यहाँ भी उतरना जरूरी है
मुखोटे पहन कर किया गया प्रेम
अक्सर जन्म देता है बिमारियों को
मुखोटों का प्रेम और उससें उपजी त्रासदियाँ
उम्रभर खुद ही ढोनी होती है हमें ...
विश्वास और सम्मान के चमकते चेहरे अक्सर
धूमिल हो ही जातें है इन मुखोटों के पीछे
टूटतें है चमकते मुखोटे,
अक्सर लड़ने-झगड़ने से
झगड़ना-लड़ना, इन मुखोटों का टूटना
बहुत जरूरी है प्रेम मय...
'कविताओं' के सृजन के लिए..!
पता नहीं ...
कब तोड़ पाऊँगा मैं भी ..
मेरे चेहरे पर चिपटे ये अलग अलग मुखोटे..?
सुनो
प्रेम के पूर्व झगडे में अक्सर
छिपना पड़ता है खुद मुझे भी
तुम्हारी ही तरह अलग अलग मुखोटों के पीछे..
पता नहीं, कब हम दोनों, निकलेंगे?
कमजोरियों के इन टीलों के पीछे से
कब दाम्पत्य मुक्त होगा हिंसा से..
कब नहीं बहाने होंगे, तुम्हें-मुझे...
अपनी आँख से आंसू..!
इन्तजार है..
इन्तजार है की,
कब तुम अपनी पीठ घुमाकर देखों मुझे
कब अंतरंगता बढे तुम्हारे मेरे मध्य की
कब,
दाम्पत्य का द्वंद्ध बदले स्वयं अपने ही
अन्तर्निहित छिपे 'प्रेम' में!
और कब मैं निहारूं...
तमाम मुखोटे हटा तुम्हें
अपने निस्वार्थ 'प्रेम' से..!
सुना..?

अंजुम रहबर

ग़ज़ल

तुम को भुला रही थी कि तुम याद आ गए
मैं जहर खा रही थी कि तुम याद आ गए

कल मेरी एक प्यारी सहेली किताब में
इक खत छुपा रही थी कि तुम याद आ गए

उस वक्त रात-रानी मिरे सूने सहन में
खुशबू लुटा रही थी कि तुम याद आ गए

ईमान जानिए कि इसे कुफ्र जानिए
मैं सर झुका रही थी कि तुम याद आ गए

कल शाम छत पे मीर-तकी-'मीर' की गजल
मैं गुनगुना रही थी कि तुम याद आ गए

'अंजुम' तुम्हारा शहर जिधर है उसी तरफ
इक रेल जा रही थी कि तुम याद आ गए

रुनुक-झुनुक बिछिया

अर्चना अनुप्रिया

सिर्फ पैरों का गहना न समझो
यह सुहाग की निशानी है,
ये शबिछियाश हम भारतीयों की
पवित्र संस्कृति पुरानी है...

महावर लगे पाँव ऊँगलियों में
जब बिछुआ पहनते हैं,
औरतों के साधारण स्वरूप भी
माँ भगवती में ढलते हैं...

बिछिया से पैरों का श्रृंगार कर
जब आती है गृहलक्ष्मी,
घर-घर में छा जाती हैं खुशियाँ
पूरी हो जाती है हर कमी...

बिछिया महज आभूषण नहीं है
इसका अपना विज्ञान है,
दबाती हैं कुछ ऐसी शिरायें ये
होता तन्दुरुस्त संतान है...

गृहस्थी, दायित्व, पवित्रता है यह
निश्छल प्रेम है पिया का,
बहू-बेटी का श्रृंगार है,बड़ा जलवा है
इस रुनुक झुनुक बिछिया का...

आरती बजाज 'मन'

खुशियाँ

दूर दूर तक नजरे दौड़ायी
पर खुशियाँ तो हो गयी कहीं लापता
तभी सुनाई दी खिलखिलाहट
मानो खुशियों की हो आहट
बोली मैं तो हूँ यही तेरे आस पास
तू ही मुझे ढूंढ नहीं पाया

अवसादों की काली छाया से
मन को क्षीण कर
गहरे तिमिर में डुबता गया
पर संभावनाओं के सूरज के
पीछे मैं खड़ी थी
पर तू नये सिरे से तलाश ही नही कर पाया

झुठे दिखावें मे अपने अहम से
भ्रम का मायाजाल रचता रहा
आत्मीयता से पगे रिश्तों में
मोहक मुस्कानों में
हौले हौले बरस रही थी मैं
वहाँ से तू भागता रहा
जीवन भर तेरे मेरे के फेर में
सूकुन के क्षणों को खोज ही नहीं पाया

नन्ही-नन्ही ख्वाहिशें पूरी होने के
अनमोल मुस्कराते लम्हों को भुलाता रहा
सब कुछ पा लेने की जद्दोजहद में
शिकायतों का पिटारा तो भर लिया
पर खुशियों की अठन्नी को नहीं खर्च कर पाया

तो सुनो ना
नन्हे नन्हे खुशियों के पल
संजोते जाईये
जीवन को बना उत्सव
मुस्कराने का जश्न मनाते रहिये....!

पिंकी परुथी 'अनामिका'

जिंदगानी

ख्वाब..
जश्न, जिन्दगी,
कभी पूरे,
कभी अधूरे..!
कोशिशें, कामयाबी,
गिरना, उठना,
टूटना और सँभलना,
जैसे, रेत में
भागते हुए..!
शोखियाँ, अदाएँ,
जवानी, दौलत,
जैसे निशानी हो..
टूटी चूड़ियों की...!
रिश्ते, शोहरत,,
चाहत, जागीर...
कागज की
कश्ती हो कोई...!
तोहफे, बन्धन,
गहराइयाँ,
और घर,
लम्बी कहानी
है इनकी...!
मौत, गम,
खूबसूरती, प्यार,
नयी शुरुआत
भी जरूरी...!
ये ही तो है
जिंदगानी,
मेरी और तुम्हारी...!

आरती डोंगरे

सुंदरी सवैया

डरना यह रोग बुरा सबसे मत हाथ मिला वरना दुख भारी।
रहना अपने घर द्वार सभी विपदा यह आन पड़ी अविकारी।
मुँह ढाप रखो अपना मत बाहर पाँव रखो सुन बात हमारी।
लड़ना इससे अब है हमको सब साथ चलो व्रत संयम धारी।१

प्रभु से विनती करते कर जोड़ हरो यह पीर सुनो बनवारी।
करता यह प्राण प्रहार नही विष से बचते जग के नर-नारी।
विपदा यह आज घिरी जग में इसका हल कौन करे अवतारी।
मन संयम धार रहो घर में यह एक उपाय बड़ा सुखकारी।।२

असफाक अली डॉन

कोरोना मधुशाला

कोरोना से डरा हुआ है
हर कोई पीने वाला
कैसे निकलूं घर से मन में
सोच रहा है मतवाला
सूनी सड़कें सूनी गलियाँ
सन्नाटा मदिरालय में
सिसक रहा है रीता प्याला
बिलख रही है मधुशाला

कभी जहां हर दिन सजती
थी मादक प्यालों की माला
कभी जहां चहका करता
था हर मदिरा पीनेवाला
मरघट जैसी खामोशी है
आंगन में मदिरालय के
विधवाओं सी गुमसुम बैठी
अपनी प्यारी मधुशाला

बड़े-बड़े पंडित दिनभर
जो करते थे प्रवचनमाला
कोरोना ने डाल दिया है
उन सबके मुँह पर ताला
बंद पड़े हैं मंदिर मस्जिद
गुरुद्वारे भी खाली हैं
मजबूरी में फेर रहें हैं
सब अपनी-अपनी माला

एक बार जिसके पड़ जाए
कोरोना की वरमाला
कितने भी हों इष्ट मित्र
पर एक नहीं छूने वाला
चाहे कितना ऊंचा पंडित
मुल्ला और रबाई हो
दूर-दूर सब रहते उससे
घरवाली साली-साला

बाजारें सब बंद पड़ी हैं
व्याकुल है पीनेवाला
डरा-डरा सा दिख रहा है
हर आने-जानेवाला
सदा चहकने वाले प्याले
पड़े हुए हैं औंधे मुँह
सोच रहा है बंद रहेगी
ऐसे कब तक मधुशाला

अपने घर में बैठ गया है
हर कोई देकर ताला
किन्तु चिकित्सक को देखो
वह है कितना हिम्मतवाला
कोरोना से पीड़ित होकर
दो आएं या सौ आएं
सबकी जान बचाने में वह
लगा हुआ है मतवाला

सावधान रहना है सबको
बच्चा बूढ़ा मतवाला
घर के भीतर रहो भले ही
बाहर पड़ जाए पाला
कोरोना की दया दृष्टि से
दूर रहो दुनिया वालो
बचा नहीं पाएगा तुमको
फिर कोई ऊपरवाला

बाहर निकलूं तो जोखिम
है कहता सबसे मतवाला
मरने से डरना बेहतर है
सोच रहा पीनेवाला
आग लगे मादक प्यालों
में पीने की अभिलाषा में
जान रहेगी फिर पी लेंगे
भाड़ में जाए मधुशाला

मास्क लगाकर घर से
निकला है बाहर जानेवाला
हाथों में भी ग्लव्स पहन
कर आया है वह मतवाला
और जेब में रखे हुए है
सिनेटाइजर की शीशी
बाल न बांका कर पाएगा
कोरोना इटली वाला

खांस छींक से सावधान है
हर कोई भोला-भाला
हाथ मिलाने में जोखिम है
समझ रहा है मतवाला
दूरी एक बनाकर सबसे
रखना बहुत जरूरी है
पड़े रहेंगे वरना जग में
हाला प्याला मधुशाला

चोर उचक्के परेशान हैं
अब क्या है होने वाला
हर कोई घर में बैठा है
बाहर से देकर ताला
धंधा पानी बंद रहेगा
कब तक इस कोरोना से
जल्दी इसका नाश करे
अब महादेव डमरू वाला

छेड़ छाड़ करने में अब तो
हिचक रहा है मतवाला
निर्भय होकर घूम रही है
इधर उधर साकी बाला
कौन कहे ये भी आयी
हो घूमघाम कर इटली से
लेने के देने पड़ जाएं
हो जाए गड़बड़ झाला

तितर बितर हैं सभी जुआरी
अब क्या है होने वाला
चाहे जितना फोन मिलावें
एक नहीं आने वाला
फेंट रहा है सूखे पत्ते
सारा दिन मजबूरी में
राम करे पड़ जाए इस
दुश्मन कोरोना पर पाला

कोरोना का रोना लेकर
बैठा है पीने वाला
चिंता मग्न पड़ा है घर में
वह सूखा सूखा प्याला
मित्र जनों का जमघट भी
अब नहीं लगा है अरसे से
मुरझाई सी बंद पड़ी है
बेसुध होकर मधुशाला

जिसको जीवन प्यारा
उसने घर में है डेरा डाला
भूल गया सब गश्ती मस्ती
मादक प्यालों की माला
कोरोना के डर से अपनी
बिसराई सब चालाकी
याद न आई चंचल हाला
भूल गया वह मधुशाला

जनता कर्फ्यू की महिमा
को समझ रहा है मतवाला
इसीलिए बैठा है घर में
हर कोई भोला भाला
अपने हाथों से करनी है
अपनी ही पहरेदारी
अपने जीवन का बनना है
सबका अपना रखवाला

डा. भारती वर्मा बौड़ाई

स्वच्छता में योगदान कोरोना का समाधान

स्वच्छता में योगदान अर्थात स्वच्छता के दायरे को और बढ़ाना, स्वच्छता पर और अधिक ध्यान देना... वास्तव में दवाईयों से अधिक स्वच्छता ही कोरोना को रोकने का सबसे बड़ा समाधान है।

हाथों को साबुन से बार-बार धोना, कहीं बाहर से आने पर, कहीं जाने पर, किसी वस्तु को छू लेने पर पहने हुए कपड़े एवं जूते-चप्पल बाहर ही धूप में छोड़ देना, बदले कपड़ों को धोना, जूतों को भी साफ करना, हाथों को धो लेने के बाद सीधे स्नान करना, तौलिए, रुमाल की सफाई का विशेष ध्यान रखना , नहाते समय पानी में डिटॉल मिलाना आदि बातों का ध्यान रख कर व्यवहार में लाना नितांत आवश्यक है।

घर में जिन-जिन वस्तुओं को हम छूते है उन्हें डिटॉल, साबुन के पानी, सैनिटाइजर से, कपड़े से संक्रमण रहित करते रहना चाहिए। प्रारंभ गेट की उस कुंडी से करें जिसे सबसे पहले छुआ जाता है। अंदर-बाहर दोनों ओर से, दरवाजे का हैंडिल, बंद करने की चटकनी, मेज, सोफे के हत्थे, खाने की मेज, कुर्सियाँ, नलों की टोंटियाँ, शौचालय का सिस्टम चलाने वाला बटन, फ्रिज का हैंडल, गैस, वॉशिंग मशीन आदि के बटन, बिजली का स्विच बोर्ड, इसके अलावा और भी कोई ऐसी वस्तु जिसे काम करते समय छूना पड़ता है उसे डिटॉल से साफ करते रहना चाहिए।

अब फल-सब्जियों के विषय में बात करें। ये अनेक हाथों से गुजर कर हमारे घर तक पहुँचती हैं। तो लाने पर इन्हें गर्म पानी में नमक डाल कर आधा घंटा डुबो कर रखें। उसके बाद अपने हाथ धोकर तब इनका प्रयोग करें।

स्कूटर, कार के हैंडल भी डिटॉल से साफ करें। कहीं जायें तो मास्क लगा कर जायें, सैनिटाइजर सदा अपने साथ रखें।

हमें यह जानकारी भी होनी चाहिए कि कोरोना का विषाणु लोहे पर आठ घंटे, एल्यूमिनियम पर तीन दिन और प्लास्टिक के ऊपर आठ दिन तक जीवित रह सकता है। इस प्रकार की चीजों को भी डिटहल से बराबर साफ करते रहना चाहिए।

इस स्वच्छता के साथ अपनी आंतरिक स्वच्छता भी आवश्यक है तो उसकी ओर भी ध्यान देना चाहिए। विटामिन सी का उपयोग आँवला, संतरा, कीनू, और नींबू के रूप में करते रहना चाहिए। पौष्टिक भोजन से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बनाये रखना चाहिए। व्रत-उपवास में फल, दूध और मेवों को लेना चाहिए।

प्राणायाम के माध्यम से शरीर, विशेष रूप से फेफड़ों और श्वसन तंत्र को स्वच्छ कर स्वस्थ रखें। इसके लिए भरस्रिका, अनुलोम-विलोम, उज्जयी, भ्रामरी और उद्गीत अवश्य करें। बाह्य एवं अंतस कुंभक जितना कर सकें करेंऔर अवश्य करें। फेफड़े मजबूत रहेंगे, कोरोना उतना ही दूर भागेगा।

हम सभी ने यह अनुभव किया होगा जब किसी कमरे, गाड़ी, महल, सिनेमाघर आदि में अधिक भीड़ होती है तो वायु प्रदूषित हो जाती है। अतः सामाजिक दूरी को बनाये रखना इस समय सबसे अधिक आवश्यक है। न भीड़ में जायें न भीड़ बढ़ायें। संयम और संकल्प के सहारे घर और कम से कम बाहर जा कर अपने कार्य संपन्न करें। घर में रहें, सुरक्षित रहें।

स्वच्छता के दायरे में अपने मन को भी शामिल करें। कोरोना से न डरें और न किसी को डरायें। इससे बचने के उपाय जिसे बता सकते हैं उसे अवश्य बतायें। विचारों को भी स्वच्छ और स्वस्थ रखें। अनावश्यक विरोध न करें। सरकार का और उसके कामों का विरोध तो बाद में भी किया जा सकता है। वैचारिक प्रदूषण से बचना भी इस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। जानने का प्रयास करना चाहिए कि किसी ने स्वार्थवश तो इसे नहीं फैलाया है। तथ्यों के आधार पर नीर-क्षीर विवेक से इस पर विचार करें और समझें। पूर्वाग्रहों,नारों, आंदोलनों आदि से प्रदूषित न होकर स्वच्छता के दायरे में रहें और इस दायरे को बढ़ायें। कोरोना ही नहीं, यह स्वच्छता की आदत हर परिस्थिति में अपना योगदान करेगी और आने वाला कल अधिक स्वर्णिम होगा।

कोरोना का समाधान तो डाक्टरों से अधिक हमारे पास है... घर में रहें, सुरक्षित रहें।

अब विश्व को है दिखाना

कृति गुप्ता

अरे!
डॉक्टर तो बस
कमाएँ पैसा अंधा
करते हैं दिन रात
ये डर का ही धंधा

अरे!
पुलिस वालों को
क्या ही कहना
गुंडों से बड़े हैं ये..
घूस इनका गहना

अरे!
सफाई कर्मचारी
कहाँ कोई काम करते
थक गया मैं तो अब
शिकायत करते करते

ये सोच, ये शब्द
गूँजते हैं समाज में
ढूंढते हैं हम सदा ही
खोट दूजे के काज में

पर आज जब आया
संकट देश पे भारी
इन्हीं तीन स्तंभों से
आस लगी है सारी!

कोरोना जैसी वीभत्स
फैली है जो महामारी
निपटने को है तैयार
ये वीर त्रिमूर्ति हमारी

डॉक्टर, पुलिस और
हमारे स्वच्छता सेनानी
आज भारत माँ के इन
वीरों की कीमत जानी!!

निकले हैं देश बचाने
सब मोह माया त्याग
इन वीरों को करो नमन
अब तो जाओ जाग

इनके जज़्बे का तुम
अब तो कुछ मान करो
ष्घरष् के ही अंदर बैठो
बस इतना एहसान करो

कोरोना को मिलकर
है अब तो बस हराना
भारत की एकता शक्ति
अब विश्व को है दिखाना

डॉ. सलिल समाधिया

घिनापन शुरू !!

जिम्मेदारी क्या होती है, नागरिक का कर्तव्य क्या होता है, Need of the hour क्या है, व्यवहारिकता क्या होती है, नैतिक दायित्व क्या होता है?

ये बातें जिस दिन भारत का बुद्धिजीवी जान लेगा, उस दिन देश की आधी समस्याएं खत्म हो जाएंगी!

मैंने पहले भी कहा था, फिर कह रहा हूं.. धरती का सबसे थर्ड क्लास आदमी है.. **'भारत का बुद्धिजीवी'**

सिवाए निंदा और नकार के कोई काम नही है इसे!

सब कुछ नियंत्रण में था.. तो इससे देखा नही जा रहा था.. क्योंकि निंदा के लिए कोई निवाला नही था!

अब मिल गया, मजदूरों का पलायन!

बांछे खिल गई इनकी, चेहरे चमक उठे, लकवाग्रस्त उँगलियां फड़कने लगीं व्हाट्सएप, फेसबुक के Keyboard पर!

दो दिन से देख रहा हूं, नकारात्मक और राजनीतिक एजेंडा से भरी पोस्ट्स का सैलाब टूट पड़ा है.. सोशल मीडिया पर!

श्वान को हड्डी मिल गई मानो!

आज शाम मैं कुछ और लिखने बैठा था, लेकिन यह लिख रहा हूं! क्योंकि जैसे ही फेसबुक खोला और एक सरसरी नजर टाईम लाइन पर डाली.. तो मन खट्टा हो गया.. मजदूर पलायन से संबंधित पोस्ट्स देख देखकर!

घिनापन शुरू हो गया!

वामपंथी, छांट छांट कर मोदी विरोधी पोस्ट लगा रहे हैं,

कांग्रेसी, गैर कांग्रेसी सरकारों के दोषारोपण में लग गया है! भाजपाई, सरकार के गुणगान में!

इस देश को मैनेज करना कोई हंसी खेल नही है!

बहुत कॉम्प्लेक्स संरचना है इसकी!

यहाँ रोड पर ठंड भी दौड़ती है, मारुति भी, महिंद्रा भी!

और उसी रोड पर मोटर सायकिल भी चलती है, सायकिल भी, पैदल भी , रिक्शा भी, गाय भी, कुत्ता भी, बैलगाड़ी भी!

आज से ७० दिन पहले इटली, ईरान, जर्मनी,, अमेरिका, स्पेन आदि सभी देशों में कोरोनावायरस के एक-दो केस ही ट्रेस हुए थे!

आज उन सब देशों में यह संख्या अस्सी हजार से उपर हो गई है !

अमेरिका में डेढ़ लाख के करीब!

वे सब थर्ड फेज में पहुंच गए हैं!

गनीमत है कि हम अब तक ३ तक फेज से बचे हुए हैं!

इस वक्त सकारात्मक विचारों की सबसे ज्यादा जरूरत है!

मैं पॉजिटिव सोच का व्यक्ति हूं !

मेरी सकारात्मक सोच की वजह से बहुत लोग मुझे भाजपाई समझते हैं! जबकि मुझे राजनैतिक मति तृण भर भी नही है!

न मैंने जीवन में कभी कोई लाभ कांग्रेस से लिया है, न भाजपा से, न वामपंथियों से!

न कभी लूँगा!

मुझे जो मांगना है, सीधे मालिक से मांगता हूं..बंदों से नही! और वह तत्क्षण देता भी है!

मैं तो पिछले तीन चुनावों से वोट भी नही दिया हूं!

किंतु बीते दिनों बहुत से बुद्धिजीवी, मुझे मोदी समर्थक समझकर मेरी वॉल से नदारत हो गए!

'सौ जाते हों..हजार जाएं..मेरी बला से'

निंदकों को सिर्फ निंदा चाहिए!

सरकार अगर लॉक डाउन नही करती .... तो क्यों नही किया?

कर दिया तो...पहले क्यों नही किया?

पहले कर दिया तो...जल्दबाजी में क्यों किया, योजना बना कर क्यों नही किया?

योजना बनाकर करती तो... ये समय योजना बनाने का नही है, तुरंत डिसीजन लेने का था?

bla--bla--bla--!

यानि शिव पार्वती, नंदी की कहानी की तरह..हर बात में नकार!

अब मुझे समझ आने लगा है कि भारत की विवाहित स्त्रियां इतनी झुंझलाहट भरी और बीमार क्यों होती हैं?

क्योंकि जो आदमी सरकार में १० दोष रोज निकालता है.. वह बीबी में रोज २० दोष कैसे न निकालता होगा?

एक सामान्य सी बात है, विज्ञान सम्मत भी है, मनोविज्ञान से भी संबंधित है... वह यह कि,

आपके नकारात्मक विचारों से आपकी क्वांटम फील्ड बिगड़ती है! जिसका असर आपकी कोशिकाओं की संरचना पर भी पड़ता है

..और जब आप बहुत से लोग मिलकर ऐसी नाकारात्मकता फैलाते हैं.. तो वह सामूहिक अवचेतन का हिस्सा बन जाती है.. जो सभी के स्वास्थ्य और प्रतिरक्षा तंत्र पर घातक प्रभाव डालती है!

आपको पता ही नही कि इस आपदा की घड़ी में आपकी नकारात्मक बातें कितना बड़ा अपराध हैं!

अगर आपको मानसिक विष्ठा त्याग की हाजत बार बार आती है..तो कृपया इसे अपने कक्ष में ही करें!

सार्वजनिक रूप से पोस्ट, कमेंट में हग कर अन्यों को दूषित न करें!

आपदा काल में सरकार और प्रशासन से १० गलतियां होती हैं! जहां १० गलतियाँ होती हैं तो वहीं २० अच्छे काम भी होते हैं !

..ये आपका विवेक है कि आपको किस पर नजर रखना है?

उनका मॉरल बूस्ट करना है कि डाउन करना है!

और आप खुद क्या कर रहे हैं?

सड़े सड़े से कामों के लिए रोज १० बार घर से बाहर निकल रहे हैं!

और फिर लौटकर फेसबुक पर नकारात्मक विष्ठा वमन शुरू कर देते हैं!

कुछ सहयोग कर सकते हैं.. तो करें।

वर्ना प्रार्थना करें!

सरकार, प्रशासन, पुलिस, हेल्थ वर्कर्स का मॉरल बूस्ट करें!

न कि, निंदा से उन्हें डाउन करें!

क्योंकि इस वक्त, सकारात्मक विचारों की सबसे ज्यादा जरूरत है!

अभी सभी बुद्धिजीवी अपनी राजनैतिक विष्ठा को कब्ज बनाकर रोके रहें.. कुछ दिन!

फिर बाद में चाहे ऐनिमा लगाकर निकाल लेना.. जितना भी भरा हो!

बीना शर्मा 'झंकार'

प्रेम

आया बसंत
चहुँ दिश सुगंध
होंगे अनुबंध
लिखेंगे प्रेम ग्रंथ

गीत गायेंगे
झूम-झूम नाचेंगे
पड़ेगी जब
रिमझिम फुहारे

प्रेम तराना
है दर्द का बहाना
जी का जंजाल
है फिर भी निभाना

प्रेम तुमसे
नहीं है आडम्बर
रे दिलवर
वादा किया खुद से

देख तुमको
मैं मुस्कुराती रही
मनाती रही
मानते कब सजन

मचा बबाल
करते क्यूँ सबाल
जी का जंजाल
ये रुठना मनाना

नदारत रहे
सबालों के जबाब
महीने साल
सिर्फ तुम्हारा ख़याल

सुमित अग्रवाल

लॉकडाउन और पलायन

मुकद्दर बदनसीबी हो तो ले आँसू किधर जायें,
पराये मुल्क मे मरने से अच्छा अपने घर जायें।

फकत दो वक्त की रोटी की मजबूरी ने रोका था,
न रोटी है न मजबूरी कहाँ अब बद-बसर जायें।

महज इक हुक्म से अपने जिन्होंने रोक दी दुनिया,
जरा वो भूख से कह दें की कुछ दिन को ठहर जायें।

गुनाहों का सिला है जो खुदा ने कैद बख्शी है,
नहीं कुछ भी करने को चलो थोड़ा सुधर जायें।

बड़ी मुश्किल से हमने दर्द का सैलाब बाँधा है
न जतलाओ मुहब्बत आँख से ना सच उतर जायें।

घनी सैयाद की बस्ती जमीं न आसमाँ इनका,
बताओ क्यों परिंदे लौट ना अपने शजर जायें।

भले छोटा है कच्चा है मगर इक घर तो अपना है,
भला क्यों गाँव को तज कर यहाँ पर दर-बदर जायें।

कैलाश सोनी 'सार्थक'

ग़ज़ल

हर किसी मुख पे हँसी का स्वाद दे कर चल दिया
एक साधक शाँति तूफाँ याद देकर चल दिया

झूमती गाती हवा भी रो रही है देख ये
जो हँसाता था,वही अवसाद देकर चल दिया

इस तरह उसने हँसाया खुल गयी सब इंद्रियाँ
हम हँसे कैसे यही अनुवाद देकर चल दिया

प्रश्न के हल जिंदगी को यों नहीं मिलते कभी
हल सवालों के वही सुस्वाद देकर चल दिया

बात में ही बात कह सबको हँसाना बात है
हर लबों पर तारीफें सँग दाद देकर चल दिया

जी खुशी से जिंदगी सबको सदा बाँटी खुशी
कैसे हँसना आपको तादाद देकर चल दिया

काम की हो बात बातें वो करो सोनी कहे
सोच मस्ती से भरी आबाद देकर चल दिया

हरिवल्लभ शर्मा 'हरि'

ग़ज़ल

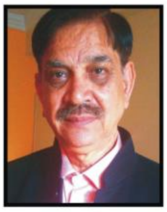

मान की बलिदान की क्या बात हो ईमान की।
लाँघ लीं इन्सान ने पर, अब हदें शैतान की।

जन्म जलसों से शुरू हो, फिर कजा शमशान तक,
ये गजल मेरी कहेगी दास्ताँ इन्सान की।

ये कहानी रह गयी बस चंद हर्फों में सिमट,
इब्तिदा पहचान की, थी इन्तिहा अनजान की।

दुश्मनी की हद मुकर्रर सामने जब तक रहूँ,
पीठ पीछे दे दुआ वो जान की आमान की।

देख कर जिसको कही थी शायरी शेर-ओ-सुखन,
वो गजल बनकर महकती है मेरे दीवान की।

है नहीं औकात जिनकी बन सकें दरबान तक,
हैसियत अपनी जताते शाह की सुल्तान की।

दे मुझे तौफीक 'हरि', मैं कह सकूँ कुछ तो सुखन,
इल्म हो कुछ हो तजर्बा बात हो इमकान की।

सीमा हरि शर्मा

ग़ज़ल

बहुत सँभाली सँवारी है जिन्दगी हमने
मुसीबतों से न हारी है जिन्दगी हमने

यही लगा कि जमाने से लड़ रहे थे हम
खुद ही से लड़ के गुजारी है जिन्दगी हमने

उड़ी है गर्द जमाने की आपदाओं की
तमाम उम्र बुहारी है जिन्दगी हमने

मिले, मिले न मिले कुछ, झुकी नहीं फिर भी
उसूल अपने पे वारी है जिन्दगी हमने

ये जिन्दगी सुकूँ से बैठने नहीं देती
लगा दी दाँव पे सारी है जिन्दगी हमने

मिजाज नर्म बना रहता तल्ख बातों में
यही आदत न सुधारी है जिन्दगी हमने

आरती तिवारी सनत

माँ तेरे आने से झूम रहा है संसार

जय आदि शक्ति जगदंबे माँ
जय जय संकट हरणी माँ
नौका पर होकर सवार आई माँ
खुशियों की उम्मीद ले आई हो माँ
'गर्भ दीप' जलाकर माँ हाथ जोड़
विनती करती हूं,
गरबा का रास रचाऊंगी,
सखियों के संग मिलकर
उम्मीदों का है दीप जलाया
हे संकट हरणी आदि शक्ति माँ
आज मानव पर घोर संकट है माँ
चारों ओर फैली महामारी
जान बचाकर फिरते हैं सब
घर के अंदर चहारदीवारी में
ऐसा घोर संकट है छाया बंद पड़ा
मंदिर का पट है,
मन मंदिर में ज्योत जलाया,
'गर्भ दीप' मन के भीतर
उम्मीद की गरबा रास रचाए
सब मिलकर दुआ माँग रहे
जय संकट हरणी माँ
तेरे आने से जग झूम उठा
नई उम्मीद के पुष्प कुसुमित हुए
भाव की पुष्प की माला से
करती हूं तेरा मैं तेरा सिंगार
दया करो हे जग जननी माँ
महामारी दूर करो माँ,
भय से सबको मुक्त करो माँ,
डरा हुआ हर मानव है
मानव से मानव दूर हुआ,
कैसे सखियों संग मिलकर हम
रंग बिरंगे वस्त्रों में सजकर
गरबे का रास रचा आऊंगी मैं
जब जग में चारों ओर हाहाकार मचा है
कैसे खुशियां मैं मनाऊं माँ
हे संकट हरणी जय माँ,
भव भय हरिणी माँ
बस एक ही उम्मीद है
माँ तेरे आने से झूम रहा है संसार
कष्ट हरेगी, खुशियों से झोली भर देगी
बस यही उम्मीद है माँ तेरे दर पर
'गर्भ दीप' जलाऊं खुशियों से
गरबा का रास रचाऊं,
महामारी का नाश करो
हे दुर्गतिनाशिनी दुर्गे माँ
जय संकट हरणी माँ
हे आदि भवानी, जग कल्याणी
महामारी से उद्धार करो
खुशियों की बौछार करो,
गरबे का रास रचे,
दर पर ढोल नगाड़े बजे,
झूम-झूम नाचेंगे सारी रात,
गरबे की रात माँ
माँ तेरे आने से झूम रहा है संसार,
होकर नौका सवार आई
उम्मीदें माँ साथ लाई गरबे की रात आई
गर्भ दीप जलाओ खुशियां मनाओ
तेरे आने से झूम रहा है संसार।

डॉ. आशु जैन

तप

बढ़ रहा था दिखावे की ओर
शान ओ शौकत का मचा था शोर
किसी का भी न चलता था जोर
आज घरों में वो बन्द हो गया

प्रकृति का किया है शोषण
कष्ट दिया नदियों को हरदम
हर जानवर का किया है भक्षण
आज मुख्य भोजन घरों में कन्द हो गया।

पबों , नाइट क्लबों में गुजरता था जीवन
भाग रहा था मानव हर पल प्रतिक्षण
समय की कमी से जूझता था हरदम
आज जीवन उसका मन्द हो गया।

बुजुर्गों का भूल बैठा सम्मान वो
संस्कृति का कर रहा था अपमान वो
प्रकृति ने थोड़ा सा कान क्या मरोड़ा
जाके प्रभु शरण में भक्त अंध हो गया।

मोबाइल, दोस्त, यार को दुनिया समझ रहा
थोड़ा सा क्या बढ़ा खुद को खुदा समझ रहा
आया समझ में जब किया थोड़ा सा तप-मनन
छोटे से कीटाणु से जीवन तंग हो गया।

अर्थ का अनर्थ

राजेश देशप्रेमी

कंधा देना, कंधा मिलना
अर्थ का अनर्थ कर देता
कंधा से कंधा जब मिलता
आदमी उड़ता हवा-हवाई
चहकने लगता मलिन चेहरा
बदलने लगती परिस्थितियां
दिखने लगता सुखद परिणाम
लेकिन कंधा देते रोता मन-तन
टूट जाता हमेशा के लिए रिश्ता
शेष रह जाती केवल स्मृतियां
काश, हम समझ जाते जीवन मर्म
कंधा देने के बजाय मिलाते कंधा
तब शायद दुनिया का रंग-तरंग
बदरंग न होकर होता चटक रंगीन
हर चेहरे पर दिखता केवल मुस्कान।

सवेरे-सवेरे

निवेदिता श्रीवास्तव
'निवी'

सफर लम्बा सही चल पड़ो सवेरे-सवेरे
मिल ही जाएगा मुकाम सवेरे-सवेरे

मन व्यथित हुआ तन शमित भी हुआ
किस ने नश्तर चुभोये सवेरे-सवेरे

पाँव के आबलों ने रोक रखी जो राह
कदम भी लड़खड़ा गये सवेरे-सवेरे

प्रसून यूँ प्रमुदित हुए पात भी झर चले
दरख़्त ये भी ढ़ह जायेगा सवेरे-सवेरे

हँस के मिला करो मिल के हँसाया करो
उड़ जायेगा पंछी इक रोज सवेरे-सवेरे

डगर मुश्किल सही सफर तन्हा सही
निवी मुकाम पर है खड़ी सवेरे-सवेरे

कुछ अधकही सी

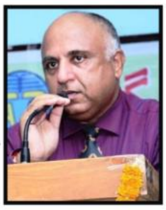

शैलेंद्र कपिल

कह पाना कोई आसान नहीं,
न सुन पाना, बर्दाश्त करना आसान नहीं,
उमर गुजार दी आशिकों ने प्रतीकों से,
इशारों से ही दिल की बात ही कही,
किसी को समझ आई,
किसी को समझ नहीं आई,
हां करूं या फिर न न कहूं,
निर्णय नहीं कर पायी, हिम्मत नहीं जुटा पाई,

यह कैसा सिलसिला है,
यह कैसी भटकन है,
अजब सी चुभन है,
इजहार करने को बहुत मन है,
कभी ठंडी है, कभी बरसात है, कभी बंसत है,
आओ अनुभवी महानुभावों से बात कर लें,
कहते हैं, शब्दों से कम, आखों से बातें ज्यादा कर लें,
कब हो गई महोब्बत, नहीं पता चला,
अब या तो महोब्बत कर लें,
या फिर महोब्बत की दास्तान लिख दें,

महोब्बत, आसान नहीं, व्यापक होती है,
जिस्मों से आगे बढकर के,
रुमानी होती चली जाती है,
हर एक से नहीं इजहार भी हो पाती है,
हर इक के बस की बात नहीं होती है
बिल्कुल आसान नहीं होती है,
गले की फांस सी ही होती है,
इक बार खुद से जरूर कर लेना,
मोहब्बत आत्मिक होती है,
भोतिकी से कहीं आगे होती है

इतमीनान से सोच कर कै देखो,
शब्दकोश को भी उठाकर के देखो,
समाज के किरदारों में ढूंढ करके देखो,
नहीं मिलेगा उतर, महोब्बत
तो जरा करके देखो...।
दिल में उमंगों को भर के देखो,
बहते पानी में पावों को डाल करके देखो,
अपने चारों और ध्यान भी करके देखो,
खुला है, साक्षी आसमां, जरा,
विश्वास कर इजहार करके देखो।

मौसम से भी महोब्बत करके देखो,
असीमित है विस्तार, आखें भरके देखो
नहीं करेगा, कोई बीच बचाव, जी भर के देखो,
केवल विश्वास ही विश्वास,
जरा, एक नजर करके देखो।

दोस्त तुम कहाँ रहते हो?

राकेश जैन

कब करोगे पुरलुत्फ लंबी बातें
वो बातें जिनका कोई ठौर नहीं था
जिनमें कोई न सच बताते थे
न करते थे कोई रूमानी वादा।
मगर फिर भी जी न भरता था
न मन करता था कि घर लौटें,
न मेहमानवाजी का चलन था
उस चौक पर जहाँ मिलते थे।
बनाते थे सभी हम उम्र लड़कियों से
अपनी जोड़ी, और ठहाकों में ही
तोड़ भी देते थे ये कहकर कि
मोहब्बत में किसी को ठेस न हो,
तभी मुकम्मल होगी।
गोया वक्त ही है गवाह कि
हम इस शान में लवरेज अभी भी हैं
कि हमने कभी किसी को
नजर उठा कर नहीं देखा।
उस निगाह से, कि जिससे किसी का
घर से निकलना हुआ हो कम।
कमबख्त बहुत बेहिसाब बातें हैं
जिनमें सिर और पैर नहीं है
मगर तुम सब भी नहीं इर्द-गिर्द
न वो चौक और न वो हम उम्र लड़की।
दोस्त तुम कहाँ रहते हो?

आशीष चौरसिया

वक्त में कैद 'आज'

कहाँ पहुंचेगी ये दुनिया
कभी कभी ख्याल आता है,
गुजरता है वक्त तेजी से,
चंद यादें समेट नही पाता है,

वो कौन से दिन होते थे,
वक्त ठहरा सा चलता था,
अब सुबह दोपहर ना शाम,
कुछ भी टिक नही पाता है।

अक्स-ए-आईना का जाल,
बस ख्वाब दिए जाता है,
तुम वाकई तुम ही हो?
हकीकत गुम किये जाता है,

काश इंसानी हो जाए फिर
बेहतर हो जिंदगी के लिये,
सब दौड़ रहे हैं बेतहाशा,
वक्त सब छीन लिए जाता है।

रंग इंसानियत का

शिवम् पचौरी

जुनून की राह ऐसी सिर पर चढ़ी थी कि
सिवा मंजिल के कुछ दिखायी नहीं दिया

तुझको साथ लेकर चलना चाहता था
पर दिल तेरा शायद इस बात को गवारा नहीं किया

पतझड़ के मौसम सा बना दिया तूने हमें
कभी हरा था अब झट से सुखा दिया

तेरी सादगी का क्या नाम दूं सोच रहा हूं
साथ था कभी बेहिसाब, अब बरर्बाद कर दिया

हमने तन्हा कर दी खुद की जिन्दगी
अपने लिये तुम्हें तकल्लुफ तो कभी नहीं दिया

तुम बेशक थे हमसे दूर चंद फासलों पर
फिर भी दिल से अलविदा कभी नहीं किया

बहुत नफरते कराई तुमने कि, फिरोजाबाद खून का बाग हो गया
फिर यूं आया रंग इंसानियत का शहर फिर से गुलस्तां हो गया

ललिता नारायणी

डूबती कगार पर

खोजता है जिंदगी को
जिंदगी बिसार कर
ढांकता है जिन्दगी को
जिंदगी उघार कर।

वो जिए तो क्या जिए?
जो जी रहे हैं जिंदगी में
जिंदगी को मारकर
जिंदगी को रौंदकर।
फुहार जैसी जिंदगी
बटोरता बुहार कर
खोजता है ....

कर्म की प्रधानता है
जिंदगी का रास्ता
तो कर्म को ही प्यार कर
जिंदगी को वार कर।
जिंदगी गुजारता है
वक्त को गुजार कर
खोजता है......

खेलता है धूप छांव
रेत की दीवार पर
ख्वाब क्यों सजा लिया
डूबती कगार पर
जिंदगी की कैद में है
जिंदगी से भागकर।
खोजता है.....

गोकुल क्षत्रिय

फूल की दास्तान

एक फूल खिला था माली के बाग में
देखा उसको सबने माली के बाग में
कुदरत ने बख्शी लीला उसको बाग में
सीचा अपने खून से माली ने बाग में।

अब फूल ने बदला नाज अपने काम से
कोयल ने छेड़ी साज उसके नाम से
वह चमन हुआ सरताज उसके पैगाम
गुल-गुलशन में हुआ जयनाद सुबहो-शाम से।

एक दिन पौधा एक बबूल का आया
देख उसको फूल मंद मुस्काया
कैसी जिंदगी, कैसा यह सरमाया
आग- पानी से आकर यहां टकराया।

बोला बबूल का पौधा, तुम जल्द मुरझाते हो
कैसा जीवन तेरा पल में जग से जाते हो
मैं तो जीता भरपूर सालों-साल
आता ना इतनी जल्दी तुमसा मुझ को काल।

फूल अपने लहजे में आकर मुस्काया
बबूल के शब्दों से वह भला नहीं भरमाया
दिया ज्ञान जिंदगी के फरमानो का।
जीना है मुझको केवल मेहमानों सा।

मैं नहीं जीता सालों साल
परंतु नहीं होता मेरा तुमसा हाल
थोड़े से सफर में खुशबू अपनी बिखेरता हूं
जग को कुछ देखकर आखिर में मरता हूं।

संजीव तनहा

गीत

बाँझ होकर प्यास लौटे जिस नदी से,
उस नदी को मैं नदी कहता नहीं हूँ।

रात के आँगन में जब देखी सहर।
छन्द मचले साथ में मचली बहर।
इस तरह कुछ स्वप्न टूटे प्रीत के,
आइना जैसे गिरा हो छूट कर।

टूटकर विश्वास लौटे जिस नदी से,
उस नदी को मैं नदी कहता नहीं हूँ।

हम उनींदी आँख से जागे रहे।
आँख से अपनी नमीं त्यागे रहे।
धार से मझधार से हम क्या कहें,
नेह के उलझे... सभी धागे रहे।

हारकर मधुमास लौटे जिस नदी से,
उस नदी को मैं नदी कहता नहीं हूँ।

हम समय की धार में ना बह सके।
बात मन की चाहकर ना कह सके।
प्यास ने, सौगंध दी, जब प्यार से,
आँख में आँसू न हरगिज रह सके।

मारकर मन आस लौटे जिस नदी से,
उस नदी को मैं नदी कहता नहीं हूँ।

माधुरी मिश्रा

स्त्री और पुरूष-पूरक या प्रतिद्वन्दी

कई सालों से इस समस्या को देखती आयी हूं, सुनती और पढ़ती आयी हूं, सच कहूं तो मुझे तो हमेशा से यह प्रश्न ही बेतुका लगा।

मैने कभी सोचा ही नहीं कि स्त्री और पुरूष भी परस्पर प्रतिद्वन्दी हो सकते हैं, क्योंकि प्रतिद्वन्दिता तो समान गुण-दोष वालों में होनी चाहिये, और स्त्री और पुरूष तो सर्वथा स्वाभाव एवं शारीरिक क्षमता में भी एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं।

ईश्वर कहें या प्रकृति ने ही दोनो को एक दूसरे से बिल्कुल अलग बनाया।

जब-जब पुरूषों ने किसी न किसी रूप में अपनी पत्नी, बहन या मां के भी ऊपर अपना मालिकाना धौंस दिखाया है, स्त्री का आत्मसम्मान किसी न किसी रूप में आहत हुआ है, विरोध में उसने भी अपने तेवर दिखलाये हैं, अब इसे आप चाहे जो नाम दें, बदला, घमण्ड या प्रतिद्वन्दिता।

आज की स्त्रियों की उपलब्धियों को कौन नहीं जानता? परिवार, समाज और देश की सीमाओं से ऊपर उठ पूरे विश्व में उसने अपने परचम लहराये हैं।

उसे अपने घर में अपने ही लोगों से प्रतिद्वन्दिता की आवश्यकता नहीं है।

आज का पुरूष समाज इसे अच्छी तरह समझ चुका है कि स्त्री उस की प्रतिद्वन्दी नहीं वरण सहयोगिनी है, जिस के साथ उस का जीवन अधिक सहज, सरल एवं सन्तुष्टि के साथ बितेगा।

अगर देखें और समझें, तो हम पायेंगे कि आज ही नहीं सृष्टि के प्रारम्भ से ही स्त्री और पुरूष एक दूसरे के पूरक बन कर ही सुख, सन्तोष एवं शान्ति से जीवन व्यतीत कर पाये हैं।

स्वदेश मल्होत्रा 'रश्मि'

बदल गया वेष-परिवेश

समय की चरखी पर
बंधी जीवन की पोटली
उसमे समाहित
सीमित साँसों की पूंजी।
धीरे-धीरे खर्च हो रही
वैसे-वैसे स्मृतियों में
आज अचानक-
उस अतीत की सर्च हो रही,
जिसमे बसता सद्व्यवहार
भाईचारा और नैतिकता
नारी का सिंगार थी लज्जा,
पुरुष पराक्रम से शोभित थे
थोड़े में ही खुश रहते थे
मिलकर सब,
दुःख-सुख कहते थे।
शायद- तब हम कम शिक्षित थे,
आत्मीयता में दीक्षित थे।

सर्च का बढ़ा दायरा अब
देख रही हूँ वर्तमान को-
संवेदना तिरोहित है
जन-जन धन पर मोहित है,
लज्जा के आवरण खो गए
भेद-भाव अब मुखर हो गये ।
घूम गयी है- काल की चरखी,
भौतिकता का है विस्तार
रिश्ते-नाते है व्यापार,
आंधी चली-आधुनिकता की,
बिसर गए सारे संदेश
जो-युग पुरुषों ने फैलाये।
आभासी दुनिया में खोए
नौनिहाल सब-काट रहे मानवता की जड़,
मद में चूर, खुद से दूर हुए जा रहे।
वेश बदलकर क्या
सच को- झुठला पाओगे
जड़ से कटकर क्या
जीवन- महका पाओगे.....
माना- बदल रहा वेष-परिवेश
किन्तु न भूलो, अपनी माटी
अपनी संस्कृति, अपना देश।

अनुपम-आलोक

बाहर का रावण मर करके,
फिर जिंदा हो जाएगा-
मार सको तो मारो अपने,
अंदर बैठे रावण को।

गूढ़ अर्थ है विजयपर्व का,
चिंतन जरा सँभालो तो।
मानस का अंतर्संदेशा,
आओ जरा खँगालो तो।
विजय सत्य की थी असत्य पर,
सोचो तो इस कारण को।
मार सको तो मारो अपने,
अंदर बैठे रावण को।

रावण रथी, विरथ थे राघव,
सैन्य शक्ति भी ज्यादा थी।
पर रघुनंदन के अंतस में,
शाश्वत बस मर्यादा थी।
तभी तो लंका झेल न पायी,
रामचंद्र कष्ट निवारण को।
मार सको तो मारो अपने,
अंदर बैठे रावण को।

आत्मशक्ति का दीप्त मंत्र ही,
जग में शक्ति साधना है।
कर्मयोग से सदाचार ही,
प्रतिपल हमें बाँचना है।
रसना रटे सदा इस उद्भट,
बीजमंत्र उच्चारण को।
मार सको तो मारो अपने,
अंदर बैठे रावण को।

अनीश गर्ग

कविता जन्म

मेरे मस्तिष्क की
जननी के गर्भ में
जब भी
विचारों के भ्रूण
प्रस्फुटित होते हैं....
तब तब
जन्म होता है
कविता का..
और जननी
ममत्व से
ओत-प्रोत
लग जाती है
उसे निखारने
और संवारने में,
उत्साहित सी
रहती है
समाज के समक्ष
उसे उतारने में,
समाज के
प्रत्यक्ष होने पर
प्रशंसा के
गीत सुनकर
तब जननी के
सीने से
उदय होता है
अमृत की
सरिता का.....
बस यही
हृदयस्पर्शी
परिचय है
कविता का....

प्रीति डिमरी

अखंड मेरा प्रेम होगा

नित ऐसा प्रेम जियूँ
प्रेम के नए प्रतिमान गढ़ूं।

तुम रहो सदा पास मेरे
एक ऐसा वक्त चुनूँ।

न मुझसे कभी दूर होना
ऐसी नजदीकियां नित सवारूँ।

रहना हर पल मेरी सोच में
निश दिन ऐसा स्वप्न सजाऊँ।

मुझे न आता कुछ भी
सिवा तुम्हें प्रेम के।

मुझे न भाता कुछ भी
सिवा तुम्हारे नाम के।

तुम ही मेरे सर्वस्व हो
तुम ही मेरे ईश हो।

धड़कन साथ छोड़े जब
तो भी रूह में बसा होगा।

इस धरती से उस जहाँ तक
सिर्फ तू मेरे साथ होगा।

वादा ये मेरा प्रिये
अखंड मेरा प्रेम होगा।

मरकज

अमिताभ बुधौलिया

जो मरकज में थे
वे महामूर्ख हैं
जो बाहर हैं
किसी भी धर्म के...
वे क्या हैं?

जो मरकज में थे
वे जाहिल हैं
जो बाहर हैं
वे क्या हैं?

जो मरकज में थे
वे ढोर-गंवार हैं
जो बाहर हैं
वे क्या हैं?

वे तो वही हैं
जो मरकज में
होने आए थे
जो बाहर हैं
वे क्या हैं?

सच कहूं
जो बाहर हैं
किसी भी धर्म के...
वे भी वही हैं
जो मरकज में थे
दोनों ही जानवर
ये जो बाहर हैं
वे जंगली हैं
और वे सकर्स के हैं
जो मरकज में थे

अन्तराशब्दशक्ति 'सृजन शब्द से शक्ति का'

डॉ. अंजुलता सिंह

उसकी पहचान

- देवी! कन्या पूजन में तो तुम बिन सब फीका है! अंबे का अवतार हो तुम..
उन दुर्दिनों से पल्ला लो झाड़.. नमन करो स्वीकार.
भक्त बोला.
- ओह! यह क्या? धरती पर बोझ, कीकर सी
चुभन देती बेटी जन्मी.. दूभर होगा जीना अब..
पिता बुदबुदाया.
- हाथ पीले करने तक की कठिन जिम्मेदारी है...जिंदगी अभी खारी है..
भाई ने फरमाया.
- अरे नहीं रे! तौबा तौबा.. कहते हैं.. क्वारी खाए रोटी.. ब्याही खाए बोटी.
दोस्त ने सुझाया.
- फैशन की मारी.. अब बिगड़ी है नारी.
लंबे, काले, घने केश, सादगीपूर्ण सुंदर वेश..
सब हुआ लुप्त..
आह! गर्म चिमटे से ऐंठे बालों के उलझते घुंघर, फैले हुए केश-कर्तन.. कैसा परिवर्तन?
पति चिल्लाया.
- पुरूष प्रधान समाज में बचानी होगी तुझे अपनी लाज, हुई व्यभिचार का शिकार तो होगा समाज से बहिष्कार. कलंकित से रे
कैसा प्यार?
प्रेमी बुदबुदाया.
- उस पढ़ी लिखी समझदार मगर बेबस एवं निर्दोष युवती को शर्म से सिर झुकाए हुए देख उसकी ओर उठती आधा दर्जन नर-अंगुलिकाओं की बेहयाई देखकर धरा पर झुका नभ जार-जार रो उठा..गड़गड़ाती, चीखती और क्रंदन करती बदलियों के साथ, जो सोच रही थीं
- काश! कहीं से अंगुलिमाल आए.. ले जाए उंगलियां काटकर..!

मंजीत जैसवाल

क्या लेकर जाओगे

एक दिन इस जहां से रुखसत हो जाओगे,
बताओ क्या लेकर जाओगे,
कोट पैंट सूट बूट सब यही छोड़ जाओगे,
बताओ क्या लेकर जाओगे,
नफरत द्वेष, धन दौलत माया काया का क्या करोगे,
बताओ क्या लेकर जाओगे,
क्रीम पाउडर फेसिअल कपड़े से चेहरे चमकाओगे,
बताओ क्या लेकर जाओगे,
लूट खसोट कर तिजोरियां भर जाओगे,
बताओ क्या लेकर जाओगे,
ब्रांडेड जूते ब्रांडेड कपड़े से शरीर को ढकते जाओगे,
बताओ क्या लेकर जाओगे,
हीरे जवाहरात सोने चाँदी से लादते जाओगे
बताओ क्या लेकर जाओगे,
शीशम की मजबूत सैया पर आराम खूब पाओगे,
बताओ क्या लेकर जाओगे,
शर्ट पैंट में मजबूत जेबे बनवाओगे,
बताओ क्या लेकर जाओगे,
एक दिन तो मिट्टी में मिल जाओगे
फिर घमंड किसको दिखाओगे,
बताओ क्या लेकर जाओगे,
शमशान घाट तक तो जाओगे,
फिर बताओ यहाँ से क्या लेकर जाओगे।

आदम

ये कैसे रास्ते पे आज चल रहा आदम
नही ढलान है फिर भी फिसल रहा आदम

है बेगुनाहों की लाशों को देखकर लगता
अम्न के दुश्मनों के बीच पल रहा आदम

उदासियों ने किनारों से दोस्ती कर ली
भँवर की चाह में जबसे मचल रहा आदम

धुएँ को देखकर ये लग रहा है बस्ती में
के एक दूसरे से रोज जल रहा आदम

तलाश खत्म हो कैसे सुरेश मंजिल की
गँवा के होश को घर से निकल रहा आदम

सुरेश भारती

अपने मुँह मियां मिट्ठू

नीरज त्यागी

कर रहा हर वक्त अपनी वाहवाही,
कभी किसी की सुनता नही भाई।
संपन्न है जो, खड़ा है उनके पास,
कभी जरूरतमंद के काम आया क्या?

अपने ही मुँह बनता मिया मिट्ठू,
करता हर वक्त मुर्गे की तरह कुकड़ु कु,
कभी जरूरतमंद की जरूरत में किसी
के काम आया क्या?

सुबह से शाम तक यूँही बकवास करता है,
कभी इधर, कभी उधर समय पास करता है।
कभी किसी की दर्द भरी बाते सुनकर,
किसी के सर को काँधे से लगाया क्या?

पैर हमेशा रहते है जिसके जमीन पर,
पता नही क्यों हवा में उड़ता रहता है,
हमेशा दिखाता है कितना सहयोगी है,
जरूरत पर किसी के कभी ना काम आया।

पंजीयन क्रमांक (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

''सृजन शब्द से शक्ति का''

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की झलकियाँ

अन्तरा शब्द शक्ति के प्रकल्प एवं अब तक किये कार्य

१. व्हाट्सअप समूह २ फरवरी २०१६ से।

२. फेसबुक समूह २ फरवरी २०१६ से।

३. लोकजंग दैनिक संध्या समाचार पत्र में अन्तरा शब्दशक्ति के पेज पर ७-८ रचनाओं का सोमवार से शुक्रवार तक प्रकाशन १ नवंबर २०१६ से।

४. फेसबुक पेज १६ फरवरी २०१७ से।

५. मासिक वेब पत्रिका १ जुलाई २०१७ से।

६. अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन २५ मार्च २०१८ से।

७. ईबुक प्रकाशन १५ जनवरी २०१६ से।

८. अब तक लगभग ३०० से अधिक पुस्तकों और १५ साझा संग्रहों का प्रकाशन, विमोचन और ८४० सम्मान अन्तरा शब्दशक्ति द्वारा किये गए।

९. १ जून २०१६ से अन्तरा शब्द शक्ति एक पंजीकृत सेवा संस्था के रूप में भी कार्यरत है।

१०. २१ सितंबर २०१६ से बहुभाषा समन्वय प्रकल्प कार्यरत है।

११. १ अक्टूबर २०१६ से अन्तरा शब्दशक्ति की रचनाओं का वेब पृष्ठ ''सृजन शब्द से शक्ति का'' संपादित एवं प्रकाशित।

978-93-5372-094-0

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

मुल्य - 120/-